प्रकाशक:—
अध्यक्ष
साहित्य-संस्थान
राजस्थान विश्व विद्यापीठ, उदयपुर

मुद्रक:—
व्यवस्थापक
विद्यापीठ प्रेस, उदयपुर

विषय-सूची

प्रकाशकीय

साहित्य-संस्थान, राजस्थान विश्व विद्यापीठ, उदयपुर पिछले ११ वर्षों से उदयपुर और राजस्थान में साहित्यिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक एवं कला विषयक सामग्री की शोध-खोज, संग्रह, सम्पादन और प्रकाशन का काम करता आ रहा है। विशेष कर साहित्य-संस्थान ने राजस्थान में यत्र तत्र बिखरे हुए प्राचीन साहित्य, लोक साहित्य, इतिहास-पुरातत्व और कलात्मक वस्तुओं को प्राप्त करने के लिये निरंतर प्रयत्न किया है। परिणाम स्वरूप लगभग ३० महत्व पूर्ण और उपयोगी ग्रन्थों का प्रकाशन हो चुका है। साहित्य-संस्थान के अन्तर्गत इस समय (१) प्राचीन साहित्य विभाग (२) लोकसाहित्य विभाग (३) इतिहास-पुरातत्व विभाग (४) अध्ययन गृह और संग्रहालय विभाग (५) राजस्थानी प्राचीन साहित्य विभाग (६) पृथ्वीराज रासो-संपादन विभाग (७) मौन साहित्य-संग्रह विभाग (८) नवसाहित्य सृजन कार्य (९) सामान्य विभाग आदि विकसित हो रहे हैं। सामान्य विभाग के अन्तर्गत बूंदी के प्रसिद्ध राजस्थानी कवि श्री सूर्यमल की स्मृति में 'महाकवि सूर्यमल आसन' और प्रसिद्ध इतिहास वेत्ता महामहोपाध्याय डॉ० गौरीशंकर जी ओझा की याद गार में 'ओझा' आसन स्थापित किया है। संस्थान की मुख पत्रिका के रूप में त्रैमासिक 'शोध-पत्रिका' का प्रकाशन किया जाता है एवं नवीन उदीयमान लेखकों को लिखने के लिये प्रोत्साहित करने की दृष्टि से उनकी रचनाओं का प्रकाशन कार्य चालू किया गया है। इस प्रकार साहित्य-संस्थान राजस्थान विश्व विद्यापीठ, अपने सीमित और अत्यल्प साधनों से राजस्थानी साहित्य, संस्कृति और

प्रकाशकीय

साहित्य-संस्थान, राजस्थान विश्व विद्यापीठ, उदयपुर पिछले १६ वर्षों से उदयपुर और राजस्थान में साहित्यिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक एवं कला विषयक सामग्री की शोध-खोज, संग्रह, सम्पादन और प्रकाशन का काम करता आ रहा है। विशेष कर साहित्य-संस्थान ने राजस्थान में यत्र तत्र बिखरे हुए प्राचीन साहित्य, लोक साहित्य, इतिहास-पुरातत्व और कलात्मक वस्तुओं को प्राप्त करने के लिये निरंतर प्रयत्न किया है। परिणाम स्वरूप लगभग ३० महत्व पूर्ण और उपयोगी ग्रन्थों का प्रकाशन हो चुका है। साहित्य-संस्थान के अन्तर्गत इस समय (१) प्राचीन साहित्य विभाग (२) लोकसाहित्य विभाग (३) इतिहास-पुरातत्व विभाग (४) अध्ययन गृह और संग्रहालय विभाग (५) राजस्थानी प्राचीन साहित्य विभाग (६) पृथ्वीराज रासो-संपादन विभाग (७) भील साहित्य-संग्रह विभाग (८) नवसाहित्य सृजन कार्य (६) सामान्य विभाग आदि विकसित हो रहे हैं। सामान्य विभाग के अन्तर्गत बूंदी के प्रसिद्ध राजस्थानी कवि श्री सूर्यमल की स्मृति में 'महाकवि सूर्यमल आसन' और प्रसिद्ध इतिहास वेत्ता महामहोपाध्याय डॉ० गौरीशंकर जी ओझा की याद गार में 'ओझा' आसन स्थापित किया है। संस्थान की मुख पत्रिका के रूप में त्रैमासिक 'शोध-पत्रिका' का प्रकाशन किया जाता है एवं नवीन उदीयमान लेखकों को लिखने के लिये प्रोत्साहित करने की दृष्टि से उनकी रचनाओं का प्रकाशन कार्य चालू किया गया है। इस प्रकार साहित्य-संस्थान राजस्थान विश्व विद्यापीठ, अपने सीमित और अत्यल्प साधनों से राजस्थानी साहित्य, संस्कृति और

इतिहास के क्षेत्र में विभिन्न विघ्न बाधाओं के बावजूद भी निरंतर प्रगति और कार्य कर रहा है। राजस्थान की गौरव गरिमा की महिमामय झांकी अतीत के पृष्ठों में अंकित है— आवश्यकता है, उसके सुनहले पृष्ठों को खोलने की। साहित्य-संस्थान नम्रता के साथ इसी ओर अग्रसर है।

प्रस्तुत पुस्तक साहित्य-संस्थान के संग्रह से तय्यार की गई है। साहित्य-संस्थान के संग्राहकों ने अनेक स्थानों से ढूंढढांढ कर १६००० के लगभग छन्दों का संग्रह किया है। इस संग्रह में दोहे, सोरठे, कवित्त और गीत आदि कई प्रकार के छंद सुरक्षित हैं। इन छन्दों में विभिन्न ऐतिहासिक और सामाजिक घटनाओं, व्यक्तियों आदि का वर्णन मिलता है। ये विभिन्न प्रकार के गीत और छंद लाखों की संख्या में राजस्थान के नगरों, कस्बों एवं गांवों में बिखरे हुए हैं। इन के प्रकाशन से एक ओर साहित्यकारों को राजस्थानी साहित्य का परिचय मिल सकेगा तो दूसरी ओर इतिहास संबंधी घटनाओं पर भी प्रकाश पड़ेगा। इस प्रकार साहित्य-संस्थान, पहली संस्था है, जो शोध-खोज के क्षेत्र में नियमित काम कर रही है।

इस प्रकार के संग्रह अबतक कई निकाले जा सकते थे, लेकिन साधन सुविधाओं के अभाव में साहित्य संस्थान विवश था। इस वर्ष प्राचीन राजस्थानी साहित्य और लोक-साहित्य के प्रकाशन-कार्य के लिये भारत सरकार के शिक्षा-विकास सचिवालय ने साहित्य संस्थान को कृपाकर ५७,०००) सत्तावन हजार रुपयों की सहायता प्रदान की है, उसी से उक्त पुस्तक का प्रकाशन कार्य संपन्न हो सका है।

इस सहायता को दिलाने में राजस्थान सरकार के मुख्य मंत्री (जो शिक्षा मंत्री भी हैं) माननीय श्री मोहनलाल सुखाड़िया और उनके शिक्षा सचिवालय के अधिकारियों का पूरा सहयोग रहा है। उसके लिये मैं, उनके प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करता हूँ। साथही भारत सरकार

के उपशिक्षा सलाहकार डॉ० पी० डी० शुक्ला, डॉ० भान तथा सोहन सिंह एम० ए० (लंदन) का भी अत्यन्त आभारी हूं, जिन्होंने सहायता की रकम शीघ्र और समय पर दिलवाई। सच तो यह है कि उक्त महानुभावों की प्रेरणा और सहायता से ही यह रकम मिल सकी है और संस्थान अपने ग्रन्थों का प्रकाशन करवा सका है। भारत-सरकार के राज्य शिक्षा मन्त्री डॉ० कालूलाल जी श्रीमाली के प्रति क्या कृतज्ञता प्रकट की जाय; यह तो उन्हीं का अपना काम है। उनके सुझाव और उनकी प्रेरणा से संस्थान के काम में निरंतर विकास और विस्तार हुआ है और आगे भी होता रहेगा। इसी आशा और विश्वास के साथ मैं, उनका आभार मानता हूँ। अन्य उन सभी का आभारी हूँ, जिन्हों ने इस काम में सहायता दी है।

विनीत

गिरिधारीलाल शर्मा

अध्यक्ष

साहित्य-संस्थान

वसंत पंचमी
वि० सं० २१०४

संस्था की ओर से

राजस्थान विश्व विद्यापीठ, उदयपुर के अन्तर्गत आज से १८ वर्ष पूर्व प्राचीन साहित्य की शोध-खोज, संग्रह सम्पादन और प्रकाशन कार्य के लिए "प्राचीन-साहित्य-खोज विभाग की स्थापना की गई थी। तब से आज तक इसके नाम में, कार्य और प्रवृत्तियों के विकास एवं विस्तार के साथ अनेक परिवर्तन और परिवर्धन होते रहे हैं। इस समय इसे साहित्य-संस्थान के नाम से अभिहित किया जाता है। प्राचीन साहित्य की शोध-खोज के अलावा आज इसमें लोक-साहित्य, इतिहास, पुरातत्व एवं कला विषयक सामग्री का संग्रह, सम्पादन और प्रकाशन किया जाता है। नवीन साहित्य के सृजन एवं विकास के लिये क्षेत्र और वातावरण पैदा करने का प्रयत्न किया जाता है। प्रतिभाशाली और उदीयमान लेखकों की रचनाओं के प्रकाशन की समुचित व्यवस्था करने के लिये साधन सुविधाएँ एकत्रित की जाती हैं और उनके लिये अवसर उत्पन्न करने का प्रयत्न किया जाता है। साहित्य-संस्थान में विगत डेढ़ युग से भारतीय-साहित्य, उसकी संस्कृति और विविध-कलात्मक सामग्री के पुनर्शोधन के लिये कार्य किया जाता रहा है। संस्थान की ओर से अब तक कई महत्त्वपूर्ण प्रकाशन किये चुके हैं। प्रस्तुत पुस्तक उन्हीं में से एक है।

उन्नीस वर्षों के अथक परिश्रम और अध्यवसाय के परिणाम स्वरूप ही आज प्राचीन राजस्थानी साहित्य के प्रकाशन का कार्य, साहित्य-संस्थान, राजस्थान विश्व विद्यापीठ के द्वारा किया जा रहा है। विगत वर्षों के कार्य-काल में साहित्य-संस्थान के द्वारा हजारों की

सम्पादकीय

प्रस्तुत भाग यद्यपि गीत (पद्य) में न हो कर यद् पदि, निसानी आदि छन्दों में है, फिर भी यह राजस्थानी साहित्य के संग्रह में ही उपलब्ध हुआ है, अतः इसे राजस्थानी गीतों के अन्तर्गत स्थान दिया गया है। राजस्थानी गीतों में मुक्तक रूप से रचना हुई है, परन्तु इस और इससे आगे के भाग की रचना प्रबन्ध-काव्य के रूप में हुई है। इसमें एक विषय का विस्तृत वर्णन हुआ है। प्रारम्भ में राणा सांगा से उदयसिंह तक का वर्णन यद्यपि पिंगल भाषा में है, परन्तु डिंगल संग्रह के अन्तर्गत मिलने से इसे भी इस में स्थान दिया गया। शेष प्रबन्ध काव्य राजस्थानी भाषा में ही है, जो इतिहास पर नया प्रकाश डालता है। अब तक लोग यही मानते थे कि महाराणा उदयसिंह अकबर द्वारा चित्तौड़ के घेरे जाने पर युद्ध से डर कर चित्तौड़ छोड़ चले आए, परन्तु जयमल मेड़तिया संबंधी वर्णन से स्पष्ट हो जाता है कि महाराणा घेरे से पूर्व ही चित्तौड़ में नहीं रहते थे। जयमल स्वयं महाराणा के पास आया और युद्ध के लिए आज्ञा लेकर चित्तौड़ गया। इसी प्रकार महाराणा अमर (प्रथम) का युद्ध सलीम (जहाँगीर) के साथ हुआ। उसमें महाराणा ने मालपुर, जसपुर, टाकगढ़ और टोडा आदि स्थानों को लूटकर ध्वंस कर दिया। इसी प्रकार कर्मसी एवं साँवलदास चाहुवान और सूजा बालेचा आदि के वर्णन से भी हमें नई २ बातें ज्ञात होती है। अतः इतिहास की दृष्टि से भी यह भाग उपयोगी है। इसमें वर्णित सभी पुरुष ऐतिहासिक हैं। साहित्य की दृष्टि से तो यह सब प्रकार से ग्राह्य है। वीर रस का वर्णन वही ठीक कर सकते हैं, जिनमें काव्य-

प्रतिभा के साथ २ वीरत्व भी हो। अधिकतर पिंगल और डिंगल भाषा के कवि ही राज्याश्रित रहे हैं। वे कविता एवं युद्ध प्रेमी थे। इसीलिए वीररस की कविता करने में बड़े सफल हुए हैं। प्रमाण स्वरूप पिंगल भाषा में कविवर "सुकवि 'राय" लिखते हैं—

को मालव दल मथइ, कौन महमँद गहि मिल्लइ।
को गुजरात हिं गाहि, साहि सम्मुख गहिवि ल्लइ॥
को लोदी सम लरइ, कौन आगरो प्रजारइ।
को बाबर कहँ हटकि, बहुरि पहवा लगि तारइ॥
मानरायनृपति मल्लहसुतन, तुँअ डर बंगतिलगवै।
सग्राम रान तुमविन अवर, इते साहि को अगवै॥
सेल सँडामी करिग, खग्ग घन करिग रंग रस।
कर अहरनि अरि सीस,रुहिर अरि करिग मारवस॥
धौंक सइ नीसांन, खांन सब कट्टिस किन्नउ।
मार गहन सुरतान, सुतौ जीवत धरिलिन्नइ॥
मनिराय त्रिपति मल्लहसुतन,ली हाला कुंअरकहर।
सग्राम रान महमंददल, आवट्यउ इक्कह पहर॥

ये पद्य ओज गुण लिए हुए सालंकार हैं। इसी प्रकार डिंगल कविता भी ओज गुण से ओत प्रोत है :—

तेग तड़क्का वेगका, पड़ सॉस दड़क्का।
फोड़ बड़क्का कत्तिए, फड़ मद्ध धड़क्का॥
हाड़ मड़क्का संध का, कर कंध फड़क्का।
सीर चड़क्का सिर धरम, वेकरा चड़क्का॥
छेल धड़क्का फुट्टणा, फड़ मन्ध हड़क्का।
रत्त छड़क्का उच्छलै, मुख चंप भड़क्का॥
नेज भड़क्का जालका, संदूर तड़क्का।

घट्ट घरघ्घर घोरिये, धामक्क भड़क्का।
लोथ . मड़क्का हिन्दुआं, सुरताण घड़क्का॥

इत्यादि पद्यों को पढ़ने से युद्ध का दृश्य सामने आजाता है। ड़े, हाथी, ऊँटों, शस्त्र एवं वीरों तथा युद्धों का वर्णन अनुभव-युक्त तथा . न हुआ है।

घोड़ों के कुल अंग १२ माने गए हैं जिनमें से (ललाट, फुरने नासाग्र) सीना, पुट्ठे, सुम, गर्दन और आंखें) ये अग बड़े और (पैर के मूठिये, कमर, कनौती (कान), पूँछकी डंडी, पशम (रोम) र मुँहफाड़ (जबड़ा) ये अंग छोटे ठीक होते हैं। इसी प्रकार ऊँट मस्तक, सीना, गर्दन, कुंभा आदि बड़ी और कान, धुथरी पेट एवं र के नीचे की तली, पूँछ, पैर के मूठिये, कमर, और पशम (रोम) छोटे ठीक माने गये हैं। ऐसे वर्णन में जानकारी की आवश्यकता होती है। घोड़ों एवं ऊँटों का वर्णन, महाराणा अमर (प्रथम) का सलीम (जहाँगीर) के साथ युद्ध हुआ, में अच्छा हुआ है। इस प्रकार इस में वर्णित कविताएँ उच्च कोटि की और अनुभवी कवियों द्वारा लिखी गई हैं।

इसके रचयिताओं के नाम निम्न हैं:—

१ राणासांगा से लेकर उदयसिंह तक का वर्णन करने वाला "सुकवि राय" कोई "राव" जाति का कवि हो।

२ वीरमदेव मेड़तिया का वर्णन करने वाला "करण, रतनू"।

३ कर्मसी एवं साँवलदास चाहुवान का वर्णन करने वाला "मेहा, बीठू"।

४ जयमल मेड़तिये का वर्णन करने वाला "ईसर, रतनू"।

५ सूजा बालेचे का वर्णन करने वाला "कर्मसी, आसिया"।

उपर्युक्त पाँचों कवियों की कविताएँ, इसमें प्रकाशित हुई हैं, वि० सं० १७१६ की संगृहीत पुस्तक से ली गई हैं। अतः ये १७१६ से पूर्व के कवि हैं।

६ महाराणा अमर (प्रथम) का वर्णन करने वाला कोई अज्ञात कवि है, परन्तु जिस संग्रह से ये पद्य लिए गए हैं, वह पुस्तक भी अट्ठारवीं शताब्दी की प्रतीत होती है।

इस प्रकार इस भाग की रचना प्राचीन संग्रह से कीगई है। अत इतिहास और साहित्य के लिए बड़ी उपयोगी है।

—कविराव मोहनसिंह

नोट:— रचयिता कवियों के साथ "रतनू" "बीठू" एवं "चारीवा" शब्द आए हैं। उक्त तीनों चारण जाति की शाखाएँ हैं।

प्राचीन राजस्थानी साहित्य

भाग ८

(गीत साहित्यान्तर्ग)

महाराणा सांगा

छप्पय

गोरियं गुर गुजरात, खोदि खिलची कस किन्नउं ।
भर भट्टी रणथंभ, झोंकि ढिल्ली जौ दिन्नउं ॥
जल सभरि अजमेर, पोति नागौर वतक्कर ।
टपक आनि जालौर, उन्न जस वस्स सप्तसर ॥
"भनि राइ" राइमल्लह सुतन, पालव कर करि वरतवह ।
संग्राम रान गढ़ चित्रवर, इहि मद मत्तव चक्कवह ॥१॥

अर्थः—राय कवि कहता है कि 'रायमल के सुपुत्र राणा सांगा ने गौर वंशी गुजरात के बादशाह से भी बड़े मालवा के खिलजी-वंशीय सुलतान पर क्रुद्ध हो, उसे खदेड़ दिया। उसने रणथम्भोर युद्धक्षेत्र रूपी भट्टी में दिल्लीश्वर के सैनिकों को झोंक दिया। उस ख्याति प्राप्त करने वाले श्री राणा ने सांभर, अजमेर और नागौर पर अधिकार स्थापित कर अपनी कीर्ति उज्ज्वल की। उसकी टक्कर जालोर निवासी ही जान सके, उसका यश सप्त सिन्धु पर्यन्त फैल गया। उसने बागी भीलों की

पालों[1] पर भूमि-कर लगा दिया। इस प्रकार रणोन्मत्त हो वह चित्तौड़ पर एक छत्र राज्य करने लगा।

वागुरि वल उट्ठयऊ, खेत गागुरनि महारन।
मांडो पति सजि सैन, जोर आय उत बग्ग वन ॥
-झंकारे नरबद, मान अज्जा गंकिन्नउ।
सबर मुट्ठि संग्राम, तक्कि मेछह सर दिन्नउ ॥
भनि राई त्रिपति मल्लह सुतन, हिन्दू हठि खिल्यउ हरन।
संग्राम रान सिक्कार-सिम, साहि बंधि लिल्यउ सरन ॥२॥

अर्थ:—गागरोन के रणक्षेत्र रूपी शिकारगाह में सेना सजाकर मांडू के बादशाह ने सिंह का रूप धारण किया। यह देख कर रायमल के पुत्र राणा सांगा ने शिकारी का रूप बनाया और अपनी शक्ति रूपी जाल बिछा दिया। उसके साथी नरबद (हाडा), मान (चन्द्रभान चहुवान) और अज्जा (झाला) ने ललकार कर उस व्याघ्र रूपी बादशाह को रोक दिया। उसी समय उस (राणा) ने अपनी बलवान मुष्टिका द्वारा म्लेच्छपति पर शर-सन्धान किया। इस प्रकार हठ कर उस हिन्दू नरेश ने मृग का रूप दे बादशाह को फंदे में फंसा लिया और अपनी शरण में ले लिया।

तेरह सै पंचास, आठ साबन पंचै सर।
कपि झुमयउ हंमीर, चढयौ अल्लाउदीन कर ॥
मल्लै राह खुम्मान, दाउ पंद्रह सै दिन्नै।
अठहत्तर कातिग्ग, दुर्ग चंगलगढ लिन्नौ ॥

1 राजस्थान के दक्षिण पश्चिमी हिस्से में रहने वाले आदिवासी भील छोटी छोटी टेकरियों पर मकान बनाकर रहते हैं, इनके निवासस्थानों को 'पाल' कहते हैं।

द्वै सत्त वरिख पै ईस जवु,पनरह दिन गनि लिखियलिय ।
संग्राम राण रनथंभ गिरि, सु लगि हट्टि हिदवान किय ॥३॥

अर्थः—जिस रणथंभोर दुर्ग पर वि० सं० १३५८ श्रावणी पंचमी को हम्मीर चहुवान अलाउद्दीन खिलजी से दृढतापूर्वक युद्ध करता हुआ मारा गया और दुर्ग अलाउद्दीन के अधिकार में गया।

राय कवि कहता है कि "उसी दुर्ग रणथंभोर को खुमाण उपाधि-धारी राणा सांगा ने वि० सं० १५७८ कार्तिक दशमी मंगलवार को दो सौ बीस वर्ष बाद, पन्द्रह दिन तक घेरा डालकर यवनों के अधिकार से शक्ति पूर्वक धावा कर अपने अधिकार में कर लिया।

क्रिम क्रिम सुरपति सुन्यउ, क्रिमजु पायाल भयउ जय ।
यह अपुव्व गम नहिन, किमें कवि करहिं किम्ति रस ॥
हनिग खग्ग खुम्मान, तोक सिर हर लिय अब्बहँ ।
गलि फनवै सिर चंद्र, कयौ पा पर फिरि नव्वहँ ॥
सो पन्नगपुर अमरपुरह, चल उवच राइमल्ल सुअ ।
संग्राम जु वंध्यौ साह रन, तीन भुअन आकंप हुअ ॥४॥

अर्थः—राणा सांगा ने शाह को युद्ध में बांधलिया, उसका कीर्तिगान करता हुआ कवि कहता है कि—"इस अपूर्व विजय की प्रशंसा स्वर्ग और पाताल तक फैल गई है। खुमान उपाधिधारी राणा के खड्ग के आघात से कटे हुए मस्तकों को शिव ने उठा लिया" उस समय उनके (शिव के) गले में सर्प और मस्तक पर बालचन्द्र था अतः पाताल में उन्हीं सर्पों और स्वर्ग में चन्द्र ने यह प्रसिद्धि की। जिसे सुन रायमल के सुपुत्र के आतंक से त्रिभुवन कंपित होगया।

को मालव दल मथइ, कौन महमँद गहि मिल्लइ ।
को गुजरात हिं गाहि, साहि सम्मुख गहि विल्लइ ॥

को लोदी सम लरइ, कौन आगरो प्रजारइ।
को बाबर कहँ हटकि, पहुँचि पंहमा लगि तारइ॥
भनि राइ नृपति मल्लह सुतन, तुँअडर बंग तिलंगवैं।
संग्राम रान तुम बिन अवर, इते साहि को अंग वैं॥५॥

अर्थ:—हे रायमल के सुपुत्र राणा सांगा! तेरे बिना मालव सेना का संहार कर मुहम्मदशाह को यदो बना कौन कुचल सकता है? गुर्जर प्रदेश को कुचल वहाँ के बादशाह से कौन सामना करेगा? लोदी से भिड़ कर आगरा कौन जलायेगा? बाबर को रोक दिल्ली तक उसे कौन भगायेगा? तुमसे बंग और तैलंग प्रदेश भी कांपता है। अतः इतने बादशाहों से लोहा लेने वाला एकमात्र तूं ही है।

गुज्जर इय मालइय, दिल्लि कनवज्ज कुंड खनि।
इब्राहिम साकुल्लि, समिध घन मकन-मीर हनि॥
गंग-जमुन घृत मिमईं, अगनि ग्वारियर पुब्वभर।
सत इक्कोतर तारि, रच्यउ राजसू होम हर॥
भनि राइत्रिपति मल्लह सुतन, चारि साहि आहुति करिग।
संग्राम रान रन जग्यकरि, समम ईश अग्गह चरिग॥६॥

अर्थ:—हे रायमल के सुपुत्र साँगा! तूने गुर्जर, मालवा, दिल्ली और कन्नौज प्रदेश को यज्ञ कुण्ड बनाया। उसमें इब्राहिम लोदी का शाकल्य (होम-सामग्री), बहुत से मीरों को समिधा और मीर को मक्खन बनाया। शत्रु वर्ग की गंगा यमुना का जल बनाया और ग्वालियर में होने वाले युद्ध रूपी घृत से यज्ञ की अग्नि प्रज्वलित की। इस प्रकार तूने राजसूय यज्ञ का अपने एक सौ इकहत्तर पूर्वजों (संभवतः उसने वैवस्वत मनु से लेकर रायमल तक राज वंश की नामावलि एक

...ो इकहत्तर मानी हो) का उद्धार किया। (या उस समय के १७१
... और यवन शासकों को परास्त कर राजसूय यज्ञ की समाप्ति की)
पूर्णाहुति के रूप में चार बादशाहों (दिल्ली, मालवा, गुजरात. जौनपुर
व कन्नौज वालों) को भस्म कर उसी भस्मी से शिव के अंग चर्चित किये।

इक्क लीय जालौर, इक्क भर हूँ चँदेरिय।
ठट्ठा अरु मुलतान, आंन मांडौ लगि फेरिय॥
दरिया सौं हद करइ, उभरि कोउ करै न कदर।
लेवौ परवत माल, मारि लिय बीच सिकंदर॥
मनि राइ नृपति मल्लह सुतन, सरन साहि धरि अंगवइ।
संग्राम तपै गढ़-चित्र वर, इक्क छत्र महि भुग्गवइ॥७॥

भावार्थः—रायमल्ल के पुत्र राणा सांगा ने एक ही शस्त्र-वर्षा में जालौर और चंदेरी को अपने अधिकार में कर लिया। ठट्टा, मुलतान और मांडू तक अपनी दुहाई फेर समुद्र पर्यंत सीमा निर्धारित कर दी। पर्वत माला पर अधिकार करते समय सिकन्दर लोदी को नष्ट कर बादशाह को पकड़ लिया। इस प्रकार वह चित्तौड़-दुर्ग पर एक छत्र राज्य करने लगा।

जिहि मुख वर बुल्लयउ, विरचि सोई मुहँ कुट्यउ।
दस अंगुर मुख मिल्लि, आंनि पग पयौं न छुट्यउ॥
पीठि हुकि मुक्कयउ, अदिन दिन पयौ दुहिल्लउ।
रखव बखत अरु तखत, लुट्टि लंगर गर मिल्यउ॥
कंचन कचोल जिहिं कर सुगति, तिहिं हत्थनि कच कौल दिय।
संग्राम रान कवि राइ मनि, साहि दंषि दरवेस किय॥८॥

अर्थः—बादशाह [महमूद] ने जिस मुख से राणा सांगा को कु वाक्य [अपशब्द] कहे, उसी मुख पर राणा ने आघात किया।

जब बादशाह अपने मुख में दसों अंगुलियाँ लेकर राणा के चरणों में झुका, तब राणा सांगा ने उसे बंधन मुक्त कर दिया। राणा ने उसकी पीठ पर थपकी दे विदा किया। महाराणा द्वारा बादशाह भयंकर विपत्ति में पड़ गया था। उसका सिंहासन, रसद आदि लूट लिया गया और गले में शृङ्खला डाल दी गई। जिस बादशाह के हाथों मे स्वर्णिम पात्र रहता था, उसी के हाथों में खप्पर पकड़ाकर उसे फकीर बना दिया।

जु गढ साहि अल्लाव-दीन,विग्रह्यउ बरस दस।
जु गढ अरिगसुरताँन,जित्ति नहिं कर्यो अप्पवस॥
जु गढ खिलचि महमूद,जार जुरि जुद्धन लिन्नउ।
जिहिं लिन्नउ तिहिं क्रूर,खग्ग पर हत्थन दिन्नउ॥
भनि राई नृपति मन्लह सुतन, हनि निसाँन ढोग्रा दयउ।
संग्राम . रान अजमेर गढ, धाइ घेरि गँत्रह लयउ॥६॥

अर्थः—जिस अजमेर के दुर्ग को अपने अधिकार में करने के लिए अलाउद्दीन दस वर्ष तक लड़ता रहा, दिल्ली का सुलतान भी लड़कर उस पर अधिकार न कर सका, महमूद खिलजी ने भी सेना एकत्रित कर युद्ध किया, पर वह भी इस पर अधिकार न पा सका, यदि किसी क्रूर ने इस पर अधिकार किया, तो उसे भी दुर्ग सहित अपनी तलवार समर्पित करनी पड़ी।

परन्तु एकमात्र रायमल के सुपुत्र राणा सांगा ने ही इसे लेने का विचार कर नक्कारे बजवाए और आक्रमण कर दुर्ग को घेर लिया और उस पर अपना आधिपत्य जमा लिया।

सेन मँडाणी करिग, खग्ग घन करिग रंग रम।
कर अहरनि अरि सीस,रुहिर अगि करिग भार यम॥

धींक मद नीसान, खान सब कड्डिस किन्नउ।
सार गहत सुरतान, सुतौं जीवत धरि लिन्नउ॥
भनि राइ त्रिपति मल्लह सुतन, लौ हाला कुंवर कहर।
संग्राम रान महमद दल, आवध्यउ इक्कह पहर॥१०॥

अर्थः—रायमल के पुत्र राणा सांगा ने अपने भाले की संडासी, खड्ग को घन (हथोड़ा), शत्रु के सिर को अहरन (जिस पर तप्त लोहा कूटा जाता है), रुधिर को अग्नि ज्वाला, (घन की) आघात-ध्वनि-नक्कारों की आवाज और पाण (शस्त्र-धार में तेजी) देने के लिये जहर के स्थान पर हाथियों को मान, महमूद की सेना को एक प्रहर तक तपाया और शस्त्र-धारी बादशाह को जीवित ही पकड़ लिया।

खान मलिक उमराउ, साहि समहर दल सज्जिग।
तबल ढोल निस्सान, सबद पंचौं तहाँ बज्जिग॥
पतसाही सुरतरा, चौंर सिर छत्र अडंबर।
हैं हीरा कर जरित, तखत अंबर जर कंमर॥
इतनैंनि सहित कविराइ कहि, आयउसाहि लग्गन्न कहँ।
महमुंद विलानो नद जिम, या संग्राम समुद्र महँ॥११॥

अर्थः—खान, मलिक और उमराव पदधारी वीरों को साथ में ले महमूद ने युद्ध के लिए तय्यारी की। तबला, ढोल और नक्कारे आदि-वाद्य-यन्त्र पंचस्वर में बजने लगे। चमर, छत्र, हीरों से जटित तख्त और जरीन कमर पेटी आदि शाही चिन्हों से सुशोभित होकर वह आगे बढ़ा, परन्तु राणा सांगा की अपार सेना में वह बादशाह इस प्रकार लुप्त हो गया जैसे समुद्र में मिल जाने से नदी-नाले का नामो निशान नहीं रहता।

जाँ वामन तोहि कहउँ, बलि जु बंध्यो कपट्ट करि ।
जाँ दशकंधर कहउँ, इन्द्र बंध्यो त श्राप धरि ॥
जाँ विक्रम तुहि कहउँ, असुर बंध्यौ बल पाएँ ।
जाँव पित्थ तुहि कहउँ, साहि बंध्यो घर आएँ ॥
मनि गइ नृपति मल्लह सुतन, कोइन उच्च तिहि तुलइ अब ।
महमूद चन्ध्यौ संग्राम कर, तिहि डर डरि सुरतान सब ॥१२॥

अर्थः—हे रायमल के सुपुत्र राणा सांगा ! तेरी समता वामन से किस प्रकार की जाय, क्योंकि उसने बलि को वचन बद्ध कर कपट किया । तेरी तुलना रावण से भी नहीं की जा सकती क्योंकि शाप के कारण वह इन्द्र द्वारा बांध लिया गया । तुझे विक्रम इस लिए नहीं कह सकते, क्योंकि वह बलशाली होते हुए भी दानवों द्वारा बांधा गया । दिल्लीपति पृथ्वीराज भी तुम नहीं हो सकते, क्योंकि गोरी द्वारा वह भी बन्दी बनाया गया । अतः तेरे सिवाय कोई दूसरा श्रेष्ठ नहीं है, तूने युद्ध में महमूद को बाँधा, जिससे सब बादशाह तेरे डर से कांपने लगे हैं ।

साहि उथपि थपि उथपि, ताहि थपि उथपि सथिर किय ।
दाहि दाहि गढ द्रुग्ग, दाहि दहरांन द्रुग्ग दिय ॥
गोय कनव्वज दालि, ढिल्लि.........व्याज्यउ ।
हिंदुनि के शिर छत्र, तानि इबराहिम भंज्यउ ॥
मनि गइ नृपति मल्लह सुतन, गंग सगग मझि मल्लियउ ।
नन काहु कियो करि है अजहुँ, सक बंधन सांगन कियउ ॥१३॥

[रचयिता—सुकवि राय]

अर्थः—राणा सांगा ने बादशाहों को अनेक बार उखाड़ा और स्थापित किया अनेक दुर्ग ढहा दिए और अनेक अपने पक्ष वालों को प्रदान कर दिये। कन्नौज प्रदेश पर आक्रमण कर उसे नष्ट कर दिया। .... ···हिन्दू राजाओं के मस्तकों को छत्रों से सुशोभित कर इब्राहिम लोदी को नष्टप्रायः कर दिया। बादशाह को बन्धन मुक्त कर ऐसा कार्य किया जैसा न तो कोई कर सका और न कोई कर ही सकेगा।

राणा विक्रमादित्य

कवित्त (छप्पय)

भंज साह महमंद, राज ईडर राय भांनह।
सजि भाला हलवद्द, अजा अजमेर सुथानह॥
थपकि मारि रनथम्भ, अली सत्र सल्लह शीपर।
चंदेरी चक्रसेन, वंटिया दल खींची घर॥
स्याहवाद धंधेर्या जिगनरिख, विक्रम गढ़ पावास रुपि।
संग्राम रान करिवान बल, अप्प बान हिंदवान थपि॥ १॥

अर्थः—राणा सांगा ने महमूद शाह को नष्ट किया। रायमल को ईडर और हलवद से आए हुए भाला अज्जा को अजमेर पर नियुक्त किया। रणथंभोर में शाह द्वारा नियुक्त अलीखाँ को मार दिया। शिवपुरी (सिरोही या शोपुर) पर शत्रुशाल एवं चंदेरी पर चक्रसेन को नियुक्त किया। खींचियों को दलित कर यत्र तत्र स्थापित किया। शाहबाद, धंधेरा में जगनरिख एवं विक्रमगढ़ में पावासु को नियुक्त किया।

दोहा

रतन जतन विन रोल में, रहे रान चहुवान।
दश बावन को एक दिन, लेखो लाभ लिखान॥ २॥

अर्थः—सांगा का पुत्र राणा रत्नसिंह निर्भय वीर था। वह चित्तौड़-दुर्ग के द्वार, यह कहकर खुले रखता था कि सिंह की कन्दरा के कहीं किवाड़ होते हैं ? परन्तु क्रोध वश सूर्यमल को मारते समय वह भी मारा गया। सूर्यमल के पक्ष के दस और राणा के बावन व्यक्ति भी वहाँ पर काम आए।

अठ्यासा पन्द्रह समत, बीक्रम तखत विराज।
चढी रोस ओचट कुरख, कीनो काज अकाज ॥ ३ ॥

अर्थः—विक्रम सम्वत् १५८८ में विक्रमादित्य सिंहासनासीन हुआ। उसने भी समीप रहने वालों से क्रोधवश नाराजी की बातें कह कर उन्हें रुष्ट किया। यह कार्य बुरा किया।

पहलवान पायक प्रबल, गिख ढिग थाना बंध।
मरमी भरमी मर सुकवि, धराभार निज कन्ध ॥ ४ ॥

अर्थः—चत्रारधी राणा वंश के नादान नरेश ने अपने पास केवल पहलवान और कुछ पैदल सेना को बलवान समझ रख लिया और समस्त राज्य भार को अपने ही कंधों पर समझा। जिससे सामंत और श्रेष्ठ कवियों को नीचा देखना पड़ा और वे वहाँ से चले गये।

मेना-पेना तरहटी, घेरि चले इक धोंस।
गढ ते नांहिन उतरे, रहे राद्र रुपि रोस ॥५॥

अर्थ.—ऐसी व्यवस्था देखकर एक दिन चित्तौड़ की तलहटी (नगर) को केवल कुछ मीणों ने क्रुद्ध होकर लूट लिया। परन्तु राणा विक्रमादित्य के विश्वास पात्र पहलवानों ने उनका सामना करने के लिए दुर्ग से नीचे कदम तक नहीं रक्खा।

कवित्त (छप्पय)

बाणु लक्ख मीमाड़, डोढ चमरल, बिज्जाज़ल।
खान देश बराड, विग्रहा लार, विद्रव थल॥
गोड़ वान ओड़छा, स्याह सेती भीजानं।
घर एती पाइये, देश आमँद फुरमानं॥
हय गय सुसाज पक्खर सरस, चोल बहादरि नर लिये।
लख अद्ध सद्द नीसान नद, मेदपाट पर चल्लिये॥६॥

अर्थः—उधर बहादुरशाह ने बानवे लाख की आय का नीमाड़ प्रदेश, डेढ़ लाख की आय का चम्बल, बीजाजल प्रदेश, खानदेश, बराड़ प्रान्त, वैद्रव प्रदेश, गोड़वाना, ओड़छा और अन्य बादशाहों को भी फरमान लिखकर भेजे। उत्तमोत्तम यौद्धा तथा हाथी घोड़ों के साथ अर्ध लक्ष सेना सजाई और नक्कारे बजवाकर उसने मेवाड़ पर चढ़ाई की।

लखि उकील ने लिखी, साहि मालव दल सज्जिय।
गढ-चित्र'गी उपर, बिसर निस्सान सवज्जिय॥
किये कँूच पर कँूच, चाय चम्मल्ल उत्तरिय।
सुनी खबर गढ फजर, रान विक्कम सामलिहिय॥
कीने निसान खट तीस सत, बाना बंध बिरुद्द बिय।
पक्खर तुरंग मातंग मद, मीमच दिसि मिल्लान किय॥७॥

अर्थः—यह देख कर महाराणा के वकील ने महाराणा को लिखा "कि मालव प्रदेश के बादशाह बहादुर शाह[1] ने चढ़ाई की है और

---

१. बहादुरशाह ने गुजरात के अतिरिक्त मालवा पर भी अधिकार कर लिया था, अतः उसे मालव प्रदेश का बादशाह भी लिखा गया है।

अर्थ:—सांगा का पुत्र राणा रत्नसिंह निर्भय वीर था। वह चित्तौड़-दुर्ग के द्वार, यह कहकर खुले रखता था कि सिंह की कन्दरा के कहीं किवाड़ होते हैं? परन्तु क्रोध वश सूर्यमल को मारते समय वह भी मारा गया। सूर्यमल के पक्ष के दस और राणा के बावन व्यक्ति भी वहाँ पर काम आए।

अठ्यासा पन्द्रह समत, वीक्रम तखत विराज ।
चढ़ी गेम ओचट कुरख, कीनो काज अकाज ॥ ३ ॥

अर्थ:—विक्रम सम्वत् १५८८ में विक्रमादित्य सिंहासनासीन हुआ। उसने भी समीप रहने वालों से क्रोधवश नादानी की बातें कह कर उन्हें रुष्ट किया। यह कार्य बुरा किया।

पहलवान पायक प्रबल, रिख ढिग थाना बंध ।
मरमी भरमी भर सुकवि, धराभार निज कन्ध ॥ ४ ॥

अर्थ:—यशस्वी राणा वंश के नादान नरेश ने अपने पास केवल पहलवान और कुछ पैदल सेना को बलवान समझ रख लिया और समस्त राज्य भार को अपने ही कधों पर समझा। जिसमें सामंत और श्रेष्ठ कवियों को नीचा देखना पड़ा और वे वहाँ से चले गये।

मैना-घेना तरहटी, घेरि चले इक द्यौस ।
गढ़ ते नांहिन उतरे, रहे रहट्ट कपि गेस ॥५॥

अर्थ:—ऐसी व्यवस्था देखकर एक दिन चित्तौड़ की तलहटी (नगर) को केवल कुछ मीणों ने क्रुद्ध होकर लूट लिया। परन्तु राणा विक्रमादित्य के विश्वास पात्र पहलवानों ने उनका सामना करने के लिए दुर्ग से नीचे कदम तक नहीं रखा।

कवित्त (छप्पय)

बाणु लक्ख मीमाड, डेढ चमरल, विज्जाजल।
खान देश वराड, विप्रहा लार, विद्रब थल॥
गोड़ वान ओड़छा, स्याह सेती भीज़ानं।
धर एती धाइये, देश आमँद फुरमानं॥
हय गय सुसाज पक्खर सरस, बोल बहादरि नर लिये।
लख अद्ध सद नीसान नद, मेदपाट पर चल्लिये॥६॥

अर्थः—उधर बहादुरशाह ने बानवे लाख की आय का नीमाड़ प्रदेश, डेढ़ लाख की आय का चम्बल, बीजाजल प्रदेश, खानदेश, वराड़ प्रान्त, वैंद्रब प्रदेश, गोड़वाना, ओड़छा और अन्य बादशाहों को भी फरमान लिखकर भेजे। उत्तमोत्तम योद्धा तथा हाथी घोड़ों के साथ अर्ध लक्ष सेना सजाई और नक्कारे बजवाकर उसने मेवाड़ पर चढ़ाई की।

लखि उकील ने लिखी, साहि मालव दल सज्जिय।
गढ–चित्रंगी उपर, बिसर निस्सान सवज्जिय॥
किये कूँच पर कूँच, चाय चम्मल्ल उत्तरिय।
सुनी खबर गढ फजर, रान विक्कम सामलिहिय॥
कीने निसान खट तीस सत, थाना बंध विरुद्द बिय।
पक्खर तुरंग मातंग मद, मीमच दिसि मिल्लान किय॥७॥

अर्थः—यह देख कर महाराणा के वकील ने महाराणा को लिखा "कि मालव प्रदेश के बादशाह बहादुर शाह[१] ने चढ़ाई की है और

---

१. बहादुरशाह ने गुजरात के अतिरिक्त मालवा पर भी अधिकार कर लिया था, अतः उसे मालव प्रदेश का बादशाह भी लिखा गया है।

चित्तौड़ दुर्ग को लेने की इच्छा से भयानक नक्कारे बजवा रहा है। वह स्थान २ पर पड़ाव करता हुआ चम्बल को पार कर बढ़ता आ रहा है। यह सूचना महाराणा विक्रमादित्य को प्रातःकाल मिली और वह युद्ध के लिए तय्यार हो गया। उसके साथ विरुद्धारी पक्रमी साठ योद्धा भी युद्ध के लिए सन्नद्ध थे। उसी समय नक्कारे बजने लगे, घोड़े तथा मदमत्त हाथी सजाए गए और नीमच की ओर प्रयाण किया गया।

जीरन धर मिल्लान, रान सुरतान मिलानं।
खेत खम्भ रुप्पिय, जीत आगी जैतानं॥
धमक्क घोर नीसान, धमक गिर पाय थिरंनिय।
तमकि तोप छूटीय, आभ लागी अगंनिय॥
फोटियं कान घोर्र शबद, हुई बान धर लुट्टय।
उठियं धोम छायो अरन, कायर चरन विछुट्टय॥ ८॥

अर्थः—जीरन नामक स्थान पर महाराणा और बादशाह का सामना हुआ। युद्ध क्षेत्र में स्तम्भ स्थापित कर वीरों ने युद्ध छेड़ा। जोरों से नक्कारे बजने लगे, पदाघात से पर्वत व पृथ्वी धमकने लगी। कड़कती हुई तोपों के छूटने से अग्नि ज्वाला आकाश तक फैल गई और उनके घोर शब्द से कान बहरे होगए। गोलों के लगने से अश्वारोही वीर पृथ्वी पर तड़फड़ाने लगे। धूम्र उठकर मस्तक पर छागया। यह देखकर कायर रणांगण से भाग निकले।

दोहा

देखत दल दीवान के, चल चल अगले पाय।
रहे न ठिंग को रान के, गरत, गवल, राय॥९॥

अर्थः—महाराणा की सेना के रावत, रावल और राय पद धारी योद्धा, जो अचल माने जाते थे, वे सब विचलित होगए. उनमें से कोई भी महाराणा का साथ देता हुआ दिखाई नहीं दिया।

छद

छोटी छोटी मुंदरी, अधिक जगाव, सोभी सटके दलपति राव।
पान फूल के लेते भोग, सोभी सटके राव असोग॥
घोड़ें चढे फेरते भाला, सोभी सटके सज्जा झाला।
बांके पटे के करते दाँव, सोभी सटके कल्लाराव॥
मेदपाट के पाट कहाव, सोभी सटके आसकरन राव।
हाथी चढे रावते बाना, सोभी सटके सांगा सुराना॥
अनमी कंध के बिरुद बुलावत, सोभी सटके खेता रावत॥१०॥

अर्थ—सूक्ष्म (पतली) मूँदड़ी पहनने वाला दलपति राव (बेदले का), सूक्ष्म भोजन करने वाला अशोकराय (बिजोलिया का), घोड़े पर चढ़कर भाला घुमाने वाला सज्जा झाला (सादड़ी का), पटे के दाव में विज्ञ राव कल्ला, मेवाड़ राजवंश में प्रमुख कहलाने वाला आसकर्ण (डूँगरपुर का), हाथी पर चढ़ कर आडम्बर रखने वाला वीर सांगा (देवगढ का) और उच्च स्कंध वाला रावत खेतसिंह (सलूम्बर का) आदि वीर, युद्धस्थल से चले गये।

कवित्त (छप्पय)

माँडव चित्रंग-पती, जंग जोरनि धर मंडिय।
मदली दल सहवान, रान रनखेत स छंडिय॥
उसरि कोट गढ ओट, चोट चहुँवे दिस चिन्हिय।
गोरी साह नरेस, पेज दिन अट्टस किन्हिय॥

हलहलिय द्रुग्ग चल चल विचल, दहलि वीक उत्तरि सिढिय।
धरि छत्र विरद सिर बाँधिके, करमेती साके चढिय ॥११॥

अर्थः—गुजरात का बादशाह, जो मांडवेश्वर बन बैठा था उसमें और चित्तौड़ेश्वर विक्रमादित्य, में औरन नामक स्थान पर युद्ध छिड़ा। परन्तु सेना के बदल जाने के कारण महाराणा ने युद्ध क्षेत्र का परित्याग कर दिया। बस गौरवंशी (बहादुरशाह) ने आगे बढ़ कर चित्तौड़ दुर्ग को आ घेरा और चारों ओर से आघात करने लगा। उसने आठ दिन में दुर्ग को खाली कराने की प्रतिज्ञा की, जिससे दुर्ग कांप उठा और अचल वीर भी विचलित होगए। महाराणा ने डर कर दुर्ग का परित्याग कर दिया। यह देख राजमाता कर्मेती, महाराणा का छत्र एवं विरुद शिरोधार्य कर शाका करने के लिये तत्पर हुई।

राघो सत्रसल दूदसी, प्रोहित देवीदास।
वरछिन ऊपर कूदि के, कीनो जुद्ध प्रजास ॥१२॥

अर्थः—उस समय वज्रकाय वीर राघव, शत्रुशाल, दूदा और पुरोहित देवीदास ने भालों की अनियों पर कूद कर युद्ध छेड़ा।

कवित्त (छप्पय)

त्रीय सहस तिन सुर, चाप मैं कम्द अनँत परि।
माय वीक्रम मंत्रवी, कीन शाको खग्गन जुरि॥
सत सहस कट सुभट, विकट अट थट्ट स चंडिय।
पहर तीन लरि प्रलै, घिरे चित्रकोट स मंडिय॥
उडि धोम धोम छायो धरुन, रत धरनि जल उत्तरिय।
बहैलीम धुलरयो रक्खि गढ़, बहादूर माँडू फिरिय ॥१३॥

अर्थः—युद्ध भूमि में तीन सहस्र योद्धा पवन के समान तीव्र गति से बढ़े, जिससे असंख्य वीर काँप उठे। इस प्रकार राणा विक्रमादित्य की माता और मन्त्री ने खड्ग-युद्ध कर शाका किया। इस युद्ध में प्रचंडकाय वीर-समूह पर भयानक वार करते हुए सात सहस्र हिन्दू वीर काम आए। तीन प्रहर तक चित्तौड़ दुर्ग पर प्रलय के समान दृश्य दिखाई देने लगा। तोपों के धूएँ में सूर्य भी लुप्त प्राय होगया और दुर्ग से रक्त की नदी प्रवाहित हुई। इस प्रकार विजय प्राप्त कर बहादुर-शाह दुर्ग की रक्षा का भार वहलूम बलखी को सौंप मांडू चला गया।

रामपोल जल्लाल, रेह नाथावत रक्खिय।
सगर चोरआमली, सूर सूरज किय सक्खिय॥
सिंघ, सज्जा, सिर बल्लु, राम तहि ठाम स रक्खिय।
घंघेर्या रनधीर, धार-पति धीरस वक्खिय॥
डोडिया माँन असमांन अरि, भादारा जंगन जुरिय।
अजन्न खोह के बुरज उडि, खेतसिंघ खग्गू खिरिय॥१४॥

अर्थः—शत्रुओं के लिए खूंखार बन नाथावत ने रामपोल पर वीरता दिखाई। वीर सगर ने चोर-आमली नामक स्थान पर सूर्य को अपनी वीरता का साक्षी बनाया। सिंघा, सज्जा, बल्लू और रामदास ने भी उसी स्थान पर अपनी कीर्ति बढ़ाई। घघेर्या (चौहान) रणधीर और प्रमार धीरसी भी युद्ध करते हुए मारे गए। डोडिया मान ने भी अपना मस्तक आकाश से जा लगाया। कोई भदोरिया चहुवान भी युद्ध में डट गया और अर्जुन खोह (बीकाखोह) के गिरने पर रावत खेतसिंह खड्ग से कट गया।

दोहा

बंको गढ चित्तोर को, सुन्यो हमाऊ कान।
वचन चित्त संभारि के, कियो निमान सुजान॥१५॥

अर्थः—हुमायूं बादशाह ने गर्वोन्नत दुर्ग चित्तौड़ की घटना सुनी और कर्मावती को दिया गया वचन स्मरण कर बहादुर शाह से दुर्ग वापिस लेने के लिए नक्कारे बजवाए।

कवित्त (छप्पय)

बंगाल कि करि विजय, हक्क किन्नय हम्माउग्र।
असी सहस एराक, बंदि मालव शिर धाउग्र॥
सत्त सहस मदगलत, झिलत चतुरंग स पिल्लिय।
किये कूंच पर कूंच, मुगल पट्ठानह मिल्लिय॥
चौं दिवस जुद्ध वीरुद्ध हुव, खबरि न हुं जीवत मरत।
निस जुमा माहि मालव गयो, पंच सहस मीरह परत॥१६॥

अर्थः—बंगाल पर विजय पाने के पश्चात् हुमायू ने हुंकार कर मालवे की ओर प्रयाण किया। उस की सेना में अस्सी सहस्र अश्वारोही तथा सात सहस्र मस्त हाथी थे। इस प्रकार मुगल और पठान सेना स्थान-स्थान पर पड़ाव करता हुई आगे बढ़ी। चार दिन तक युद्ध हुआ। इस में कौन मरा और कौन जीवित रहा इस का पता तक नहीं चल सका। जुम्मे की रात्रि को हुमायूं ने मालवा पर आक्रमण किया और उस युद्ध में पाँच सहस्र मीर मारे गए।

गहि लीनो मुलतान, साहि मालव ढिल्लिय पति।
सो बीनत विसयो, ज्योंहि चित्तौर पहल चित॥
सत्र समाज गह साज,उवाभ भरि दरिया बोरिय।
मगज बन्ध दुरगन्ध, विछुरि बिल्लागी जोरिय॥
काली बलाप सोचे स रसि, मेदपाट दिग कूंच किय।
विक्रम गुलाप बोडो दीह नें, दग्ग तग्ग चीतोर दिय॥१७॥

अर्थः—इस युद्ध में दिल्लीश्वर की विजय हुई। उसने बहादुरशाह को पकड़ कर बंदी बनाया। बहादुरशाह ने जैसी दुरा चित्तौड़ की की थी, वैसी हुमायूँ ने मालवा की कर दी और बहादुरशाह के साथी, हाथी, घोड़े आदि को जहाज में भर कर समुद्र में डूबो दिए। मालवा पर बलवान सूबेदार नियुक्त कर हुमायूँ ने मेवाड़ की ओर प्रस्थान किया और राणा विक्रमादित्य को बुला कर पुनः चित्तौड़ के सिंहासन पर बिठाया।

गो दिल्ली दिल्लेश, रान बीकम गढ राजइ।
मेदपाट महि दीप, दीप सातूं जस छाजइ॥
अह असंक हनि चक्क, सङ्क बिन गढमो लिल्लेइ।
हास विलास हुलास, तरक नव नवीस चल्लइ॥
चहुवान पोंवार बदल्लि के, हनि बीकम बनवीर ढवि।
दलबल्ल करे उद्ल कढ्यो, मेदपाट दल्लेस भवि॥१८॥

अर्थः—दिल्ली पति हुमायूँ दिल्ली चला गया और चित्तौड़ पर विक्रमादित्य सुशोभित हुआ। उस मेवाड़ के प्रज्वलित दीपक का यश सातों द्वीपों में छा गया। उसने निर्लज्ज और प्रचण्ड वीरों का नाश कर दिया। वह निश्शंक होकर विविध हास विलास करने लगा और उसके यहाँ नूतन तर्क वितर्क होने लगे। उससे चौहान और प्रमार क्षत्रिय उससे विरुद्ध हो गए, ऐसा अवसर पाकर बनवीर ने विक्रमादित्य को मार दिया। छलबल द्वारा मेवाड़ की सेना के भावी स्वामी उदयसिंह को बचाकर दुर्ग से निकाल लिया गया।

राणा उदयसिंह

दोहा

धरि छबरा पतरा दबटि, दीनोकोट निकोर।
पूठि अहेरी लगि के, लीनो नंदि निकोर॥१६॥

अर्थः—उदयसिंह को टबड़े में पुष्पों के बीच छिपाकर एक अहेरी (शिकारी) द्वारा दुर्ग से बाहर निकाल लिया गया।

दे बदले सुत आपको, उदल काढि अदग्ग।
धन धन हियो स धाय को, स्याम धरम के मग्ग ॥२०॥

अर्थः—उदयसिंह के बदले अपने पुत्र को मरवाने वाली धाय के हृदय को धन्य है। उसका स्वामि-धर्म पालन भी सराहनीय है। जिसने उदयसिंह को बचा लिया।

कवित्त (छप्पय)

सिग गमोज सिटाय, गिरप्पुर आसकरन्नहं।
भाखर पायन गाहि, चढ्ढि सिर कुम्भगिरन्नहं॥
मिल्यो माह नरनाह, साह पानी मुख दिक्खं।
स्याम धरम कुल करम, सरम खित्रवट की रक्खं॥
फतवार नेक पामार बनि, सुमट वचन भंजन करिय।
देपुरा धरां दीवान की, आन सवे गढ में फिरिय ॥२१॥

अर्थः—उदयसिंह को अपने यहाँ रखने में प्रतापगढ़ के रायसिंह और डूँगरपुर के आसकर्ण ने संकोच किया। तब पर्वतों को पार करते हुए अहेरी आदि ने उदयसिंह को कुम्भलगढ़ सकुशल पहुँचा दिया। वहाँ पर नरनाह उपाधिधारी चौहान कम्ह का वंशज कोठारिया का मानजी आकर मिला। उसका मुख-मंडल दैदीप्यमान था। उसने स्वामी-धर्म, निज कर्तव्य और क्षत्रियत्व की लाज रखली। प्रमार, वीर श्रेष्ठ होते हुए भी आपत्ति के कारण बंन गया। उसने वचन भंग कर दिया। परन्तु देपुरा आशा शाह जैसे व्यक्ति के महाराणा के पक्ष में होने से उदयसिंह की दुहाई कुम्भलगढ़ पर फिर गई।

धरम पंच परपंच, रम्मि दर छया हिन्दु रवि।
गिनै गिनै गड गढ्ढ, नगर ग्रह नरना मच्चवि॥

सुनी खबर चित्तौर, चित्त बनवीर विचारै।
कुँवरि व्याव दिल गहै, गड्ढ ते पनक निकारै॥
मेवास निपट मण्डे कपट, लपट बह्न खोटी गहइ।
हनि भृत्य उमैं कर आप ढिग, कौचटीक भूँठस कहइ॥२२॥

अर्थः—पाँच वर्ष तक हिन्दू सूर्य महाराणा के द्वार पर शत्रुओं के प्रपंच होते रहे। इने गिने दुर्गों, नगरों में उदयसिंह के जीवित होने की चर्चा फैल गई और यह सूचना चित्तौड़ में बनवीर को भी मिली। वह पन्ना धाय के प्रपंच को समझ गया। उसने उसे वहाँ से निकाल दिया। अपनी लड़की के विवाह के बहाने से मेवास प्रदेश में जाल बिछाया और यह चर्चा फैलाई कि छेड़ छाड़ करने वाले सब झूंठे हैं, जो यह कहते हैं कि बनबीर द्वारा उदयसिंह नहीं मारा गया अपितु धाय पुत्र मारा गया।

सहस अद्ध नाकिंद, डेढ से असि खरवार।
पट्टन ते चित्तौर, सत्थ गोलचा हजारं॥
चढि आए जालोर, पुरी नारद उत्तरियं।
मेलि सत्थ सामंत, देवसुरि जुद्ध करीयं॥
चहुवान चौएड चालक सिंघल, चालीसा अवरू सजिय।
दे खबरि कूंप मारू कटक, सोनिंग राय घन बल सजिय॥२३॥

अर्थः—राणा उदयसिंह को चित्तौड़ प्राप्ति की सहायता के लिए जालौर के सोनगरे ने सेना सजाई। जिसमें पाँच सौ घोड़े, डेढ़ सौ तलवार चलाने वाले वीर और एक हजार गोलंदाज थे, वे सब नाडोल पहुँचे। उधर महाराणा के सामंत भी उनसे जा मिले और देसूरी नामक स्थान पर युद्ध छिड़ गया। इस प्रकार वीर सोनिगरा ने अपार सैन्य

शक्ति एकत्रित की और उसे सुसज्जित कर मारवाड़ के कूंपा को सूचित किया। उसकी सेना में चौहान, चुण्डावत, चालुक्य, सिंघल और चालेचा शाखा के क्षत्रिय भी थे।

> चढे उदेसी रान, खांन साँइदास, जगा मिल।
> सांगा, सारत सोढ, दुजा आशा सूजा मिल ॥
> कूंप असा पृथीराज, करन, जैता लूणक्रन।
> मुर्द सूर मुरधरा, मिले नाडोल उदै दिन ॥
> करमसींह[1] चारण कविय, जालोर राय सत्यह दिनह।
> मिले वीर मेवार पत्न, वनवीर हूँत जंग सु किनह ॥२४॥

अर्थ:—महाराणा उदयसिंह ने भी आक्रमण कर दिया। उसके साथ खानजी (कोठारिया का), साँईदास (सलूम्बर का), जगा (आमेट वालों का पुरुषा), सांगा (देवगढ़ वालों का पुरुषा), सोढा, दूजा, आशासाह, सूजा, कूंपा, अखैराज, पृथ्वीराज, करण, जैता और लूण कर्ण आदि थे। मारवाड़ के अन्य प्रख्यात वीर भी महाराणा के पक्ष में आकर नाडोल नामक स्थान पर एकत्रित हुए। जालौर के राजा ने करमसिंह (आशिया) चारण को भी साथ में दिया। इन सब वीरों ने मेवाड़ेश्वर के पक्ष में आकर वनवीर से युद्ध प्रारम्भ कर दिया।

---

[1] यह मेवाड़ में आशिया शाखा के चारणों के पूर्वज थे। राणा उदयसिंह ने जब सोनगरों के यहाँ शादी की तो वहाँ के नरेश ने अपने विश्राम पात्र, उपर्युक्त करमसी को साथ भेजा। महाराणा ने उसे पसूंद ग्राम दिया। जिस विषय में निम्न छप्पय प्रसिद्ध है:—

> इक दिन देस ववंग, रांण जागीर कवेसर,
> समपे जपत पसूंद, ताँब पत्रह गाम्याखर ॥
> रच आसामी धार, कमो कवि रांण महाजा।
> कवि कमे सद कीध, सुनो जस जगत समाजा ॥
> कर पांज विरद राणा कने, वहो कवि पुरष वधावियो।
> जद कमा ग्रेह सूने जगत, उदय राणो आवियो ॥ १ ॥

छूटि बान कब्बान, चमकि किरपान चमाचम ।
घमकि बरच्छि निधान, मिलकि जब्बान धमाधम ॥
करक कायरन धाग, पार खंजर पंजर पर ।
महनसिंह महपाल, तुट्टि तिल तिलह धरनि पर ॥
सय तीन भ्रत्त सत्थह परिग, परिग अधिप बिरदह धरे ।
गुलवार करी जैंपाल तन, करी न कोइ ऐसी करे ॥२५॥

अर्थः—युद्ध प्रारम्भ होते ही तरकस से बाण छूटने लगे, तलवारें चमकने लगी, युवक वीरों के भालों की धम धमाहट और घम घमाहट होने लगी। वीरों के वार कायरों को खटकने लगे और खंजर शरीर के आर पार होने लगे। उसी समय महनसिंह और महीपाल नामक वीर तिल २ होकर कट गए। उनके तीन सहस्र साथी भी अपने स्वामी के विरुदों का पालन करते हुए काम आए। जैसी ख्याति जैंपाल के पुत्रों ने प्राप्त की, वैसी कोई और न तो कर सका और न कोई कर ही सकेगा।

बटन अद्ध दोइ सत्त, तिया एसह तिलंनह ।
कुंभ गिरा मुरधरा, बन्नि पेचान बचन छिन ॥
बाँटि दियो धन अद्ध, दीध नालेर सहत्थे ।
तुरँग सुरँग खरवार, कुंवरि कमलायन सत्थे ॥
करि ब्याह बजी नौबति थहति, मंडुप रच पालि सु धरिय ।
चढि लेवे चित्तौर गढ, मामंतन ढील न करिय ॥२६॥

अर्थः—कुम्भलगढ के स्वामी, महाराणा और मारवाड़ के सोनगरे तथा राठौड़ों ने वचन का पालन किया और छीनी गई दो सौ सुन्दर स्त्रियाँ बाँट लीं। प्राप्त धन भी आधा - बाँट लिया उसी समय सोनगरे (अखैराज) ने अपनी पुत्री के सम्बन्ध का नारियल महाराणा को समर्पित

किया और पाली नामक स्थान पर मण्डप की रचना कर अपनी कुमारी कमला का विवाह नोवतें बजवा कर राणा उदयसिंह के साथ कर दिया। बहुत से अच्छे अश्वारोही साथ में दिए। इस सहायता से महाराणा ने आक्रमण कर बनवीर से चित्तौड़ लेने का संकल्प किया और उनके सब सामन्तों ने भी बनवीर पर आक्रमण करने में देरी नहीं की

मिलि मारू मेवार, बीस हज्जार बहादर।
माहोली वरियाम, राम चालुक्क वीरवर॥
तोंवर कोंवरसिंह, सहस दस सजैं सुभट्ट।
मुदे थंभ बनवीर, भीर भंजन चित्रकूट्ट॥
करि हक्क चक्क उदोत में, अक्क चक्क लग्गे अरस।
छल्छोह छोह छक्के छपल, पहल किलो कीनो सरस॥२७॥

अर्थः—मारवाड़ और मेवाड़ के बीस सहस्र वीर एकत्रित होकर माहोली पहुँचे। बनवीर की ओर से राम चालुक्य तथा कँवरसिंह तँवर, जो आपत्ति नाशक प्रमुख वीर थे, दस सहस्र वीर लेकर चले सूर्योदय की वेला में हुंकार कर दोनों पक्ष के वीर एक दूसरे से भिड़ गये और वे उत्साही वीर अपने पक्ष के लिए सुन्दर दुर्ग-स्वरूप बन गए।

चालुक पग नहिं चल्यो, भीक खग धारि छिना छिन।
तोंवर कटि धर मिल्यो, मिले दल नद भीखज्जिन॥
जुरे जुद्ध के भिरे, फिरे नहँ मल्ल असल्लह।
पत्ते पाय उदैसिंह, जीति ऊमा उँपल्लह॥
वज्जे नींसान सुमान जे, सुन संग्राम गरज्जियो।
ऊगियो अक्क नहँ पृथ्वि सिर, अगी तिमर भिरि भज्जियो॥२८॥

अर्थः वनवीर के पक्ष के राम (चालुक्य) ने युद्ध से कदम नहीं हटाया एवं प्रतिक्षण वह खड्ग प्रहार करता रहा। कँवरसिंह तँवर कट कर धराशायी हो गया। इस कारण उसकी सेना भिक्षुक (अनाश्रित) हो गई कितने ही वीर युद्ध में लड़ कर कट गए, परन्तु किसी ने भी सत्य को त्याग कर असत्य ग्रहण नहीं किया। अन्त में महाराणा उदय-सिंह की विजय हुई, विजय पत्र उसी को प्राप्त हुआ, सुमान वंशज की विजय के नक्कारे बजने लगे, राणा सांगा का पुत्र विजयी होकर गर्जने लगा। सूर्य-रूपी राणा के उदय होने पर अन्धकार रूपी शत्रु समूह नष्ट होगया।

... भंजि मला तिन जुद्ध, गाहि नाणो है पायं।
देशपति गढ़पत्ति, पृथ्वी सह लग्गी पायं॥
तीस सहस असवार, पूर पंदल अप्पारं।
चित्रकोट दिस चलिय, सज्जि मयया घनसारं॥
कुंअरन पंति बहु भंति बनि, खहन खेह अरि खुंदि खरि।
संग्राम सुतन कविराय मनि, छत्र चँवर सोभाय सिरि॥२६॥

अर्थः—माहोली के युद्ध के पश्चात् राणा उदयसिंह ने ताणा नामक स्थान पर आक्रमण किया और वनवीर के पक्ष के मला नामक सांखले क्षत्रिय को नष्ट कर उस स्थान को अश्व खुरों से कुचलवा दिया। यह देख कर सब देशाधिप और दुर्गाधिप महाराणा की सेवा में उपस्थित हो गए। तीस सहस्र अश्वारोही और असंख्य सेना लेकर महाराणा चित्तौड़ की ओर बढ़ा। उस समय महाराणा ऐसा लग रहा था, मानो उमड़ते हुए बादलों के साथ इन्द्र चल रहा हो। उसका मस्तक छत्र और चमर से शोभायमान था।

सजि आयो रवि रान, गयो बनवीर उतरि गडि ।
अवधिपुरी अवधेश, विजै यम उरध तखत मँडि ॥
गरज घूमरि निस्सान, हाट वाटिय सिंगारे ।
पोरि-पोरि तोरन कलस्स, विविध विधु वसन सँवारे ॥
जप हेम पुन्नि मोहो दान बहु, कवि सज्जन मोटे करिय ।
संग्राम सुतन कविराय भनि, उदयसिंह चित्रँग वरिय ॥२०॥

अर्थ:—सूर्यरूपी महाराणा उदयसिंह सज कर चित्तौड़ आया। यह सुन बनवीर चित्तौड़ दुर्ग को छोड़ कर चला गया जिस प्रकार वनवास से लौट कर रामचन्द्र अयोध्या में सुशोभित हुए उसी प्रकार महाराणा विजय के पश्चात् ऊँचे सिंहासन पर सुशोभित हुआ। घुमड़ २ कर नक्कारे बजने लगे। बाजार सजाये गये। प्रत्येक द्वार रंग बिरंगे तोरण, कलश और वस्त्रों से सजाया गया। जपादि किया गया और स्वर्णादि के दान से कवियों और योग्य पुरुषों को सम्मानित किया गया।

राय कवि कहता है:—कि इस प्रकार राणा सांगा के पुत्र उदयसिंह ने चित्तौड़ पर अधिकार कर लिया।

गंजि वीर बनवीर, मीर मीरां सां सज्जिय ।
चन्देरी, जालोर, मीर चम्पागढ़ सधिय ॥
रिनथंभोर अजेर, मेर सेवे गज्ज बंधिय ।
....
मनिराय रान संग्राम सुव, खग्ग पान असुरान दवि ।
उग्गयो चित्र शिर छत्रपति, उदयसिंह हिंदवान रवि ॥२१॥

अर्थ:—बनवीर का दमन कर उसने मीरों पर आक्रमण किया। चन्देरी, जालोर, सिवाणा, चम्पागढ़ और रणथंभोर को भी अधिकार में

ले लिया। कितने ही गजाधिप राजा उसकी सेवा करने लगे।

राय कवि कहता है-"कि सांगा के वीर पुत्र ने अपनी तलवार के बल से कितने ही यवनों को दबाया। वह हिन्दू-सूर्य महाराणा चित्तौड़ पर उदय होकर छत्रपति राजाओं के मस्तकों पर तपने लगा।

वीरमदेव मेड़तिया

कवित्त [छप्पय]

पर नारी, परमुख, पूठि नहँ दियें परघड़।
गोत गुआल मुआल, नड़ै पर राठा अन्नड़॥
निले नखत्र अमीछ, गात जहि छत्र प्रमाणे।
जैत सवारि संसारि, हेक पगड़ी हिँदुआणे॥
सक पाघ कमलि जे सज्जसी, मूछ अनंमी मुख कमलि।
अणभंग वीर दूदंग रुद, मुणस हेक मारू मँडलि॥१॥

अर्थः—वीरमदेव, पर स्त्री पर कुदृष्टि नहीं डालने वाला, विपक्षी सेना को पीठ नहीं दिखाने वाला, स्व-गोत्रीय वीरों का रक्षक, किसी के सामने न झुकने वाला, दूसरों को झुकाने में समर्थ, क्षत्रियों में प्रचंड-काय, कुक्षत्रिय को ग्रसने वाला, विश्व विजयी, भारतवर्ष का ताज, वीरों (या यवनों) पर युद्धार्थ पगड़ी बाँधने वाला और अपने मुख कमल पर ऊँची मूछें रखने वाला वह वीर दूदा का पुत्र राठौड़ वीरमदेव, मरु प्रदेश में अभंग वीर कहा जाता था

धर मारू धीरवण, धरा रखपाल धणी धर।
जिण कदम काढिया, धरा ग्रासिया जसघर॥

पंचायरा जैसिंग, मोज गंगेव महाभड़।
रहे प्राण पतिवारा, चांभ नह लई करे चड़॥
गंगेव चाडि सोभजगिगढ, ग्रहे जेणि वलि उग्रहे।
मेलनां संधि असंधी मने, वीरन कीजै ऊग्रहे॥२॥

अर्थ:—वीरमदेव मरु प्रदेश को धैर्य देने वाला तथा उसका रक्षक एवं स्वामी था। उस यश धारी वीर ने शत्रुरूपी कीचड़ में फँसे हुए महान वीर पंचायण, जयसिंह, भोजा एवं गांगा जैसे वीरों की रक्षा की। जब तक वह प्रतिज्ञापालक वीर जीवित रहा, तब तक उसके भू-भाग में से कोई भी नाम मात्र की भूमि भी उसे छेड़कर प्राप्त नहीं कर सका। उसने पकड़े (उसे) गए गांगा को बचाकर सोजत के दुर्ग पर चढ़ा (स्थापित कर) दिया। जो उससे मित्रता रखता, उससे वह संधि रखता और जो विरुद्ध रहता, उससे युद्ध के लिए तत्पर रहता था।

जाइ झूंवे देहुरी, वैर तेजल कछवाहां।
लाए हत्य समत्य, ठाल सोजे गम टाहां॥
जड़ मुज्जड़ उज्जड़े, मारि धारां मीजोड़े।
जालवी हेक जम रूपे, तणा जस विर्चा ग्रोड़े॥
वालिये वंस पर हँस विढिल, हणे किये उग्राहणे।
अँजमियाँ वीर दूदंग रुढ, वैरी धाहा रण वणे॥३॥

अर्थ—कछवाहा तेजल से बदला लेने के लिए वीरमदेव ने देहुरी स्थान को घेर लिया और निश्चित युद्ध-स्थल में अपने हाथों को आजमाया। कटार एवं तलवार की धार से धार मिलाते हुए प्रहार कर शत्रुओं को समाप्त करने लगा। उसने प्रबंधी तेजल का वीर समूह के

मध्य नाश किया। वह अपने परिवार को बसाने वाला और विपक्षियों का प्राण-नाशक था। उसने कितने ही शत्रुओं को मारा और कितने ही को पकड़ लिया। इस प्रकार शत्रुओं पर (दूदा का पुत्र) आतंक फैलाता हुआ वह गौरवान्वित हुआ।

अहमँद वीसल नयरि, खड़े गा आहत राणा।
मारु सिरि मेवाड़, फौज निहसे सुरताणा॥
पछे जाइ सीकरी, पूर रण खेति पइट्ठौ।
घाए मुगलह घड़ा, निजहि वाजियो नत्रिट्ठौ॥
साकड़ै पैसिओ हरस ह्वै, सहि लोहां मग संचरण।
दोय वार किया दूदंग रुह, वीरे परव्वाडा विढण॥४॥

अर्थः—मेवाड़-मुकुट महाराणा सांगा ने अहमदनगर तथा वीसलनगर (गुजरात) पर आक्रमण किया। उस समय मरुप्रदेश-मुकुट, वीरमदेव ने उनके पक्ष में आ गुर्जर देशीय शाही सेना का विध्वंस कर दिया और सीकरी के (सांगा और बाबर के) युद्ध में सम्मिलित हो मुग़ल सेना को मारा तथा क्षत्रियों में निर्भीक नेता कहलाया। इस प्रकार दूदा के सुपुत्र वीरनाशक वीरमदेव ने राणा की आपत्ति के समय में दो बार सहर्ष सम्मिलित होकर शस्त्राघात सहे और प्रचण्ड शत्रुओं को काट दिया।

पालग पांचां छठौ, प्रजा अनियँ सद पात्रां।
लंकेपुर अहंकारि, साल मोटां हीं सत्रां॥
डंड डोर अधिकार, छुया जीणा जै नांही।
पर नारी पर द्रव्य, पाप लीयै नहं कांही॥
मार गँ सुत सिव मेड़तै, कोइ न अज्जा जति करै।
ऊजलै मांम लागै नहीं, वारै वीर नरिंद रै॥५॥

अर्थ:—वीरमदेव, प्रजा, सेना और पात्र पुरुषों (श्रेष्ठ कवियों) का पोषण करने में पाण्डवों का छठा बन्धु, (कर्ण), अभिमान में लंकाधिपति (रावण) तथा शत्रुओं के लिए, नाटशाल्य तुल्य था। अकारण दंड नहीं देता था उसमें बुरे विचार और स्वार्थ-तृष्णा का अभाव था। उसने परस्त्री और पर द्रव्य को कभी स्पर्श तक नहीं किया। वह मेड़ते का सिंह-रूपी वीर शत्रुरूपी हाथियों को मारने वाला था। उसके भू-भाग में बकरी तुल्य शत्रु तो आकर ठहरते ही नहीं थे। उसके शासन में निष्कलंकियों को कलंक ने कभी स्पर्श नहीं किया।

भुंइं आपरी वसावि, करी भुंइं साव पराई।
तजे प्राण परपंच, जोर मच्छर थँग लाई॥
मेलि मांघि म उखेलि, अत्ति दुरमति म चालवि।
वात प्रधान न मांनि, जपे के वासर जालवि॥
पाधरां सरिस वांकी पड़ै, अवले दोहाड़े असुर।
समसेरमलिक ग्रह फेर कोइ, जेणि विचर्ष्यै वीर गुर॥ ६॥

अर्थ:—उस वीर (वीरमदेव) ने दूसरों के भू-भाग को अपने आधीन कर अपनी भूमि बसाई। उसने बल और मस्ती प्रकट की, परन्तु प्रपंच को कभी मन में स्थान नहीं दिया। उसने शमशेर मलिक से कहलाया "कि तू! संधि को मेटकर दुर्बुद्धि की ओर कदम मत रख। तू! अपने प्रधान वीरों के कथनानुसार कपट करता है, परन्तु तेरा यह दुष्ट कपट कब तक चलेगा? हे यवन! निष्कपट वीर (वीरमदेव) से टेढ़ी चाल चलना ही स्पष्ट बता रहा है कि तेरे उलटे दिन आ गए हैं। तू! उस महान वीर वीरमदेव द्वारा पुनः विविध ग्रह-चक्रों में पड़ने वाला है।

इंधाणै थापियौ, जागि सुरताणि वहादुरि।
मं वीदौ झल्लियौ, मही दीठौ मीरं वरि॥

मी सारे अजमेर, सीम नीमां पतसाही।
मागू तेती भोमि, जिती मल्लू उकराही ॥
हींदवां तणा तुरकां हियैं, अवढ़ो परिहँस न जरै।
छांडोक वसी मांडौक जुध, इम समसेर उचरै ॥७॥

अर्थः—शमशेर मलिकने इस प्रकार का सदेश प्राप्त कर मल्लूखान से कहाः—कि मैंने यत्र तत्र थाने स्थापित किए हैं, यह बात बहादुरशाह कोविदित है। मैंने जिस कार्य को करने के लिए अच्छे २ मीरों के सम्मुख बीड़ा (ताम्बूल) हाथ मे लिया, उसे सत्य सिद्ध कर बताया। मेरे ही कारण शाही भू-भाग और अजमेर का राज्य सुरक्षित है। मैंने जिससे जितनी भूमि लेनी चाही, उतनी ले ही ली। हम मुसलमान हिन्दुओं द्वारा किए गए उपहास को कैसे सहन कर सकते हैं? हिन्दू वीर (वीरम) या तो अपना भू-भाग छोड़ दे अथवा मुझ से युद्ध करें।

सिरियाखांन सपेखि, खान मल्लू उच्चारै।
पाछे आखी पूछि, जिको आमियौ पमारे ॥
राउत पंचाइयँण, अनै वेणो वातोड़े।
वीतो वैराइये, जिको रूठे राठोड़े ॥
चाटसू कोट मांहे थकां, माफी सरवण मारणा।
समसेर मलिक अजमेरगढ, दूजण साल अचारणा ॥८॥

अर्थः—मल्लूखान ने कहाः—राठौड़ वीरों के क्रुद्ध होने पर सिरियाखान पर जो बीती, वह जानते ही हो, उसके बाद अजय प्रमार से पूछें कि उसमें विशेषकर उनसे कैसा फल पाया? रावत पंचायण एवं वैणे की बात का भी स्मरण रख कि उन दोनों पर कैसी बीती? चाटसू जैसे दुर्ग में सुरक्षित रहते हुए भी जिन्होंने (राठौड़ोंने) वहाँ के

प्रमुख वीर सरवण को मार दिया था। इसलिए हे शमशेर मलिक तुम्हें मेरा यही कहना है कि जो वीर नाहरशल्य तुल्य हैं, वे अजमेर दुर्ग का भी उद्धार करेंगे (अजमेर पर अधिकार करके ही रहेंगे)।

मैं खिरवै रण खेति, महाभड डूंगो मारे।
वसही ईसरदास, लूसि सरवस्स लिवारे॥
वाघी तोडडियाह, फाटि गमियाँ हड्वारे।
चहुआंणा वधणाँरि, हत्थ दक्खिणे कारे॥
हरमोरि थट्ट गज घट्टले, हूं आवै चढियाँ हियै।
समसेर कहै हीँदू सु कुण, जिण मोस जुध मंडियै॥६॥

अर्थः—शमशेरखां ने कहा:—"मैंने खरवा के रणक्षेत्र में वीर डूंगा को मारा, ईश्वरदास की लूमी नामक वसही (स्थान) का सर्वस्व लूट लिया। अभी तोडडियावास नामक स्थान वाले वाघसिंह को स्थान-च्युत कर नष्ट कर दिया और वदनौर के चाहूवानों पर वार किए। अब मैं हरमोरी नामक स्थान पर घन-घटा तुल्य हाथी और सेना लेकर (उनकी) छाती पर आ धमका हूँ, देखें, हिन्दू वीर कौन है जो मुझ से युद्ध छेड़े।

तो आयै हरमोरि, वीर अण विदियै रहियाँ।
पर कावलि पारवेध, वोल एतों सां महियाँ॥
तिणि कारणि गरवियाँ, गिणै मांटै क्यां नाहीं।
मारै पहार, मोल, मलिक थोड़ा दिन मांही।
पहिलो कै फेरै पातां, थाल्हणियाणी आइयाँ।
समसेर मार सेंगावियें, वलिनि तार वधवाइयाँ॥१०॥

अर्थः—मल्लू खां ने कहा:—"वीरमदेव ने तेरे द्वारा हरसोरी पर आक्रमण करने पर भी शस्त्राघात नहीं किया और तेरे कटु वचन भी सहे, वह इसलिए कि इधर मुसलमान सैनिक उससे विरुद्ध हैं और नगर गृह कलह मचा हुआ है [मालदेव विरुद्ध है]। हे शमशेर खां! इसलिए तू गर्व करता है, परन्तु शेष बचे हुए अपने वीरों की ओर देख! हमने अब तक तेरे कितने सैनिकों का संहार किया है। विश्वास रख, शेष रहे यवन योद्धा भी उसके द्वारा समाप्त हो जायेंगे। तू प्रथम युद्ध के भरोसे भूल कर आजलियावास तक आगे बढ़ आया है, परन्तु उसके साथ शस्त्र झड़ी की, तो वह छेड़ा हुआ, तारागढ़ पर अधिकार करके ही रहेगा।

जौं अहि हुअै सविसव, गरुड़ आगलि बल छंडै।
जे सिंधुर मयमत्त, तोइ सादूल विहंडै॥
सेंहस बल सादूल, सुरभि सोई साभिज्जै।
जौ जल वहल समंद्र, अगथि आचमन किज्जै॥
वाचियै वडा वडी वसुह, वीरा तस ऊमडा अवहि।
समसेर मालक जोधा सरिस, गरव म करि पाधरे ग्रहि॥११॥

अर्थः—सर्प विषधर होते हुए भी गरुड़ के सम्मुख अशक्त है, गौएँ हाथी मद-मस्त होते हुए भी सिंह द्वारा मृत्यु प्राप्त करता है। गौएँ शत संख्या में एक मत होकर सिंह के समाने लड़ने के लिए तत्पर हों, तो भी सिंह महत्त्व गुना उनसे शक्तिशाली माना जाता है, समुद्र विशेष जल-सम्पन्न होते हुए भी अगस्त्य द्वारा शोषित किया गया। अतः हे मलिक शमशेर खां! तू पुनः बड़े भू-भाग का स्वामी बड़ा होता है, अतः उससे सामना नहीं करना चाहिए और विरला के जोश में आकर मन्मत्त हो बढ़ना नहीं चाहिए। वीरमदेव महान योद्धा है, उसके सामने अभिमान न करके सरल रहना ही श्रेष्ठ है।

रहे नहीं समसेर, पालि जीयौ परधाने।
लिये घणे झूझणे, रोद्र सेने असमाने॥
चृन पठांण जुआंण, मीर वच्चे गह मत्ते।
बाण सैंधाण कमाँण, दूण घत्त आवरत्ते॥
अजमेर हूँन पीसांगणणि, है थट ले चढियौ हियैं।
पाड़ी वीर प्रवाड़ मल, पारंभ गुरते पल्लियैं॥१२॥

अर्थ.—मलिक शमशेर ने प्रधान [मल्लू खान] से कहा—"मैं प्राण बचाकर रहने वाला नहीं हूँ। यह कह कर उसने विशेष मतवाले योद्धा एवं सेना साथ ली, उसमें चिश्ती (पीर) पठान और मीर वच्चे (मीरखान दान के) अच्छे तीरन्दाज और लगातार शस्त्राघात करने वाले (सैनिक) थे। इस प्रकार वह मलिक शमशेर अश्वारोही सैन्य-समूह लेकर मन्त्र महाधिधारी वीरमदेव को नष्ट करने के लिए अजमेर से पीसांगण स्थान पर आ पहुँचा।

गज घट्टा ऊमटी, जांणि घण सामण कंठलि।
लोहेलों ट्रामणी, कलह मत्त दूतक्कलि॥
आग्गि अग्नियामणी, नालि गोलों हव्वाई।
रचियै रूप रउद्र, हमे आडंबरि आई॥
कादरे नहीं जिम काटर्ग, हाहारव पड़े दियौ।
आंगमें खान यारह अमँग, वीर विढण घर सोहियो॥१३॥

अर्थः— उसकी गज-सेना में श्रावण मास की काली घनघटा, युद्ध में मतवाले वीरों के चमचमाते शस्त्रों में बिजली और हवा में फैलता हुई तुरकों और तोपों की आवाज में मेघ गर्जना का आभास होता था। इस प्रकार आडंबर पूर्वक यह यवन (मलिक शमशेर)

आया। जिसे देखकर अभंग वीर वीरम देव कायरों की तरह भयभीत नहीं हुआ उसने मरना और मारना निश्चय कर द्वादश भान बहादुरों ने युद्ध करना स्वीकार किया और हृदय विदीर्ण होने जैसी हुँकार की।

गड़मल्ल जसवंत, वीर बोलावे वीरे।
एक लक्खआगमे, जिसो लाखां मुँह धीरे ॥
मही कोट चाटमू, जेणि सरवण संघारे।
जिणि अजमेरे थाट, नीर मागीर उतारे ॥
आसाड़-सिध्ध प्रव्हाड़-मल, खत्र अखुटित जे खवे।
तो जिसे तु ंग दूदे-तणा, रणजी वीजे ववे ॥१४॥

अर्थः—लाखों के समक्ष धैर्य धारण कर उनसे युद्ध करने वाले राय मल्ल और जसवन्त जैसे वीर साथियों को वीरम देव ने युद्धार्थ बुलवाया, जिस वीरमदेव ने चाटमू दुर्ग में सरवण का संहार किया, अजमेर के युद्ध में शत्रु-समूह को कान्ति हीन कर दिया, जिसके वंश विरुद आसाड़ सिद्ध और मल्ल उपाधि धारी थे तथा जिनके कंधों पर अक्षुण्ण क्षात्रवट स्थित था उसी दूदा का सैन्य समूह ही युद्ध में विजय प्राप्त कर अपने स्वामी के सिर पर सेहरा बंधवा, देता था।

थिर्यागत्र जैमाल, बाघ वीरगुर छाया।
हायल पंचाइयण, अरी थट्टां आंद्राया ॥
कूँत दंत पेलता, सार नहरां विहरंता।
मेद्ध दलां मंगलां, गोम सुष्धा आंकुड़ता ॥
पंच पुत्र रुत्ख भृखालुवा, हावैंता दूदा हरा।
ऊठिया बाप जामल अभैंग, सात्रत्र सींघल दीपरा ॥१५॥

अर्थः—वीरमदेव के तीनों पुत्र-पृथ्वीराज, जयमल और वाघसिंह क्षुधित सिंह-शावक के समान थे। शत्रुओं को नष्ट करने के लिए वैसे ही उनके कराघात होते थे। सिंह के दाँतों के समान भाले और सिंह के नख तुल्य जिनके शस्त्र थे। ऐसे शस्त्रों द्वारा हाथियों के समान यवन-शत्रुओं को क्रोध में आ, झपट कर विदीर्ण कर देते थे। एक ही पिता (वीरमदेव) के पुत्र, दूदा के पौत्र अभंग वीरों ने युद्ध करना स्वीकार किया और इस प्रकार खड़े हो गए, मानो सिंहल (लंका) द्वीप के साक्षात योद्धा हों

दूजणसल वरसिंघ,जोध रिणमाल चवंडा।
जैतमाल जादव्व, दलां मुँह राउत वड्डा॥
सीसोदा मछरीक, हुल्ल सिंघल पीपाड़ा।
सोलंकी सांखुला, खत्री खीची ऊघाड़ा॥
गहिलोत टांक राउत सगह, सत्रि आगलि ऊतारिया।
वीर गुरि सत्थ भारत्थ कजि, वेलीया पूकारिया॥१६॥

अर्थः वीरमदेव ने अपने साथी, सम्बन्धी दुर्जनसाल, वरसिंह, जोधा और रणमाल चावड़ा, सेना के अग्रभाग में रहकर युद्ध में लड़ने वाले रावत जैत्रसिंह एवं रावत मालदेव यादव, मस्ताने वीर शिशोदिया, हूल, सिंहल, पीपाड़ा, सीना तान कर लड़ने वाले सोलंकी, सांखुले, खीची, युद्ध के लिए आतुर गुहिलोत और टाँक आदि राज वंशीय सहायतार्थ बुलवाए।

गेरा कसायें नयण, किये माजीठ कंमल।
ऊमगियं पारिस्स, थियो दीठे मेछदल॥
नीमजिये भुयडंड, जिगा भीमेण अरिज्जण।
योहट्टण अरि सेन, दूद संभम दूसासण॥

मांडिया बोल जीवण मरण, सिरजणहार असारि सांह ।
पैठौ वलैठ परिगह सगह, कमघज्ज वीरमदे कलहि ॥१७॥

अर्थः—उस समय द्वितीय दूदा के समान वीरमदेव के क्रोध पूर्ण नेत्र अरुण कमल के समान दिखाई देते थे। उनका पौरुष यवन सेना को सामने देखकर और भी उमड़ पड़ता था उनकी भुजाएँ भीम और अर्जुन की भुजाओं के समान वन्दनीय थीं यह शत्रु सेना से भिड़ते समय दुःशासन का भ्रम करा देता था। उसने युद्ध के समय अपने साथियों से कहा—"कि स्रष्टा ने जीवन और मरण को निस्सार कहा है" (क्यों कि आत्मा अमर है)। यह कह कर वह बलवान राठौड़ वीर अपने कुटुम्बियों और सम्बन्धियों सहित युद्ध क्षेत्र में प्रविष्ट हुआ।

लागै वंन पवंन, जाणि मंगल प्राजलियाँ ।
होहू मेह अछेह, सीत काळै साळळियाँ ॥
वळे त्रँपण वामणाँ, अंगि वाधियाँ अनिमंवाँ ।
क्रमां त्रिहूँ घर करे, सीसि परठवे अरघ्याँ ॥
ऊलटी सार लहरी ऊ अह, किलवां जल बोलह करण ।
निहँसियाँ वीर रूपे इसे, समसेरां घड़ संवरण ॥१८॥

वीरमदेव मलिक शमशेर की सेना को नष्ट करने के लिए इस प्रकार बढ़ा, मानो पवन का आश्रय पाकर वन में अग्नि प्रज्वलित हो गई हो, अथवा शीतकाल में कम्प वृद्धि करने वाली वर्षा हुई हो, या अनुमान से परे कोई घटना घटित हुई हो, जैसेः—भगवान वामन ने तीन डग भर कर पृथ्वी और आधे डग से बलि को घर दबाया हो, अथवा यवनों को डुबो देने के लिए शस्त्ररूपी जल की अपार तरंगें उमड़ पड़ी हों।

ताप कोप वह तपे, वाउ मौं त्रीठ विवज्जै ।
नद सद नीसांण, गोड़ि वह रोड़ि गरज्जै ॥
दल बादल भय भजे, वेग तेगां संवारव, ।
भड़ां घड़ां ओवड़े, धार धौली धारारव ॥
रिण रत्त नीर दड़ड़ै रिड़ै, सालुलि मिलि सम्मां समां ।
पावस्स वीर विपरीत परि, रुठ वुठ माथे रिमां ॥१६॥

अर्थः—वीरमदेव, यवन शत्रुओं पर दुम्बद वर्षा के रूप में उमड़ पड़ा, उसका प्रताप और कोप ही गर्मी, भय ही भयानक पवन, नक्कारे और तुरकों की ध्वनि ही मेघ गर्जना, सेना ही बादल, चम चमाती, सन सनाती तथा सवेग पड़ती हुई तलवारें ही बिजली, वीरों का भिड़ना ही घन-घटा का टकराना, खड्ग की उज्वल धारें ही वारि धारा और युद्ध भूमि में रक्त का प्रवाहित होना ही जल का बरस कर एकत्रित होना था ।

घाउ निहाउ स वाउ, छंट वट्टां सूरत्रणि ।
धार नीर संधीर, छेद भेदतो रणंगणि ॥
रेल सेल ऊमेल, खाल् रुहिराल प्रवाहे ।
ज प खव्ब ऊतरे, अनड़ भड़ सींघ थनाहै ॥
द मगळ मेलि कंठल दुझळ, घड़ा प्रघड़ गे घूंघियाँ ।
आवरत वीर सिरि आसुरां, लोह मेह रिण लूंबियाँ ॥२०॥

अर्थः—जिस समय मेघरूपी वीरमदेव यवनों पर लोह (शस्त्र) वर्षा करने के लिए बढ़ा, उस समय समस्त सेनाओं का मिलना ही बादलों की छोटी २ टुकड़ियों का मिलना, झूमती हुई गज सेना ही समूह बद्ध हुई भयंकर घटा, भयानक शस्त्राघात ही पवन युद्ध को पार

..ने वाले वीर ही नौका, खड्ग धार ही जल धारा, युद्ध में उसके वीरम) द्वारा विदीर्ण एवं खण्ड न किए जाने वाले धैर्यवान वीर ही, ..और मांसों के चलने पर रक्त का छलक कर प्रवाहित होना ही ..प्रवाह था। उस प्रवाहित रक्त-वारि में शत्रु (यवन) प्रवेश कर डूबने के भय से) बाहर निकलना चाहते थे, परन्तु न झुकने वाले .. ही उस में स्नान करते थे।

इक नेलां देलियां, टगां मागं दोवासूं।
खंड विहँड़ वेरुएड, किया यागंमो काम ॥
घड़ वेढड फड़ हुआ, हेक लोटै रण अंगणि।
हेक मगांम त्रंमिया, किरीं ग्रीणै आरंणि॥
बिच्छुड़े हेक हूँता गड़ां, एक उनोई ऊतरै।
समसेर मत्य हत्या समय, वीर इसौ कौतक करै ॥२१॥

अर्थः—वीरमदेव के बलवान हाथों ने मलिक शमशेर के साथियों पर आश्चर्य जनक कौतुक किया, उसका भाला शत्रुओं के वक्षस्थलों को वेध कर पार होने लगा, उसके खड्ग द्वारा किसी के रुण्ड के दो टुकड़े हो गए, किसी के अंग के खड़े दो भाग हो गए, कोई रणाङ्गण में गिर कर तड़फड़ाने लगा, कोई मर कर समाप्त हो गया, किसी को गिद्धनियाँ नोचने लगीं, किसी का मुण्ड कटकर रुण्ड से अलग हो गया, किसी का अंग कंधे से लेकर कमर तक तिरछा कट गया।

मांजि जोर समसेर, सोर अजमेर करावे।
मिश ग्रीध मैंमलिका, गृद्धवस मांस गिलावे॥
वीर अकल वैताल, मक्कल पोखे मंतोके।
हरखे हींदुकार, मने नाईमा दोखे॥

खल खट्ट थट्ट दह वट किया, घाय हणे दूजण घड़ा ।
पाथरा चोरि कीधा प्रिसण, वहता विरदज वंकुड़ा ॥२२॥

अर्थ—इस प्रकार वीरमदेव ने मलिक शमशेर की शक्ति को नष्ट कर अपनी विजय की आवाज़ अजमेर में फैला दो। रणाङ्गण में गीदड़, गिद्धनियां और चीलें तृप्त हो गईं। बावन ही वीर, यक्ष, वैतालादि को. भक्ष्य पदार्थ देकर तृप्त कर दिया। हिन्दू इस युद्ध विजय से प्रसन्न हुए और यवन दुखित कहलाए। वीरमदेव ने छः प्रमुख सैनिकों को मार कर शत्रु-समूह को यत्र तत्र कर दिया और जो प्रमुख यवन यशस्वी थे, उन्हें मारा कर दिया।

नीर तीर उतारि, फौज गूजर फोड़ ते ।
मारु खड प्रचंड, सिधा चाढी मेड़ते ॥
ओधि जोध कमधज्ज, मींग वधिया राठौड़ां ।
मन मेला पाखिलां, मंत्र टलिया मुह जोड़ां ॥
सुरताण घड़ा माण मले, दल मेछ दल अक्कला ।
माल हरे जैत विरंम हर, आज वीरि सहि उज्जला ॥२३॥

मम मिहा के वंशज (वीरम) ने गुर्जरी सेना को वेध कर कांति हीन कर दिया और मरु प्रदेश तथा मेड़ता स्थान को कान्ति युक्त बना दिया। जोधा के वंश में उत्पन्न होने वाले राठौड़ ने अपने सगोत्रीय वीरों को शृङ्गवान (शक्ति शाली) बना दिया। वह मित्रों के लिये पक्ष में (पंख) स्वरूप था। उसने वाद-विवाद करने वालों (यवनों) की मंत्रणा भंग करदी। न फंसने वाले यवन वीरों को युद्ध रूपी दल २ में फँसाकर शाही सेना का मान मर्दन कर दिया। केवल मात्र वस वीरमदेव के कारण माला, जैतमाल और वीरमदेव के वंशज, जितने भी राठौर वीर हैं, सब उज्वल हो गए।

अजे ढोल धड़ हड़ै, अजे पुड़ पखि प्रयासै ।
अजे हक्क।भड़ हुवै,मेछ-सिरि जाघू वासै ॥
अजे रुएड रड़वड़े, चंच गातलां चड़क्कै ।
आगै यखि आरिखल,कलल कधार कड़क्कै ॥
वीरंम जतै विहँडे विचित्र चरि महारण चाचरै ।
लिणि खेति तरसि वीरा रसहि, अजेस वीर अवसरै ॥२४॥

अर्थः—वीरमदेव ने ऐसा युद्ध किया कि उस स्थान पर जाने से ऐसा प्रतीत होता है मानों आज भी रण वाद्य बज रहे हैं। गिद्धादि पक्षी आकाश में पंख फैला कर आमिष के लिए चक्कर लगा रहे हैं। वीरों की हुँकारें हो रही हैं, मुसलमानों की खोपड़ियों को गीदड़ दबा रहे हैं। नर रुण्ड झूमते हुए फिर रहे हैं, गिद्धनियाँ चोंचें मार रही हैं। वीरों के कंधे कड़ २ करते हुए टूट रहे हैं और मस्तक चूर २ हो रहे हैं। वीर रस के प्यासे वीर शत्रुओं पर दाव लगा रहे हैं।

वेद नाद जय सद, जैत वाजित्र महोच्छव ।
धमल मँगल आणंद,सधर जोधां घरि उच्छव॥
वर तरुणि सर नद, चौक पूरै चंदाननि ।
आरत्ती उत्तार ओप, मजगी सेआननि ॥
अग जीत गजि ग्रिहि आवियो, औ हारे मारे असुर ।
जसवंत कंत सीलंमती, वाधाविज्जै वीर गुर ॥२५॥

अर्थः—वेद-ध्वनि के साथ २ जय जय कार और विजयोत्सव के बाजे बजने लगे। मंगल गान के साथ २ जोधा के वंशज (वीरम) के भू-भाग एवं घर में उत्सव मनाया जाने लगा। चंद्रमुखी श्रेष्ठ युवतियाँ आँगन को चित्रित करती हुई गीत गाने लगीं। सभी सयानी युवतियाँ,

मिलकर वीरम की आरती उतारने लगीं। उस विजयी वीर, ने मलिक शमशेर को दबाया तथा यवनों का संहार कर महल में प्रवेश किया, उस समय रानी शीलवती ने अपने यश-धारी पति वीरम का उपर्युक्त ढंग से स्वागत किया।

कर्मसी एवं सांवलदास चाहुवान

कवित्त (छप्पय)

आदि आदि जुगादि, वाद वेरां वड-वड्डां।
नरां सुरां आसुरां, परां पूरां परचंडां॥
वसुधा काजि आवटे, वहे वहि वागे वारी।
केता कोडी गने, कंत वेढिया कुमारी॥
मोटा ही चकवे मंडली, मेरी मेरी कहे मुखी।
धर मेल्हि मरेगा धरपती, साथि न चाली कह मुखी॥ १॥

अर्थः—आदि काल से बड़ों २ में युद्ध-विवाद होता आया है। बलवान नर, सुर और असुरों में भी यह परम्परा चली रही है। समय २ पर वे सब पृथ्वी के लिए झगड़ते रहे हैं। असंख्य कोटि स्वामियों को इस कुमारी पृथ्वी ने मरवा दिया। बड़े २ चक्रवर्ती और मंडलेश्वर भी मेरी २ कहते हुए मर गए, परन्तु वे सब भूपति पृथ्वी को यहीं छोड़ कर चले गए। यह कभी किसी के साथ नहीं गई।

वेधा कारणि वेध, वधे भट-शीसां वंसां।
दातारां स्रिमां, रहे सोभाग सुणीसां॥
नहूं जुग लग नह आंग, मन पूरित मर्मासर।
गढ़ै गणे गढ़ पति, त्रिटै त्रिपना वीरव्वर॥

सातल्ल सोम हंमीरदे, कान्ह प्रिथीमल अकहकीय।
कुल तेणि उदे थ्या कुल तिलक, साँमलदास करं मसिय ॥२॥

अर्थ:—इस कलह कारिणी (पृथ्वी) के लिए छत्तीस वंश के क्षत्रिय बिंधकर मारे गए। धन-दातार और शूरवीरों का सौभाग्य है कि वे कवियों की जिह्वा से अमर होगए। इन में चाहुवान वंश चारों युगों तक समान रूप से सत्य का पालन करता रहा। वे सब श्रेष्ठ वीर दुर्गों के स्वामी थे और उनके वर्णन से स्पष्ट है कि वे दुर्गों के लिए ही मारे गए। जिनमें सातल, सोमदेव, हमीर, कान्हा और पृथ्वीमल के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। उन्होंने अकथनीय ख्याति प्राप्त की थी। उसी वंश में तिलक रूपी सामलदास और करमसी उत्पन्न हुए।

करमसीह आकास, कांधि कुल भार किया वर।
सूर सुतन सप्रमाण, जांण मूरति जोगेसर ॥
सांम लयइ संभ्रम, सोह साखां चौवीसां।
मोतीहार विचार, जस्स सिणगार जगीसां ॥
एकाह एक आगागला, असिमर ओडवण अरी।
चहुवांण थंभ वागड़ धरा, वागड़ चहुवांणां परी ॥ ३ ॥

अर्थ:—सूरसिंह का पुत्र (या पौत्र) आकाश से कंधा लगा कर कुल भार वहन करने वाला और शिव स्वरूप था। सामलदास भी चाहुवाणों की चौबीस ही शाखाओं की शोभा और शत्रुओं में भ्रान्ति फैलाने वाला था। जिनका यश मुक्ताहार के समान राजाओं का शृंगार स्वरूप था। दोनों एक से एक बढ़ कर वीर थे। जो अपने खड्ग के बल पर शत्रुओं को रोकने वाले थे। वे चाहुवाण वागड़ प्रदेश के स्तंभ थे। उन्हीं के सहारे वागड़ प्रदेश का स्थायित्व निर्भर था।

आहाड़ाँ आसह करन, पाटि राउल डुङ्गर पुर ।
वडा जेण वागिया, घड़ै चहुवांण राइ धुर ॥
वागड़ सिरि विसरियै, वयण मुख वंका वंचे ।
रेहल्लण रिम हरां, रांणि इम आरँभ रच्चे ॥
परधान मेल्हि चित्रोड़ पति, डुङ्गर पुरां स दक्खियौ ।
मांगिया उदैसिंघ मछरियै, दियौ डंड घोड़ा दियौ ॥ ४ ॥

अर्थः—उस समय रावल आसकर्ण आहड़ा डूंगरपुर के तख्त पर आसीन था। सभी अपने निश्चय के अनुसार यह अनुमान लगाते थे कि वागड़ प्रदेश के स्वामी का बड़प्पन (आडम्बर) चाहुवानों के कारण ही है। इसी लिए वागड़ प्रदेश (वहाँ का रावल) अपने शिरोमणि राणा को भूल सा गया और अंटशंट बातें करने लगा है। यह ज्ञात होने पर महाराणा ने उस विरोधी (रावल) को घसीट कर काबू में करने के लिए छेड़छाड़ प्रारम्भ की और अपने प्रधान को भेजकर डूंगरपुर नरेश को कहलाया कि महाराणा उदयसिंह मस्ती में आकर कहता है कि तुम दण्ड के अतिरिक्त घोड़े भी हमें भेंट करो।

मेवाड़ै मंगिया, पवँग कनला डुङ्गरपुर ।
सुणे बात चहुवांण, गेंगि हसिया राजे सर ॥
म्हें वागड़ मांगिया, भौमि वागड़ म्हां पूठी ।
ताइ मविता नैह टलै, परमि जाइ लेते परठी ॥
हुवैवि अंत उर अंतरै, मिरे डंड जाइ सो सहै ।
जीवियौ अजीवित तांहि जगि, करम सीह साँमल कहै ॥ ५ ॥

अर्थः—मेवाड़ेश्वर ने डूंगरपुर नरेश से घोड़े मांगे, यह बात सुनकर चाहुवान राजवंशी कर्मसिंह और सांवलदास क्रोध में आकर

...ते हुए कहने लगेः—"हम वागड़ प्रदेश के बहुत प्राचीन भू-स्वामी ... वागड़ का भू-भाग हमारी पीठ पर बँधा हुआ है। ऐसा होते हुए भी भविष्य अमिट है, ईश्वर ने जैसा लिखा होगा वैसा होकर रहेगा। मृत्यु को देख कर जो हृदय से दण्ड लेना स्वीकार करता है वह जीवित ही मृत - तुल्य माना जाता है।

मूध पाल रे वंश, वडिम ए परियां वड्डां।
पर देशे पर काज, परह पूरण परचंडां॥
परह भीड़ पैसंध, परह गड्डां पड़िगाहे।
पर दल जीपण पांणि, सुजस पर मूंगे साहे॥
घर मुद्धल कलह छल मछर घरि, वदिया चहुआणे विहद।
मरण मैं डंड माथै करे, मरद नहीं ताइ नामरद॥६॥

अर्थः—पुनः वे कहने लगेः—"हम मूधपाल वंशजों के पूर्वज बड़े से बड़े हो गए हैं जो दूसरे के देश में भी दूसरे की कार्य पूर्ति के लिए बलवान माने गए हैं, अन्य की आपत्ति में भाग लेते रहे, अन्य के दुर्गों को कुचलते रहे, अन्य की सेना पर विजय पाते रहे और अन्य की जवान से यश पाते रहे हैं। हम चाहुवान मतवाले और धरा तथा युद्ध क्षेत्र के रक्षक कहे जाते हैं। जो मृत्यु के भय से दण्ड देना स्वीकार करे वह पुरुषार्थी नहीं, अपितु पुरुषत्व हीन कहलाता है।

कांम्य राजा केथि, जीव जोखिम पैठां जलि।
केथि सोढ दहकंत, भले सिर रखे किरण भलि॥
कहो केथि वीकंम, आउ कज वाहस तक्के।
जुध जोड़े जयचंद, गंगश्री तहि डाबक्के॥
सुवपत्ति खोड़ि लागी मरां, जां जीवण कीधा जतन।
ऊजलो अंत करिसां अम्हें, करमसीह कहिया कथन॥७॥

अर्थः—करमसिंह कहने लगाः—"कौरव वंशी दुर्योधन कुछ नहीं है; जो जीवन को आपत्ति में आया देख कर जल में जा छिपा, दशकंध रावण भी कुछ नहीं है, जिसने जीवन-रक्षा के लिए आकाश स्थित सूर्य किरण में अपने को छिपा दिया, विक्रमादित्य भी कुछ नहीं है; जिस ने अपनी आयु-वृद्धि के लिए कौए का आमिष भक्षण किया था और कन्नौजेश्वर जयचन्द भी कुछ नहीं है, जो युद्ध में जुट कर प्राण रक्षा के लिए गंगा में प्रवेश कर गया। जिन राजाओं ने जिन्दा रहने का प्रयत्न किया वे युगों तक कलंकित कहलाए। इसलिये हम अपनी मृत्यु को पवित्र कहला कर ही रहेंगे।

जीवण पंचह दिवस, जाइ जल अंजलि जेही।
फिरै हेठ कालाम, तरसै (अ) ग्रासल तेही॥
यूटै दिन दिन तेय, आउ खण खण आवट्टै।
स्याम चिहुर पालटै, पीर जर सेत प्रगट्टै॥
कालिमा पिंड जतनह किसा, कथन मुलिख एरस कहै।
ऊदा रा प्रधानां आगली, सांमल डंड न सासहै॥ ८॥

अर्थः—महाराणा उदयसिंह के प्रधान के समक्ष प्रमुख वीर सामलदास कहने लगाः—"यह जीवन पाँच दिन का है; यह इस प्रकार व्यतीत होता रहता है जैसे अंजलि का जल शनैः शनैः निकलता जाता है। इन प्राणों का प्यासा काल, उन्हें छीनने की इच्छा से दृढ़तापूर्वक सामने फिरता रहता है। क्षण २ में आयु कम होती जाती है और शरीर पंच तत्व में मिल जाता है। श्याम चिहुर (बाल) रंग बदल कर वर्ष भर में ही श्वेत हो जाते हैं। इस कारण इस शरीर के लिए कालिमा लगाना वृथा है। इसलिए मैं दण्ड देना सहन नहीं कर सकता।

पग्धानां इम पुणै, गण आगलि वारता।
चाहुवांण कल्हहि गी, मागि सुरिज्ज परत्ता॥

उदैसिंह आरंभ, एम दल मेलि अचगल ।
हीलोहल हालिया, करे भाद्रव जल कंठल ॥
ओ कंधि आवि वागड़ इला, औथरिया अकलीमणा ।
सामला ऊठि अनमर सजै, तुगे सर अखई तणा ॥ ६ ॥

अर्थ:— महाराणा के प्रधान ने तब महाराणा को सूचित किया, कि वागड़ के चाहवान सूर्य को साक्षी कर युद्धार्थ तत्पर हैं। यह सुन महाराणा उदयसिंह ने भी अपनी अडिग सेना सजाई। वह सेना भाद्रपद की घटा के तुल्य वागड़ पर चढ़ाई करने के लिए बढ़ी, महाराणा के उन्मत्त सैनिक वागड़ प्रदेश को कुचलने के लिए कटिबद्ध हो गए। यह देखकर अखयसिंह के वंशज सामलदास ने उस सैन्य समूह पर तलवार उठाई।

पोकाग्र संभले, पूर पौरिस पहने ।
मोड़ि मूँछ ऊरच्छ, नयण किय चोल वरने ॥
भुजाडंड नीमजे, खग्ग ग्रहियै करग्गिहि ।
वधियो जाणि त्रिमंन, कर्मालिबलि दीधे पग्गिहि ॥
ऊठियौ ईसीपगि ऊससै, सीस उरस हिल्लाड़यौ ।
साथी स झूमके सांमनौं, अरिदल सांम्हौ आवियौ ॥१०॥

अर्थ:— ललकार सुनते ही सामलदास में पूर्ण वीरत्व छागया, उसने मूंछे मरोड़कर ऊपर उठाई, नेत्र अरूण हो गए और उसकी भुजाओं की वन्दना की जाने लगी। उसने तलवार पकड़ कर हिलाई और इस प्रकार बढ़ा मानो विष्णु, वामन रूप धारण कर राजा वलि के मस्तक पर पैर देने के लिए बढ़ा हो। जिस समय वह उछल कर खड़ा हुआ उस समय पृथ्वी सिर धुनने लगी। वह अपने लड़ाकू साथियों को ले विपक्षी-सेना के सामने चढ़ आया।

बोले बोल सतोल, ढोल वाजिया त्रिघाई।
वधे सुभट्टां वाद, साद सिंधू सहनाई॥
हींसारव हैमरां, क्रीम कुंजर मैमन्तां।
चढ़े कढ़े भूझार, धार अगार धिखन्तां॥
सांफलौ करेवा सांमलौ साथी सुहड़ सडंबरां।
नदीयां नीर पीवा न दूँ, रोहड़िया दल राण रा॥११॥

अर्थ:—सामलदास को युद्धार्थ दृढ़ प्रतिज्ञ देखकर जोरों से ढोल बजने लगे. वीरों में युद्ध विवाद छिड़ गया, शहनाई में सिन्धु राग बजने लगा. घोड़े हिनाने और मस्त हाथी चिंघाड़ने लगे। योद्धा खड्ग-धार से अंगारे बरसाते हुए एक दूसरे के पीछे पड़ गए। इस प्रकार साँवलदास आडम्बर धारी अपने वीर साथियों सहित आगे बढ़ा और महाराणा की सेना को रोकता हुआ कहने लगा। "नदी को पार करना तो कठिन है, किन्तु नदी का पानी भी विपक्षियों को नहीं पीने दूँगा।"

राण तणे राउते, कोष करि खग्ग उलग्गा।
हुए हकक फारक्क, वीर वीरां रस वग्गा॥
वधे दाम सग्राम, नेक वर वीर निहट्टा।
वढे घट्ट आघट्ट, धार धममट्ट पछट्टा॥
मरगड़ अमंघ संघी मरड़, फरड़ कंध केवाण के।
केवियां धाइ मिलते कियो, चकाबोह चहुवाण के॥१२॥

अर्थ:—महाराणा के रावत पदधारी वीरों ने भी अपनी म्यानों से तलवारें निकाली, उसी समय विद्रोहकारी हुंकार होने लगी। वीरों में वीर रस छा गया। युद्ध में एक दूसरे का सामना होते ही अच्छे२ वीर नष्ट होने लगे। धमाके के साथ खड्गाघात होने से कोपित शरीर कट

. पृथ्वी पर तड़ फड़ाने लगे। उस समय तलवार के बल पर दृढ़ स्कंध वाले चौहान वीर (सामलदास) नें बेजोड़ (दृढ) स्कंधधारी वीरों के कंधों को मरोड़ कर मिला दिया तथा भिड़ते ही चक्रव्यूह के समान दृश्य उपस्थितकर कितने ही वीरों को घायल कर दिया।

होड़ हाहंस हमस्स, मिलें झूझार धमस्स।
वाजि निहस वीर रस, लोह लूंचे पावस लस ॥
सौ चौवीसां सनस, जुड़ै मछरीक लिये जस।
सैंन तणा दश सहस, पड़े मड़ ऊलस पालस ॥
विच्छुड़ैं डळे ख मा सत्रस, धार सार वाजैं धमस।
काईर घणा छाडंत कस, कलहिं वधो सांमल सकम ॥१३॥

अर्थः--क्रुद्ध हो कर वीर शोरगुल मचाने लगे, टकराते हुए योद्धा एक दूसरे से जूझने लगे, वीर रस युक्त वाद्य जोर से बजने लगे लोह वर्षा से मेंह वर्षा का आभास होने लगा। चौबीस ही शाखा के मस्त (चाहुवान) युद्ध भूमि में यश पाने के लिए धराशायी हो लुढकने लगे, लोहधार की आवाज के साथ साथ शत्रु-सेना टुकड़े २ होकर दूर गिरने लगी। जिस समय सामलदास ने युद्धार्थ आगे बढ़कर शाका किया, उस समय समस्त कायर विरोध करना भूल गए।

डाइणि डक्क डहक्क, हक्क होए हलकारां।
वाजे धक्क भड़क्क, लंक त्रूटे झूझारां ॥
उरे कूंत खरड़क्क, सार झावक्क, सवक्कां।
फोफर फटिय सुयक्क, रकत ऊबके खलक्कां ॥
घर वंक वधे चहुवाण वँस, विढण वंक आंकह चलै।
सामळै सुहड़ सौ खंड किय, खलां सरे सारण खळै ॥१४॥

अर्थः—जिस समय सांमलदास के पक्ष के श्रेष्ठ और बांके चौहान युद्धार्थ चढ़े, उस समय डाइनी डमरू बजाने लगी, हलकारे वीरों को आगे बढ़ाने के लिए आवाज देने लगे, आतंक युक्त शस्त्र वर्षा होने लगी, वीर इस प्रकार टूट पड़े मानो लंका में होने वाले युद्ध में वीर टूटे हों। वीरों के वक्षस्थलों पर भाले टकराने लगे, शरीर पर लोहाग्नि चमकने लगी। फेफड़े फटने लगे, कल २ करता हुआ रक्त, प्रवाहित होने लगा। उनके द्वारा किए हुए एहसान में वृद्धि होने लगी, वीर सांवलदास ने विपक्षियों के सिर पर खड्ग प्रहार कर उनके टुकड़े २ कर दिए।

बोलवंता बरवंता, कोपवंता कलहंता।
जग जगा मुहि आवंता, हिये चढंतां हाकंतां॥

भद्रजाती भाजंतां, वाघ बीकता विढ़ंतां।
आहंगता ऊठंतां, सार घाहतां सहतां॥

जैचंद भाण चांपै जगौ, निग्रहि नीमणिया इतां।
तिणि ताळि चहूँ हाथी तणा, रूप वधे बड रावतां॥१५॥

अर्थः—वीर हाथीसिंह के वंशज जैचन्द, भाण, चाँपा और जगा चारों वचन पालन कर्त्ता, बलवान, क्रोधी, युद्धकर्त्ता, प्रत्येक मुख से यश प्राप्त कर्त्ता, ऊपर चढ़ आने वालों को भगा देने वाले, भद्र जाति हाथीयों को नष्ट करने वाले, सिंहों को ललकार कर मारने वाले और शस्त्र घात सहने वाले थे। जिन्होंने युद्ध करके निर्वाणपद प्राप्त किया और उन रावत पद धारी वीरों ने अपनी शोभा बढ़ाई।

कान्ह क ोधर कुँवर, पात अरि म्गग पहारां।
जोध कांध जू-जूआ, अणी धारां अणधारां॥

वेळे भड़ां वाढिया, करणफ हुई केकाणां ।
भांजि गूड़ गेमरां, मल्ल हत्यां चहुवांणां ॥
पच्छाड़ि पाड़ि पड़िया लगे, खंड विहंडे कीध खल ।
साथियां धंन सांमल तणा, सामल धंन सहस्स बल ॥१६॥

अर्थः—कान्ह की कला धारण करने वाला कुमार सामलदास शत्रुओं पर खड्गाघात करने लगा, जिससे यौद्धाओं के कंधों से मुण्ड दूर जा गिरे। खड्ग धार से अंगारे बरसने लगे। बहुत से वीरों को उसने मार दिया। उस समय घोड़े हिनहिनाने लगे। उसके साथी चौहान प्रशंसनीय हैं जिन्होंने हाथियों के समूहों को नष्ट कर दिया। खड्ग प्रहार से शत्रुओं को काट कर गिरा दिया। उनके द्वारा कितने ही वीर खण्ड २ हो गए। अतः सामलदास और उसके साथी धन्य हैं।

पल खंडर होइ पड़े, चड़े विम्माण चल्ले ।
समल गीध ग्रो कीध, लिये आमिक्ख अपल्ले ॥
देवायण भारत्थ, कत्थ रामायण जाणं ।
चौंकि चौंकि चहुँ खंडि, प्रिथी पुडि वधे प्रमाण ॥
असिमर हथ अक्खां अंगो, वागड छल कीधो विढणि ।
साथियां साथि सतियां सहित, सामल पोहती सुर भुअणि ॥१७॥

अर्थः—उन वीरों के मांस के टुकड़े २ हो गए, वे सब विमानों में बैठ कर चले गए। चील एवं गिद्धनियाँ पंख बजाती हुई आमिष ग्रहण कर द्रुत गति से उड़ गईं, उन वीरों ने चारों दिशाओं को चकित कर व्यास रचित महाभारत और रामायन में वर्णित वीरों की ख्याति को पृथ्वी पर सत्य सिद्ध कर दिया। अक्षय सिंह के अंशधारी, वागड़धरा के रक्षक सामलदास ने खड्ग ग्रहणकर मृत्यु प्राप्त की और अपने साथियों एवं सतियों सहित स्वर्ग में जा बसा।

अर्थः—जिस प्रकार अवधेश रामचंद्र ने रावण पर बाण की वर्षा की, उसी प्रकार वीर कर्मसिंह ने विपक्षि सेना पर बाणों की वर्षा कर दी। उस युवक ने युद्धार्थ मांगलिक अफीम का पान किया और कृपाण लेकर शत्रुओं को नष्ट करने लगा। इसी प्रकार दूसरे वीर भी अपने घावों को बांधते हुए शत्रु सेना को नष्ट करने लगे। वह वीर चौहान जिस प्रकार सींचान (पक्षी विशेष) या हाथियों पर शेर झपटता हो उस प्रकार झपटता हुआ धराशायी होगया।

पटे घटे ऊपटे, नीक धजवट्ट निहट्टें।
अरध धार वेहार, जाड़ फट्टें नीवट्टें॥
रुलें रुण्ड वेरुंड, मूँड सूँडाहल डंडह।
भाँजि हड्ड भूडण्ड, खंड वेहंड प्रचंडह॥
धड़चड़े पड़े घड़ वेहड़े, सुर जैंकार समंचरें।
साचवां मेन सहि संघरें, करमसीह भारथ करें॥२२॥

अर्थः—कर्मसिंह द्वारा युद्ध प्रारंभ करने पर पटा धारी हाथियों के शरीरों पर उसके शस्त्राघातों के चिन्ह दिखाई देने लगे। उन हाथियों पर फहराती हुई पताकाएँ टूट २ कर गिरने लगीं। उस वीर के खड्ग प्रहार से हाथियों के मस्तक और सूंडें चिरगई और उन के रुंड एवं मुण्ड इधर उधर लुढ़कने लगे। उन प्रचण्ड काय हाथियों का मांस उस प्रहार से कट २ कर लटकने लगा एवं सेना नष्ट होने लगी यह देखकर देवता उस वीर की जय जय कार करने लगे। इस प्रकार उसने समस्त सत्रु सेना का संहार कर दिया।

मंमर मरि मरि त्रिगरि, फौज नरि नरि फरि थपफरि।
मारि मारि घुम मद्धरि, मने हरि हरि ऊचरि॥

अंत्रावळि उरि उवरि, पगां लग रुळे इसी परि ।
किरहि हार राइ कुँवरि, हीयै हींडै हीलोहरि ॥
वैरी पांव वाढ़ै विसरि, कलहै रिणि वाचरि कसरि ।
संवर विजाळि भळके सिहरि, करमसिंह करिमाल करि ॥२३॥

अर्थः— युद्ध में झूमता हुआ वीर कर्मसिंह तीर चलाने लगा, जिससे शत्रु सेनाके सैनिक भागते हुए एक दूसरे से टकरा गए। वह वीर मुख से मार २ और मन से हरी २ शब्द उच्चारण करने लगा। उस वीर के गले में पैरों तक पड़ी हुई अंतड़ियाँ ऐसा शोभा देती थी, जैसे किसी राजकुमारी के हृदय पर हार झूलता हो। उसने शत्रुओं के पैर काट दिए और युद्ध में किसी २ की खोपड़ी पर इस प्रकार खड्ग घात किया मानों गिरि शिखर पर चमकती हुई बिजली गिरि हो।

झिखै आल करिमाल, काल ककाल कढ़च्छै ।
जीण सल जंजाल, त्रूटि जरदाल तड़च्छै ॥
कुंभ ढाल कंधाल, ढहै ढैचा सढल्लां ।
हुवै खाळ पड़साल, वहै ओणा वहिल्लां ॥
रैंगढाल तुरक रणताल सौं, रमसीह सांमलि कहै ।
विरमाल मकरि वरमाल लै, र चाल झल्ले रहै ॥२४॥

अर्थः—उस समय तलवारों की अपार वर्षा होने लगी, ऐसा प्रतीत होता था, मानों स्वयं यमराज शत्रुओं के अंगों को नष्ट कर रहा हो। कर्मसिंह के प्रहारों से जीन और पाखरों सहित घोड़े कट २ कर तड़फड़ाने लगे। दलेती गजारोही वीरों सहित भयंकर हाथियों के कुंभस्थल और कंधे कट कर धराशायी होने लगे, जिससे विशेष रूप से शोणित के परनाले बहने लगे। इस प्रकार उसे (कर्मसिंह को) युद्ध

करता देख उस पर रंग बरसाती अप्सराएँ कहने लगीः-कि अब विलम्ब मत करिए,हमारे द्वारा गृहीत वरमाला को हे विर ! आप स्वीकार कीजिए।

वहै धार ऊजला, हुलां सावलां धसक्कां।
पैंजू अल कम्मलां, कलां छूटै उरलक्कां॥
त्रूटि इलां पिंगलां, वहू नीकलां वर छां।
खलां भ ां ऊछलां, जलां तोछलां कमच्छां॥
सै खंड हुवै दंतूसलां, मुड़ै असंधां मैंगलां।
भिड़न्तां धन लाल भूवज्वलां, डूङ्गर संभ्रम अरिदलां॥२५॥

अर्थः—उज्वल भाले की धारें धसमसाती हुई चलने लगीं, तलवारों की चमकती हुई किरणें मस्तक पर छाने लगीं, प्रवेश कर निकलते हुए बरछों के साथ शत्रुओं की इडा, पिंगला नाड़ियाँ भी टूटने लगीं, शस्त्रज्वाला में शत्रु इस प्रकार उछलने लगे जैसे थोड़े पानी में मछली तड़फड़ाती हो। हाथियों के दंतुमल शत खण्ड हो कर गिरने लगे दृढ़ स्कंध मुड़ गए। धन्य है उस युवक (कर्मसिंह) को, जिसे शत्रुओं से इस प्रकार युद्ध करता देख कर उसका पूर्वज डूंगर सिंह भी चकित होगया।

अरध ढाह संनाह, अरध संवाह सुभट्टां।
अरध फट्ट कोपट्ट, अरध घंटां जूवट्टां॥
अरध कंध ऊजड़ै, अरध संधा अवसंधां।
अरध नंग निरलंग, अंग होइ अध्धे अध्धां॥
संग्राम धीर हमीर सुव, घड़ा अरड्डां अद्ध घड़।
एकेक घाउ अध्धो अरध, सेनि कीध अरि खग्ग झड़॥२६॥

अर्थः—इस धीर, वीर हमीर वंशज कर्मसिंह के खड्ग प्रहार से शत्रुओं के अर्ध कवच, अर्धभुजाएँ, अर्ध शिरस्त्राण, हाथियों की अर्ध

घंटाऍं, अर्ध स्कंध, अर्ध हृद जोड़े, अर्ध शरीर और सेना नष्ट हो गई। उसने अच्छे २ वीरों में से आधे वीरों को घायल कर दिया।

दह दहंतौ हतौ, दंत पाहार दियंतौ।
घण घाये घूमतौ, फेर फरि अफरि फिरंतौ॥
वेग खग्ग वाहतौ, वाड वैरी वाढंतौ।
नागि चाढि नांखतौ, रोस रत्तौ गहमत्तौ॥
चहुवाण अरी घट चूरतौ, पूर वतौ पिंड मुंड्र प्रतौ।
कीतौ वराह जिम कलहतौ, जोधाउत आखी जतौ॥२७॥

अर्थ:—कर्मसिंह का भाथी और जोधा का पुत्र अट्टहास करता हुआ शत्रुसेना को नष्ट करने लगा एवं पहाड़ रूपी हाथियों के दांतों पर पैर देता हुआ आगे बढ़ा। विशेष घाव युक्त झूमता हुआ वह मस्त होकर शत्रुओं की ओर मुड़ गया। वेग से तलवार चलाकर शत्रु की दीवाल तुल्य रक्षक-सेना को काटने लगा। वह मतवाला क्रुद्ध हो कर गजारोहियों को हाथियों पर चढ़कर नीचे फेंकने लगा। वह चौहान वीर कीर्तिसिंह शत्रुओं के अंगों को चूर २ कर पृथ्वी को शवों से पाटता और वाराह के समान झगड़ता हुआ धराशायी हो गया।

धाररव धूवांरव, ऊछळै सांग अँगा रव।
झाला रव झूफ रव, लोह वाजे जोधा रव॥
पाणा रव पूर रव, पार पौरिस्स पवणा रव॥
ढोला रव घड़ हड़े, ढोअरव हुए खिखा रव॥
सेन रव हुवे संघार वण, रूंखा रव दाभंत रिम।
रूक रस मिलै राई मलौ, जगौ बिलागौ धोम जिम॥२८॥

अर्थः— जिस समय राणा, रायमल के वंशज उदयसिंह ने डूंगरपुर प्रान्त पर तलवार उठाई, तब राव जगा (आमेट वालों का पुरखा) अग्नि के समान प्रज्वलित हो उठा। उस समय युद्ध भूमि में चारों ओर धूंधल, लोहकुंत के अंगारे, शस्त्र-ज्वाला और योद्धा दिखाई दे रहे थे। शस्त्र ध्वनि, कराघात, शोरगुल, वाद्य ध्वनि, गिर पड़ने की ध्वनि एवं एक दूसरे को धिक्कारने की ध्वनि सुनाई दे रही थी। सैन्य-नाश तथा शत्रु-समूह दावाग्नि से झुलसे हुए वृक्षों के समान दृश्य दिखाई देते थे।

खेतल खांडा हथ्थ, साथि सुग भड़ सोहे।
माण भवानीदास, लाल रिणवट ता लोहे॥
दुरगौ सांईदास, कलहि कीतौ करिमालें।
जणि जणि वार्जे जुड़ै, जगौ कांपिल्ल-जड़ाले॥
गैपड़ा मड़ां गड़ गोड़वे, गहैयाट मातौ गहण।
राउत कमां छलि राउते, मछरीके कीधो मरण॥२६॥

अर्थः—रावत खेतसिंह (सलूम्बर वालों का पुरखा) हाथ में खड्ग लिए हुए अपने योद्धाओं सहित युद्धभूमि में सुशोभित हुआ। माण, भवानीदास और लालसिंह ने शस्त्र धारण कर युद्धवट (राजपूती शान) प्रदर्शित किया। दुर्गा, सांईदास और कीता ने भी खड्ग ग्रहण कर युद्ध छेड़ दिया। महाराणा के उपरोक्त साथियों में से जगा रावत ने कितने ही गजारोही सामन्तों को हाथियों सहित धराशायी कर दिया। शत्रु-समूह में उसने भारी आपत्ति पैदाकर दी। इस प्रकार वह रावतों का सहायक मनस्वी वीर (जगा) युद्ध में विपक्षी कर्मसिंह सहित मृत्यु को प्राप्त हुआ।

मरण करे मछरीक, चिढे चड्ढे विम्माणे ।
पल चॅारी पल भखे, रुधिर पूरे रण ठाणे ॥
सात वीस राउत्त, सांमि सरसा समरड्ढा ।
सतियाँ भूल सहेत, वरां मरिसै कुलवड्ढां ॥
मेवाड़ दलां सों लोह मिलि, हेकव कै जस ताम होइ ।
करमसी अनै सोमलि कियो, करै नइम अवसांण कोइ ॥३०॥

अर्थ—एक दूसरे पक्ष के वे प्रमुख वीर जग्गा तथा कर्मसिंह मृत्यु को प्राप्त हुए और शस्त्र द्वारा कटकर स्वर्ग जाने के लिए विमानारूढ होगए। उन्होंने आमिषभोक्ताओं को तृप्त कर दिया। युद्ध भूमि को उन्होंने रक्त से परिपूर्ण किया। कर्मसिंह के २७ सत्ताईस साथी, जो उसी के समान रण दक्ष और कुलीन सतियों का वरण करने वाले थे, सब मेवाड़ेश्वर की सेना से लोहा लेकर मारे गए। कर्मसिंह और सामलदास ने जिस प्रकार मृत्यु प्राप्त की, उस प्रकार कौन वीर मृत्यु प्राप्त कर सकेगा ?

इमो कीध अवसांण, जिमौं जाणंत सयल जण ।
रांउतां रांउत्त, मांहे मछरीक निर्भै मण ॥
सांमल ने करमसी, चंद जस नांमौं चाड़ै ।
वागड़ छल वीरत्ति, चिढे अरि थट्ट बिभाड़ै ॥
हरि भुवणि गया चालण हरा, धामा तीरथ धरा छल ।
कवि मेह प्रबोहो चीत्रियौ, कल नहीं कलि तांई अकल ॥३१॥

अर्थः—सामलदास और कर्मसिंह ने जैसी मृत्यु प्राप्त की, उसे सब जानते हैं। राव पद धारी वीरों से रावत पदधारी मतवाले निर्भीक वीर लड़ गये। उन दोनों चौहान क्षत्रियों ने अपने यश को चन्द्रमा

से भी ऊपर स्थान दिया। शत्रु-समूह को मारते हुए वे, वाग्ड़ धरा के रक्षक योला के साथ कट गये। इस प्रकार वाला के वंशज वे धरा रक्षक, तलवार की धार से तीर्थ कर हरि लोक में पहुँच गए। इन्हीं की श्रेष्ठ ख्याति का (मैंने) मेद कवि ने वर्णन किया है। यह कलियुग के अन्त तक मिटने वाला नहीं, अलुएण बना रहेगा।

—]-:☰:-[—

सूजा बालेचा

देस वेम उद्धरण, करण वातां अखियंता।
पातसाह पगि भवण, खवण दूयण अमहंतां॥
गुदत कवी मम थरण, वग्ग घड़ त्रिविधि कुंवारी।
तां रिग्दां वसि करण, त्रिके भुज भलता भारी॥
नाहूल राउ पाट नयत्र, कोइज काम उत्तम करे।
सामंत सुत्रिहि संसार सिरि, सुरिज माल अवतरे॥ १॥

अर्थः—सामतसिंह के घर पर नाडोल राजवंशी वीर सूजा (सूरजमल) देश एवं वंश का उद्धार करने प्रख्यात बादशाहों को भ्रांति देने, असह्य शत्रुओं को नष्ट करने, वश में न आने वाली त्रिविध (अश्वारोही, गजारोही और पैदल) सेना को अधिकार में लाने, अपने विरुदों से प्रत्येक को वश में करने, भुजाओं पर भार उठाने और श्रेष्ठ कर्म करने वालों को शान्ति देने के लिए उत्पन्न हुआ।

ताम मह उळने, धमल मंगल आलुत्वण।
वाजि थाल् सांमाल्, साजि दीपंतां तोरण॥
वले पाउ नीसाण, हुवे ओच्छव महोच्छव।
संपेरे मांझियव्ह, अग्गिन गिर चाटे गहव॥

चमकिया सीस दुयणांयणां, वार लेग्ग वीचारियो।
चहुआंण वंस थय चंदणो, सूरज माल पधारियों ॥ २ ॥

अर्थः—जिस समय सूजा का जन्म हुआ, उस समय मन को अच्छे लगने वाले श्रेष्ठ गीतों का मधुर स्वर फैल गया, कांसी की थाली बजाई गई, राजद्वार पर चमकते हुए तोरण लगाए गए और नक्कारे बजवाए गए। इस प्रकार सूजा का जन्म महोत्सव मनाया गया। जब शत्रुओं ने सुना कि चाहुवान वंश में प्रकाशवान सूजा पैदा हुआ है और उसका भाग्य अक्षत चढ़ाने योग्य है—तो उनके मस्तक भय से कांप गये।

जा दिन चोल् कपोल्, त दिन दीपे गजं नरि।
जगा जोति उदोत, किरिहि ऊगे सहस्स करि ॥
जनम जाणि जोतिक, वार वेला विच्चारे।
जै जैवंत सकत्ति, कहे पड़ कारि निहारे ॥
पालणे किरण प्रगटो प्रथी, पड़े द्रमंको दूजणा।
कै कुँवर राउ साम्त रो, सूर सहां सो मज्जणा ॥ ३ ॥

अर्थ.—जिस दिन उसके कपोलों पर अरुणिमा मालूम होने लगी, उस दिन से वह राजाओं में ऐसा देदीप्यमान होने लगा मानों सहस्त्र किरण धारण कर सूर्य उदय हुआ हो। सामन्तसिंह के यहाँ ऐसे कुमार का जन्म होने पर ज्योतिषियों ने जन्म लग्नादि देखा और देवी (शक्ति) ने भी उसके द्वारा संसार की कार्य-पूर्ति होना सोचकर जय-जयकार की। वह (सूजा) पृथ्वी का पोषण करने के लिए प्रकट हुआ। यह जानकर शत्रुओं के हृदय में चाट पहुँची। वह (सूजा) सभी वीरों का मित्र था।

से भी ऊपर स्थान दिया। शत्रु-समूह को मारते हुए वे, वागड़ धरा के रक्षक वीरता के साथ कट गये। इस प्रकार वाला के वंशज वे धरा रक्षक, तलवार की धार से तीर्थ कर हरि लोक में पहुँच गए। उन्हीं की श्रेष्ठ ख्याति का (मैंने) मेह कवि ने वर्णन किया है। यह कलियुग के अन्त तक मिटने वाला नहीं, अक्षुण्ण बना रहेगा।

—]-:≡:-[—

मूजा वालेचा

देस वेस उद्धरण, करण वातां अखियंता।
पातसाह पगि भवरण, खवण दूयण असहंतां॥
सुद्रत कवी समधरण, वग्ग षड़ त्रिविधि कुंवागी।
तां निरदां वसि करण, जिके भुज भलता भागी॥
नाडूल राउ पीढे नयत्र, कोइज काम उत्तम करे।
सामंत गुग्रिहि संमाग सिरि, सुरिज माल अवतरे॥ १॥

अर्थः—सामतसिंह के घर पर नाडोल राजवंशी वीर सूजा (सूर्यमल) देश एवं वंश का उद्धार करने प्रख्यात बादशाहों को भ्रांति देने, असह्य शत्रुओं को नष्ट करने, वश में न आने वाली त्रिविध (अश्वारोही, गजारोही और पैदल) सेना को अधिकार में लाने, अपने निरदों में प्रत्येक को वश में करने, भुजाओं पर भार उठाने और श्रेष्ठ कर्म करने वालों को शान्ति देने के लिए उत्पन्न हुआ।

ताम मद उछले, धमल मंगल आलुवण।
वाजि वाजु कांमाल, साजि दीपंतां तोरण॥
वले घाउ नीसाण, हुवे ओच्छव महोच्छव।
गंधेरे माल्टियव्व, अनिन सिर चाढे गहव॥

चमकिया सीस दुयणांयणां, वार तेण वीचारियो।
चहूआंण वंस थय चंदणौ, सूरज माल पधारियौ ॥ २ ॥

अर्थः—जिस समय सूजा का जन्म हुआ, उस समय मन को अच्छे लगने वाले श्रेष्ठ गीतों का मधुर स्वर फैल गया, काँसी की थाली बजाई गई, राजद्वार पर चमकते हुए तोरण लगाए गए और नक्कारे बजवाए गए। इस प्रकार सूजा का जन्म महोत्सव मनाया गया। जब शत्रुओं ने सुना कि चाहुवान वंश में प्रकाशवान सूजा पैदा हुआ है और उसका भाग्य अक्षत चढ़ाने योग्य है—तो उनके मस्तक भय से कांप गये।

जा दिन चौल कपोल, त दिन दीपे गजं तरि।
जग्गा जोति उदोत, किरिहिं ऊगे सहस्स करि ॥
जनम जाणि जोतिस्क, वार वेला विच्चारे।
जैं जैवंत सकत्ति, कहे पड़ कारि निहारे ॥
पालणे किरण प्रगटो प्रथी, पड़े द्रमंको दूजणा।
रै कुँवर राउ सामंत रो, सूर राहां सी सज्जणा ॥ ३ ॥

अर्थ—जिस दिन उसके कपोलों पर अरुणिमा मालूम होने लगी, उस दिन से वह राजाओं में ऐसा देदीप्यमान होने लगा मानों सहस्त्र किरण धारण कर सूर्य उदय हुआ हो। सामन्तसिंह के यहाँ ऐसे कुमार का जन्म होने पर ज्योतिषियों ने जन्म लग्नादि देखा और देवी (शक्ति) ने भी उसके द्वारा संसार की कार्य-पूर्ति होना सोचकर जय-जयकार की। वह (सूजा) पृथ्वी का पोषण करने के लिए प्रकट हुआ। यह जानकर शत्रुओं के हृदय में चोट पहुँची। वह (सूजा) सभी वीरों का मित्र था।

से भी ऊपर स्थान दिया। शत्रु-समूह को मारते हुए वे, वागड़ धरा के रक्षक वीरला के साथ कट गये। इस प्रकार बाला के वंशज वे धरा रक्षक, तलवार की धार से तीर्थ कर हरि लोक में पहुँच गए। उन्हीं की श्रेष्ठ ख्याति का (मैंने) मेह कवि ने वर्णन किया है। यह कलियुग के अन्त तक मिटने वाला नहीं, अक्षुण्ण बना रहेगा।

—]-:☰:-[—

सूजा वालेळा

देस वेस उद्धरण, करण वातां अखियंता।
पातसाह पगि भवण, खवण दूयण असहंतां॥
मुदत कवी सम धरण, वग्ग षड़ त्रिविधि कुंवारी।
तां विरदां वसि करण, जिके भुज झलता भारी॥
नाडूल राउ पाटे नयर, कोड़ज काम उत्तम करे।
सामंत सुग्रिहि संसार सिरि, सूरिज माल अवतरे॥१॥

अर्थः—सामंतसिंह के घर पर नाडोल राजवंशी धीर सूजा (सूर्यमल) देश एवं वंश का उद्धार करने प्रख्यात बादशाहों को भ्रांति देने, असह्य शत्रुओं को नष्ट करने, वश में न आने वाली त्रिविध (अश्वारोही, गजारोही और पैदल) सेना को अधिकार में लाने, अपने विरुदों से प्रत्येक को वश में करने, भुजाओं पर भार उठाने और श्रेष्ठ कर्म करने वालों को शान्ति देने के लिए उत्पन्न हुआ।

ताम सद्द उछले, धमल मंगल आलुब्बण।
वाजि थाल् कांमाल्, गाजि दीपंतां तोरण॥
वले घाउ नीसाण, हुवे श्रोच्छव महोच्छव।
गंधर्व माळिपळ, अखित सिर चाढे राहव॥

चमकिया सीस दुयणांयणां, वार तेण वीचारियो।
चहूआंण वंस थय चंदणों, सूरज माल पधारियो ॥ २ ॥

अर्थः—जिस समय सूजा का जन्म हुआ, उस समय मन को अच्छे लगने वाले श्रेष्ठ गीतों का मधुर स्वर फैल गया, कांसी की थाली बजाई गई, राजद्वार पर चमकते हुए तोरण लगाए गए और नक्कारे बजवाए गए। इस प्रकार सूजा का जन्म महोत्सव मनाया गया। जब शत्रुओं ने सुना कि चाहुवान वंश में प्रकाशवान सूजा पैदा हुआ है और उसका भाग्य अक्षत चढ़ाने योग्य है—तो उनके मस्तक भय से कांप गये।

जा दिन चोल् कपोल्, त दिन दीपे गजं तरि।
जग्गा जोति उदोत, किरिहि ऊगे सहस्स करि॥
जनम जाणि जोतिश्क, वार वेला विच्चारे।
जै जैवंत सकत्ति, कहे पड़ कारि निहारे॥
पालणे किरण प्रगटो प्रथी, पड़े द्रमंको दूजणा।
रै कुँवर राउ सामंत रो, सूर सहां सा सज्जणा ॥ ३ ॥

अर्थः—जिस दिन उसके कपोलों पर अरुणिमा मालूम होने लगी, उस दिन से वह राजाओं में ऐसा देदीप्यमान होने लगा मानों सहस्त्र किरण धारण कर सूर्य उदय हुआ हो। सामन्तसिंह के यहाँ ऐसे कुमार का जन्म होने पर ज्योतिषियों ने जन्म लग्नादि देखा और देवी (शक्ति) ने भी उसके द्वारा संसार की कार्य-पूर्ति होना सोचकर जय-जयकार की। वह (सूजा) पृथ्वी का पोषण करने के लिए प्रकट हुआ। यह जानकर शत्रुओं के हृदय में चोट पहुँची। वह (सूजा) सभी वीरों का मित्र था।

जिसा वरसि अनि वधे, तिसौ दिन जोति प्रगट्टै ।
कलानिस ऊगमे, प्रिसण हर कला प्रलट्टै ॥
महामयण मूरति, वधे साहण कुल भारां ।
थिया कोड़ मंगिणा, भाग जागिया अपारां ॥
दस पंच वीस अंतर पमर, थियौ जस्स राईकड़े ।
माहियो भार सामंतरे, वेस वधन्ती सूजड़े ॥ ४ ॥

अर्थः सामान्य व्यक्ति एक वर्ष में जितना बढ़ता है; उतना ही वह एक दिन में बढ़कर तेज फैलाता जाता था। उसको चन्द्र के समान कांतिमान होता देख शत्रुओं की कान्ति नष्ट होती थी। वह साक्षात् कामदेव की मूर्ति था। कुल के भार को वहन करने के लिए वृद्धि प्राप्त करता जाता था। याचक वृन्द उससे प्यार करने लगा। उसके कारण मित्रों का भाग्योदय हो गया। उस नरेश्वर का यश केवल पन्द्रह वर्ष की आयु में ही संसार में फैल गया। इस प्रकार आयु की वृद्धि पाकर सामन्तसिंह का वीर पुत्र सूजा राज्य का भार वहन करने लगा।

ऊमर से ऊठियो, कान्ह जिरि गोकल अंतरि ।
वागी गोह वैरियां वांह ऊभे भर वहसरि ॥
करे हड्ड बल हड्ड वट्ट परियां प्रजु आले ॥
वाले वैर वहन्त, गमे दूजण जल काले ॥
श्रोपियो वंश चहुवांणरे, धड़ा गृध वांचे धड़े ।
वेरियां वाम वीमल हरै, संगि कीच सूजड़े ॥ ५ ॥

अर्थः—जिस प्रकार गोकुल में कृष्ण के हाथ (राक्षसों को मारने के लिए) उठे थे, उसी प्रकार उसके दोनों हाथ (मध्य आरण्य के रूप में) शत्रुओं पर वार चलाते समय उठने लगे। वह बलवान

ता पूर्वक अपने पूर्वजों का मार्ग (रीति) उज्ज्वल (पवित्र) करने
गा। स्वय चलकर शत्रुओं से बदला लेने लगा, जिससे वे सब काले
ानी के समुद्र में छिप गये। बीसल के उस पवित्र विचार वाले वंशज
सूजा ने सु मन्त्रणा करके शत्रुओं के स्थानों का अपहरण कर चौहान
वंश को शृंगयान बना दिया और उसकी शोभा बढ़ाई।

जदिनि पिता सामंत, परमआयाणि पधारे।
तदनि राण राइमल, तिलक मालियलि समारे॥
वेखि घा१ समरत्थ, पाटि कीधो पाटोधर।
मिड़या माँ भागिया ताम, ऊमियै करिमर॥
वरतणा दियै मूत्रे वडण, आण करेवा आपणी।
त्रिहुँ टाल घरा वीमल तणी, घरा सूर छाजै घणी॥ ६॥

अर्थः— जिस दिन उसके पिता सामन्तसिंह ने स्वर्ग प्राप्त किया,
उस दिन तख्त पर सुशोभित होने वाले महाराणा रायमल ने उसके
ललाट पर तिलक किया और उसे सामर्थ्यवान समझ कर उसके पिता के
सिंहासन पर आरूढ़ किया। वीर सूजा ने जब तलवार उठाई, तब उससे
भिड़ने वाले समस्त शत्रु भाग गए। उसका समय शत्रु-नाशक था। उस
जगह २ अपनी दुहाई फेर दी। बीसल के वंशजों के तीन भू-भागों
नाड़ोल भू-भाग में विशिष्ट वीर होते आए हैं, उसी प्रकार यह (स
वीर हुआ।

मेलि थाट अवियाट, पाट यालण अजुवालण।
अवखले भागियां, मंडि तुड़ चालां चालण॥
घर विहंत ग्रोहियैं, काढ़ि पारंमल कीयैं।
ै भुज बल आपणैं, तखत चीताणुर लीयैं॥

तांडियो पाट बीसल तणै, घणै तेज तूंगिम धणै।
ऊमसे सूर सामंत रो, कियै गिरोवर आपणै ॥ ७ ॥

अर्थः—थालेसरा (थालेश्वर) शाखा के तख्त को पवित्र बताने के लिए ओजस्वी वीर-समूह को एकत्रित किया और रण-क्रीड़ा करने के लिए अपने सगोत्रीय वीरों को पंक्ति बद्ध कर शत्रुओं को भगा दिया। उसने अश्वारोही सेना बढ़ाकर दो शत्रुओं को (रण सिन्धु में) डुबो दिया। अपनी भुजाओं के बल पर बीजापुर पर अधिकार कर लिया। अपने अधिक प्रताप और वीर समूह के कारण बीसल के तख्त पर बैठकर हुंकार की। इस प्रकार सामंतसिंह के वीर पुत्र सूजा ने बढ़ कर पहाड़ी प्रदेश को अपने अधिकार में कर लिया।

रिण क्रिपंत जैवंत, जोध दीपै पारतर।
उर फट्टै वैरियां, लास कलूलते हैवर ॥
घुरै ढोल नीसांण, माण छंडै वैराई।
एकां काही नरिम, लिये दिनमान लड़ाइ ॥
महिपति हिये मावे नहीं, किसौ अनाजो अम्बरां।
गजड़ो टिप्यै मावे सत्रां, नवै निहाणे पसरां ॥ ८ ॥

अर्थः—युद्ध करता हुआ वह विजयी वीर सूजा देदीप्यमान होने लगा। अश्व-समूह की हिनहिनाहट से शत्रुओं के हृदय विदीर्ण होने लगे, नक्कारे आदि रण वाद्यों को सुनकर दोनों विपक्षी राजाओं का गर्व नष्ट होगया। इस प्रकार एक दिन ही नहीं सदा अपने ही समान वीरों से युद्ध करता रहता था। अन्य साधारण राजा उसके सामने नाज नखरे कर ही नहीं सकते थे। वह तो राजाओं के हृदयों में भी नहीं समा पाता था क्योंकि वह वीर सूजा सदा शत्रुओं पर आक्रमण करता ही रहता था।

नित सुत्रै भारत्थ, कत्थ रावण वसु हंतरि ।
मौख खै ऊससै, वले वडवातां ऊपरि ॥
करै आलि कांटालि, कीयौ धक चालवहेड़ौ ।
वहिलौ सौं बंछता, हूओ भेड़ौ सां भेड़ौ ॥
दूदड़ौ दीण भाखै नहीं, सूजो गाजै सध्धरां ।
रस खेध विहूँ बालीसरां, धखे वेर पाटोधरां ॥ ६ ॥

अर्थः—वह सदा संसार में अपनी ख्याति बनाये रखने के लिए शत्रुओं से युद्ध करता, उच्च बातों पर हुँकार कर फूला नहीं समाता था। शत्रुओं के लिए उसने कंटक-तुल्य वीरों की दीवार बना रक्खी थी। वेड़ा (मारवाड़) स्थान पर उसने रक्तपात किया, दोनों ओर की विशेष युद्धेच्छा के कारण ही युद्ध हुआ। उधर से 'दुर्जन-साल' दीन भाव प्रदर्शित नहीं करता था और इधर से सूजा उसके भू-भाग पर गर्जता रहता था। इस प्रकार दोनों बालेसरा जाति के तख्तधारी वीरों में विरोध के कारण क्रोधाग्नि प्रज्वलित होती रहती थी।

विन्है जोध ऊसमें चसैं, वे वै ढोलस्सरि ।
करै विन्है धकचाल, पाण ऊमियै करिम्मरि ॥
विहूँ तणा राउत्त, मुहे भँग वाट न चल्लैं ।
जिसा पड़ंतो आभ, भुजे आपांणे झल्लैं ॥
धाणास हत्थ माझी विन्है, वर वै पाणि मुअव्वलां ।
वेहास सम आयो विढण, बीदां अनियै बीसलां ॥१०॥

अर्थः—दोनों योद्धा उत्साहित हो उठे और उनके रणवाद्य बजने लगे। दोनों के हाथों में तलवार उठाते ही मार काट मचगई। वे

दोनों ही रावत पदधारी थे और मरने पर ही (युद्धस्थल से) हटते थे। दोनों ही खड्ग धारण करने वालों के मुखिया थे, वे अपनी भुजाओं के बल पर पृथ्वी पर अधिकार करने वाले थे। दोनों कट पड़ने के लिए ही घोड़े सजा कर आए थे, दोनों वीर वीसल के वंशज तथा श्रेष्ठ सैन्य नायक थे।

ताम दले दूजरण जाइ, योहियाँ धिखावे।
सूर वहेड़ा ताम ढोल, वाजंते आवे॥
विन्हें लोडि वंबोडि, भलो कीधौ मन भायौ।
जोवंतां वंछतां, धरौ मांच्चडो आयौ॥
गिणि तूंग सूर सामंत रौ, मणौं स दिन आयो भलां।
अडियौ लोह आचांगलां खजानें दुजण खलां॥११॥

अर्थः—दुर्जनशाल उस समय बड़ी सेना को धकेलने लगा और बेड़ा के वीर रण वाद्य सुनकर एकत्रित हो गए। दोनों (दुर्जन और सूजा) ने क्रोध कर दाँत पीसते हुए मनमाना युद्ध किया। दोनों इच्छा पूर्वक देखते हुए जोर की टक्कर लेने लगे। उस समय सामन्तसिंह का वीर पुत्र (सूजा) युद्ध में वीर-समूह से कहने लगा-"आज हमारे लिए अच्छा दिन है।" उसके पश्चात् वे दोनों अडिग वीर शस्त्र घात करने लगे।

जाँध कंध उमंध, वंध वड़ हैं वांगा से।
पड़ें भड़ां नीवड़ां, पड़े पड़नालां पासे॥
कड़ें सीस वंटाहि, करे अत्रा रण टाहे।
रहै विन्हें दल सांकि, मार धारां आराहे॥

वजि धड़क्क हक्का रवण, गिरधर अँबर गाजीया।
रण ताल रोस वालीसरा, त्रिहा राउत वाजिया ॥१२॥

अर्थः—योद्धाओं के कंधे बेजोड़ हो गए और उनके कटि वध-नादि तलवारों से कट गए। कटे हुए। कटे हुए वीरों के रुण्डों से रक्त के नाले प्रवाहित होने लगे। जो युद्ध में प्रवेश कर सके, उनके मस्तक लुढ़कने और अंतड़ियाँ बिखर ने लगीं। शस्त्रों से दोनों ओर की सेना बिंध गई। युद्ध में धड़ाके की आवाज के साथ २ वीरों की हुँकार होने से पर्वत, पृथ्वी और आकाश प्रतिध्वनित होने लगे। इस प्रकार मारकाट करने वाले रावत पदधारी दोनों वालसरे (वालछे दुर्जन और सूजा) क्रोध वश युद्ध में कराघात करने लगे।

वे माभी अण चल्ल, भल्ल मारथि न म्मज्जैं।
विन्है मार आगार, धार वारैं गरज्जै ॥
विहूँतणा राउत, हुआ खंडै पल खंडै।
वडा जोध वरियांम, खेति राखिया विहड्डैं ॥
आराण सोभि अरि ओसळे, सूरि सुर केय सक्खियाँ।
सिरीहार दीध दूजण सलां, भवां अभै जस रक्खियाँ ॥१३॥

अर्थः-दोनों मुखिया अचल वीर थे, वे लड़ कर युद्ध स्थल से हटने वाले नहीं थे। दोनों शस्त्र चलाने में अग्रगण्य थे। वे तलवार चलाते समय बड़े २ योद्धाओं को काट एवं धराशायी कर गर्जने वाले थे। उन्होंने युद्ध में शत्रुओं को खोज २ कर चूर २ कर दिया। सूर्य और कई वीर इसके साक्षी हैं। वस दुर्जनसाल के निर्भय साथियों ने शिव को मुण्ड माला समर्पित कर अपना यश कल्पान्त तक अक्षुण्ण कर दिया।

तामनेस आविये, वडे जीतै अखाड़ै।
दियै थंभ आकासि, धर पूरियाँ प्रवाड़ै॥
सिंघलां देखतां, मेलि परिगह आपांणो।
मा चंदो जड़ वंध कहि, कंप कंध सुहाणो॥
वाहरां केडि आवै विढण, मुकर सार नहको सजे।
पूरियो जसस बीजापुरो, सूर भूजडंड नीमजे॥१४॥

अर्थः—वीर सूजा युद्ध के अखाड़े में दुर्जनसाल से बड़ी विजय पाने पर मदान्ध हो गया। उसने स्तंभ रूप होकर आकाश को भुजाओं पर उठालिया और अपनी ख्याति-पूर्ति करदी। यह देख कर सिंघल-क्षत्रियों ने अपने साथियों को एकत्रित किया और उन सब नें कसकर तलवारें बांधी। बीजापुर (मारवाड़) का यह वीर (सूजा) दुर्जनसाल के पक्ष में आए हुए वीरों (सिंघलों) को काटने के लिए बढ़ा। यह देख किसी शत्रु ने शस्त्र ग्रहण नहीं किया, अतः उस वीर (सूजा) की भुजाएं पूजी गईं।

ताम भड़ा भागिया, उरे लागां अपफारां।
मरण भेवीहले, कीयाँ मारण ओंसारे॥
सीम काज महलादि, माथि भड़ पंच सखाई।
थोड़ां ठावां करे, घणा आया वैगाई॥
तिणवार सूर सामंतरां, लाधै चूक न लस्मियां।
भर धणी पांण फेवाण धरि, लग आकास विकस्सियां॥१५॥

अर्थः—सिंघलों के साथी जब मृत्यु भय से भाग गए, तब सिंघलों ने शत्रुओं का नाश करने के लिए शस्त्र-वर्षा प्रारम्भ करदी। यह झगड़ा केवल सीमा के लिए था, अतः वे पुनः कुछ सामन्तों के

साथ सुसज्जित हुए। थोड़े से होते हुए भी उन्होंने अधिक शत्रुओं का सामना कर उन्हें रोका। उस समय सामन्तसिंह का वह वीर पुत्र (सूजा) छद्म युद्ध न कर प्रकट रूप में विपक्षियों के सामने आया और पृथ्वी-पति (महाराणा) के बल पर तलवार पकड़ अपना मस्तक आकाश से छुआता हुआ प्रसन्न होगया।

मुख हाकां उछले, पाण केवाण झलक्के।
पड़े-धिर रुहि राल, खाल पड़नाल खलक्के॥
सारधार वावरै, करै विवि अधध कटधा।
तड़ै भाड़ उवड़ै, मुड़ै कंधा ऊ संधां॥
धाराल धूणि अवि सीस धड़, दहुँ हत्थे लग्गौ दडौ।
वेरियां वांसि वीमल हरौ, सारि न आयौ सूजड़ौ॥१६॥

अर्थः—वीर, मुख से हुँकार करते हुए उछलने लगे, हाथों में तलवारें चमकने लगीं, रुधिर की महान धारा नाले के प्रवाह के रूप में बहने लगी। शस्त्राघात से रुण्डों के दो २ भाग होने लगे, भाले जबड़ों में प्रविष्ट होगये। न मुड़ने वाले वीरों के कंधे मरोड़े जाने लगे। धीर हिलती हुई तलवारों के दोनों हाथों से प्रहार करते हुए रुण्ड मुण्ड अलग २ कर के गेंद का खेल खेलने लगे। इस प्रकार यह वीराल का वंशज (सूजा) शत्रुओं का विध्वंस करता हुआ उनके काबू में नहीं आया।

किया थट्ट दहवट्ट, झट्ट अवझट्ट निहट्टे।
खग्गां पाणि आपरां, भगं सारै जस खट्टे॥
खल खंडे खैगरे, जैत चाढी भुअ डंडे।
प्रिथी लोक प्रगडौ, कियौ साकौ नव खंडे॥

समान धार मान कर बड़े २ कार्यों का मन्त्रणा का भार उस पर छोड़ दिया। सूजा भी स्वामि-धर्म, शील, और सत्ययुक्त तथा एक मत हो सहायतार्थ तत्पर रहता था। उस के सम्मुख जो प्रचण्ड वीर चढ़ आता, उसे वह सीधा करके छोड़ता था।

दीठो दूजणसले, सूर दीवाणि गरज्जे।
मतौ सुत्र पूछतां, मत्ति दूणी ऊपज्जे॥
ताम ग्रास नै वेध, करै छाना ओसारा।
मैल मंत्र आलोज, लाख दोरां संचारा॥
फेरियौ चीत मेवाड़वै, सूरी पारस जाणियौ।
उमोह परिगह आपरो, कुंभमेर गढ़ि आणियो॥२१॥

अर्थः—एकलिङ्ग के दीवान महाराणा ने वीर सूजा को दुर्जनशाल पर गर्जता हुआ देखा। सूजा, शत्रुओं पर आक्रमण की मंत्रणा में विशिष्ट बुद्धि से उत्तर देता था। उसका भू-भाग नष्ट करने के लिए दुर्जनशाल और उसके साथी चुपके चुपके शस्त्राघात करते रहते थे। यह सोच कर वीर सूजा ने मेवाड़ेश्वर की ओर अपने मन को लगाया और अपने सारे सम्बन्धियों को कुम्भलगढ़ पर बसाया।

सूर पयंपै राण, किमा ऊणा ऊथल्लै।
तूं ठाकुर तूं धणी, तुझ सम प्राण न चल्लै॥
तूं तारै तो तरां, मरां जौ तौ तूं मारै।
कालो दूजणसल्ल, जणा परिहंस चितारै॥
सामि गौ सनम जोड़े सुकर, कोटि जुगत लालन किया।
मागिया चीति आंणे मतिस, मूंडाड़ै पग मंडिया॥२२॥

अर्थः—वीर सूजा महाराणा से कहने लगा—"आप जैसे स्वामी सिर पर हैं, तब मेरे विरोध में रहने वाला कौन है, जो मुझे स्थान से हटा दें ? आपके कारण ही मेरे प्राणों में दृढ़ता है, आपके तारने पर तैर सकते हैं एवं मारने पर मर सकते हैं।" यह कह करबद्ध निवेदन किया:—"कि मेरा चित्त काक रूपी दुर्जनसाल पर आक्रमण करना चाहता है। इसप्रकार उसने स्वामी (महाराणा) से स्नेह बाँध, भागे हुए शत्रु (दुर्जनसाल) से भविष्य में युद्ध करने का विचार किया और सामना करने के लिए कदम बढ़ाए।

दीध गाँण मेल्हाण, धरा वालीसां मांही ।
लाधी दूजण सले, घात मोटीं मोटांही ॥
दियण दाउ दोखियां,जाणि सुरताण निरालों ।
राइँगरे राउते कियाँ, भूंबेवा चालो ॥
आणे असंख दल आउला, एम आखाड़े ऊवते ।
धूंधरा किया दीठा धणी, बीजापुरि बीढाउते ॥२३॥

अर्थः—सूजा के पक्ष में स्वयं महाराणा ने बालेछा (दुर्जनशाल आदि) के भू-भाग पर प्रयाण किया। उस समय दुर्जनसाल ने राजाओं में श्रेष्ठ महाराणा के भारी आघात होते हुए देखे। उधर बालेछों में अन बन होना, महाराणा का सूजा के पक्ष में होना सुन बादशाह ने भी शत्रुओं पर दाव लगाने का अच्छा अवसर देखा। इधर राव और रावत पदधारी (दुर्जनशाल और सूजा) युद्ध-क्रीड़ा में लग गए। सूजा ने महाराणा की आज्ञा के बिना ही अलग होकर बहुत सी सेना एकत्रित की और बढ़ता हुआ युद्ध भूमि में उतर गया। इस प्रकार मार काट करने वाले उस बीजापुर के स्वामी सूजा को (महाराणा) ने अभिमान में भरा हुआ देखा।

अर्थः—अभिमान के साथ अलग सेना एकत्रित कर युद्ध करने से महाराणा, सूजा से रुष्ट हो गया। सूजा भी रुष्ट होगया और जागीर प्राप्त कर मंडोवर जाकर रहने लगा। वहाँ के स्वामी मालदेव राठौड़ ने उसकी भुजाओं की पूजा की और लाखों की सम्पत्ति प्रदान की। यह जिनके लिए असह्य था, वे बहुत से रावत पदधारी (अपनी आँखों पर) वस्त्र (रूमाल) मसलते (आँसू पोंछते) ही रह गए। जोधपुरेश्वर के द्वार पर (पास में) स्थान पाकर उस के लिए आधी रात में भी रक्षक बन गया। जालोर राज-वंशज वह वीर सूजा अपने स्थान पर दूसरे के दर्पण का प्रतिबिम्ब पड़ना भी सहन नहीं करता था।

ताम माल ग्रब्बियो, थियौ दीवाण वणंतो।
दल दुगांम वरियांम, सूर साँहै डोहंतो॥
महा जोध मझीव, पेखि संसार पतीजै।
जोधपुरां वागिया, सहो ऊपरि मानीजै॥
मनसमा माहिलां माहिलां, रावां रीझावै रहै।
आलोज वोज आसुर असम, जुं पूछीजै सं कहै ॥२८॥

अर्थः—शत्रुओं की द्विगुण सेना को नष्ट करने वाले सूजा के अपने यहाँ आजाने से मालदेव साभिमान सभा करने लगा। उस मल्ल वीर सूजा का संसार विश्वास करता था। जोधपुरेश्वर के सामन्तों में उच्च श्रेणी में माना जाने लगा। उससे जो भी सलाह पूछी जाती थी वह ऐसी सम्मति देता था। जिससे राजा प्रसन्न हो जाता। भारी से भारी आपत्ति और गुप्त से गुप्त विषय में जो भी प्रश्न छिड़ता, उस का वह खिलारा उत्तर देता था।

नित लीयै वामना, तेग तीखार छड़ाला।
नित करे थालात, नित पालवै रण चालां॥

राउ हाथि आणियो, वयण आधो नह लोपे ।
जेणि जगत्र जीपिजे, अंग आसत्रिस ओपै ॥
कालॅ दुगांम सामंत रो, मसलै सिर मंडोवरां ।
ओलग्ग थकौ अस लामणो, घणां कटक्कां मल्लरां ॥२६॥

अर्थः—वीर सूजा घोड़ा चढ़ा, भाले के बल से सदा नए २ स्थानों पर अधिकार करता और सदा इच्छा पूर्वक रणक्रीड़ा करता रहता था। राजा (मालदेव) के हाथ उसके मस्तक पर थे अतः वह उसके अर्ध-कथित वचन को भी नहीं लोपता (टालता) था। उसके शरीर पर सुसज्जित शस्त्र इसप्रकार सुशोभित थे, जैसे वह विश्व विजय करेगा। सामंतसिंह का पुत्र यम के समान था, जो मण्डोवर के वीरों में उच्च माना जाता था। मालदेव की विशेष सेना उस अश्वारोही वीर की सदा इच्छुक बनी रहती थी।

मेलॅ मंत्र आलोज, मल्ल भूठौ भूठांही ।
मतो सूत्र पूछतां, सूर ऊपरलौ तांही ॥
सांमि द्रोह नह भिलॅ, निलॅ ऊजलॅ स कंमलि ।
ओ पासण वर अधिक, ताम नहँ संकै दुजण छलि ॥
नीसरै पैसि चाचरि बिभरि, को छल छिद्रन छेतरे ।
नखत्रेत सूर सामंत रौ, जं आरंभै तं करै ॥३०॥

अर्थः—यद्यपि मालदेव भूठा था और उसकी मंत्रणा भी असत्य होती थी, फिर भी शत्रुओं के लिए सम्मति लेने के समय वीर सूजा की मंत्रणा उच्च होती थी। वह स्वामी से प्रतिकूल रहने वालों के साथ सम्पर्क नहीं रखता था। उसका मुख नूर (कान्ति) से उज्वल था। वह बहुत से वीरों को पकड़ने वाला था। शत्रु उसके सामने छल नहीं

मंडोवर सांमहाँ, ढोल नीसाण घुरावै ।
मालाही प्रतिमल्ल, कहे आंगमण न आवै ॥
गिणि तूंग छात वालीसगे, सूर उदैसी दूसरो ।
पहिलोइ राउ परि भाविया, घले न हाले पद्धरो ॥३७॥

अर्थः—अपने प्रमुख स्थान पर स्थित वह सूजा अपनी ख्याति अक्षुण्ण रखने के लिए जब मस्ती में आता, तब समूह-बद्ध सेना विचलित हो जाती । वह मंडोवर पर रणवाद्य बजाने लगा । उस मल्ल रूपी वीर के समक्ष मालदेव कुछ नहीं कर सकता था । वह युद्ध में अपने सैन्य-समूह का छत्र रूप था और अपने पूर्वज उदयसिंह के समान वीर था । पहले ही वह वीर वालेचा (सूजा) राव मालदेव के लिए भविष्य (भावी विपत्ति) के समान था, फिर वह (महाराणा का) बल पाकर सीधे मार्ग पर कदम नहीं रखता था ।

तारा जोधपुरो कहै, ढोल वागिया अपारां ।
को काढण समरत्थ, अछै परिहरा अम्हारां ॥
वडो काल वरियांम, सांप सांकड़ा सिहाणैं ।
हेकाण माँ नहीं, छलण वलि दाढी ताणैं ॥
संग्राम दूहेलो तै नरिन्द, मुणै माल मंडोवरो ।
मुजड़ा सीस वीहो करि, कोऊ पोरप ऊवरो ॥३८॥

अर्थः—जब वीर सूजा के रण वाद्य मालदेव पर बजने लगे, तब उसने अपने सामंतों से कहा— "कि ऐसा कौन वीर है, जो मेरे प्राण रहते हुए इस (सूजा) को मारवाड़ से निकाल दे ? यह सूजा इस समय मेरे लिए यम तुल्य है, यह मेरे सिरहाने (समीप) सर्प के समान बैठा हुआ है । यद्यपि कितने ही बलवान इसे छलने के लिए मूछों पर ताव

देते हैं, परन्तु यह किसी के वश में नहीं आता। यह युद्ध में दुस्सह साहसी है। इस पर चढ़ाई करने के लिए तुम में से कोई बीड़ा (ताम्बूल) उठाकर (हाथ में लेकर) अपने पुरुषार्थ की रक्षा कर सकता है?

जास परे रिणमल्ल, जेणि महमंद त्रिमाड़े।
जास पिता जालोरि, लिया ओठक्क उठाड़े॥
वीदो बंधव जास, वरी जिणि सूर तणी घड़।
तंणि खत्री ठोकियौ, नगै आहणिवा अचड़॥
दीवाणि घणा पह देखतां, वीड़ो झालि वरव्वियौ।
आईस लहे तड़ि आपरै, आँरंभ ऊपरि आवियौ॥३९॥

अर्थः—जिसके पूर्वज रणमल ने महम्मद से टक्कर ली, जिसके पिता ने आड़ रूपी वीरों को हटाकर जालोर पर अधिकार किया और जिसके भाई बीदा ने सूरा की सेना को काबू में किया, ऐसे उस वीर नगराज ने अटल रह कर सूजा से भिड़ने के लिए अपने भुज ठोके। उसने सभा में बहुत से राजवंशजों के देखते हुए मालदेव के हाथ से युद्ध का बीड़ा (ताम्बूल) ग्रहण किया। पुनः अपने सगोत्रीय वीरों से सहमति और सहयोग पाकर युद्ध करने के लिये बढ़ा।

खेड़छेड़ खरहंड, लाख खंधार डयंबर।
करे सज्ज आवज्ज, सार तोखार बगत्तर॥
काला कोयण कटक, घरट ऊपट घांसाहर।
अधिक भूल आवला, लीण लोद्राल लसक्कर॥
नगराजि कीया भेला निरखि, थोक थाट थप्पा थड़हि।
सामंतवणौ बंधाण सौंह, संजाणीसयै वड्डिगहि॥४०॥

हैं खुरख ऊपड़े, चड़े अंबर रज डंबर।
भर भंगर तर विमर, हुवै पैमाल गिरोवर॥
धर थरहर पुर नयर, करे डर देखि लसक्कर।
त्रिड़े कंध अनीमंघ, भार आवियो फणीधर॥
हैं थाट ढूक हा हूँस हँमस, हेम हलीला हव्लिया।
नाडूल नयर वीटै नगे, काल् श्रोतारा किया॥४४॥

अर्थः—घोड़ों के खुरों से उठी हुई रज राशि ने आकाश आच्छादित कर दिया। उन घोड़ों की टक्कर से वृक्ष और पर्वत नष्ट होने लगे। उस सेना को देख कर भयातुर हो पृथ्वी और नगर काँपने लगे। नहीं झुकने वाले शेष नाग के कंधे भी सैन्यभार से टूटने लगे। अश्व-समूह सेना में हिन-हिनाहट करता हुआ इस प्रकार चढ़ा, मानो हिमाचल की गिरि श्रेणी झूमती हुई चली हो। उन राठौड़ वीरों ने काल के समान रूप धारण कर हाथियों द्वारा नाडौल नगर को घेर लिया।

प्रजा लोक आकंप, हुवौ हुल्लाह करारौ।
घंघारव वाजियाँ, छर ऊगता सरारौ॥
मूँछाला मछरीक, ऊठि ऊपाड़ि असीमर।
भूगीजै नाडूल, खड़े आपा घांसाहर॥
योहरां घाट जोवे त्रिठण, विजौ नगो भड़ वंकड़ा।
गिणि तुंग ऊठि सामंत रा, साडूल हूई खूजड़ा॥४५॥

अर्थः—नाडोल नगर की प्रजा घेरा लगाने पर कंपित हो शोर मचाने लगी। प्रात. सुर्योदय होते २ शत्रुओं के रणवाद्य बजने लगे। मूँछों वाले मानाने वीरों ने खड़े होकर तलवारें उठाई। अश्वारोही वीरों ने मर्मीर पहुँच कर नाडौल को डगमगा दिया। बाँके वीर बीजा और

नागाज्ञ नाडोल के रक्षकों को सामना करने पर उन्हें काटने की प्रतीक्षा करने लगे। उसी समय युद्ध में उत्तुंग काय सामन्तसिंह के पुत्र के साथी युद्धार्थ खड़े हुए और वीर सूजा हुंकार करने लगा।

तं दीपे भालियल, कोटि सूरिज्ज प्रकासे।
जिसौ मोड़ बांधियैं, तिसौ आतंम उहासै ॥
पाइगहां आवियो, छोड़ि अनि छोड़ि कहंतौ।
हुई पलाखि पलाणि, ठाणि हिंसारव हतौ ॥
पैं बंध बंध कंधा परा, वेग त्रिछोड़े त्रित्तरा।
पक्खरे तुरा मुंह छोडरा, चड़िया राउत मूरंग ॥४६॥

अर्थः—वीर सूजा का भाग्य करोड़ों सूर्य के समान प्रकाशमान था, उसने वैसा ही सेहरा उत्साह पूर्वक अपने सिर पर बांधा और घोड़े-खोलो-घोड़े खोलो कहता हुआ हय शाला में आया। उसी समय घोड़ों पर पाखरें डाली गईं, जिससे वहाँ पर हिनहिनाहट का शोर मच गया। घोड़ों के गले और पैर के बन्धन खोले गए। सुसज्जित पाखरों वाले और जोरों की आवाज करते हुए घोड़ों पर सूजा के रावल पदधारी वीर सवार हुए।

जिसौ राम संग्राम, करण सुग्गिमौ धीसक्कर।
जिसौ पत्थ वैराट, वेन लीजंती वाहर ॥
जिसौ दीठ हणमत, द्रोण कर गिरिहिं ऊपाड़ण।
जिसौ निरखि-नरसिंघ, उअर हरिणाकुस फाड़ण ॥
कमधजां कंध काढण करे, ओरि परिग्गह आपरौ।
तेरमी भांति चढ़ियौ तरौ, रिणि क्रियंत सामंत रौ ॥४७॥

अर्थः—रावण से युद्ध करते समय राम, गौएँ छुड़ाते समय अर्जुन, द्रोणाचल उठाते समय हनुमान और हिरण्यकशिपु का पट विदीर्ण करते समय जैसे नृसिंह ने भयंकर रूप धारण किया वैसा ही रूप सूजाने राठौड़ों के कंधे काटने के लिए धारण किया। उस सामन्तसिंह के पुत्र सूजा ने अपने कुटुम्बियों एवं सामन्तों को आगे बढ़ाया और त्रयोदशी की महारात्रि के तुल्य (रुद्र को प्रसन्न करने वाला) होकर शत्रुओं पर चढ़ाई की।

धाउ धाउ पड़ हाउ, धाउ वज्जिया निकासै।
झरे लाल तंबोल, तरैं हीं जरैं मुखासैं॥
चड़े राण चहुआण, जाणि वेवाण विछुट्टां।
प्रता सुध आविधो, दलां राठौड़ां कुट्टां॥
कंदला करण कणियागिरी, पवण जेम परठे पसर।
वींटियाँ देखि आयो विहण, नाडूलै ऊपरि नयर॥४८॥

अर्थः—प्रस्थान करने पर डंके पड़ते ही जोरों से नक्कारे बजने लगे। शत्रुओं के प्रति जो जलन थी वह मानों मुख द्वारा ताम्बूल के पीक के मिस घोर गाजने लगे। चौहानराज सूजा नाडौल नगर के घिरने पर सूचना पाते ही शत्रुओं को काटने के लिये इस प्रकार द्रुतगति से बढ़ा मानों विमान चला हो। उसने राठौड़ सेना को चूर २ करदिया। उस स्वर्णगिरि (जालोर) के राजवंशज ने शत्रु नाश के लिये पवन वेग से आक्रमण किया।

माहा रोम ऊससे, सीस आकास विलग्गे।
त्रिहे गज्जन रतड़ा, मूँछ भौंहारे लग्गे॥
पूग गग्ग ब्रहमंडि, हसे भुयडंड अकारे।
अत्तारे गाउनं, महा सारे उणहारे॥

जीवतो संभ जड़ियै जरद, फर-पगतर कर फावियौ।
देखियो काल विजपाल-दलि, इसो अछाहो आवियौ॥४६॥

अर्थः—वीर सूजा क्रोध से उबल उठा, जिससे उसका मस्तक आकाश को छूने लगा। लाल-२ नेत्रों से अंगारे बरसने लगे। मूँछे भौंहों से जा लगीं। भुजाएँ उठते ही खड्ग ने ब्रह्माण्ड का स्पर्श किया। वह रावत पद्धारी खारे समुद्र के समान दुस्तर प्रतीत होने लगा। उसका अंग स्वर्णिम बख्तर से ऐसा सुशोभित था मानों जिन्दादिल शंभ दानव है। उस उत्साहित वीर सूजा को आता हुआ देख कर बीजा की सेना में साक्षात् यमराज के आने की भांति फैल गई।

ताम निब्रड़ राठवड़, सजे धजवड़ करग्गड़।
खेह देखि नह गया, अये वड़ वत्थे धूहड़॥
रांम रीठ वाजियौं, लोह उडियौ अंतारौ।
सर पत्थर परि टले, हुऔ वह वार करारौ॥
बहुवांण राखि चालिन्नियौं, हण बीजट थट्टां हिये।
भारमल तणे संग्राम भर, माथै लीधो माझियै॥५०॥

अर्थः—उस समय निपटते हुए राठौड़ वीरों ने खड्ग पकड़ कर सेना को नष्ट करना प्रारम्भ किया। वे धूहड़ (राठौड़) वीर रज-राशि उड़ती हुई देख कर नहीं लौटे, शत्रुओं से गुँथ गए। उन्होंने लगातार अशेष शस्त्रों द्वारा प्रहार किए। करारे वार होने पर भी वीरों के शिला सदृश वक्षस्थलों पर बाण टकरा २ कर दूर गिरने लगे। जिस समय चौहान राज (सूजा) शत्रु-समूह की छाती पर खड्गाघात करता हुआ था, उस समय भारमल के उन प्रमुख वंशजों ने ही युद्धभार अपने मस्तक पर उठाया।

यवन बादशाह एवं हिन्दू बादशाह को धन्य है। वे दोनों ही समान वीर और उदारमना थे। उनमें से एक (यवन) मेवाड़ प्रदेश का ध्वंस और दूसरा (महाराणा रक्षा करना चहाता था)।

साह जलाल हुकंम, साह सल्लेम प्रमाणी।
ऊपर राणा अमर, साह वंका पाताणी॥
खान वाहोतर, उजवरी सत दी सुरतांणी।
चढ़ो वहादर उजवका, मीरां मुलकाणी॥
चढ़ो गेहेलां रुमीयां, लोदी लोहाणी।
चढो पठाण मवियां, सैं सुर जाणी॥
चढो चगत्तां गक्खड़ी काला कल वाणी।
मालम साह जलाल के, जालज मलवाणी॥
कारण एकण चत्रकोट, नव खंड पल्लांणी।
गय गुडिया हय मीडिया, धरणी धयाणी॥
चडिया साह सलेमदल, खडिया सुरसांणी॥४॥

अर्थः—बादशाह जलालुद्दीन अकबर ने सलीम (जहांगीर) को निम्न आदेश दियाः—"राणा प्रताप के पुत्र प्रचण्ड वीर अमरसिंह पर बहत्तर खान, उजवरी, उजवका, मीर मलतानी और अन्य दो सौराहो खानदान के वीरों को साथ ले आक्रमण करो। रुहेले, रूमी, लोदी, लोहाने, पठान, पुरबियों राजमी ठाट वाले शेख, चगते, गक्खरी, काले लोग (हिन्दू) और काबुली लोगों को भी साथ लो।" जब बादशाह यह ज्ञात हुआ कि सेना एकत्रित हो गई है, तब एकमात्र चित्तौड़ के प्रश्न को लेकर नव खंडों धानी उस एकत्रित सेना को रवाना किया।

उस समय हाथी गर्जने लगे, घोड़ों के तंग कसे जाने लगे और पृथ्वी विदीर्ण होने लगा। इस प्रकार सलीमने सेना सजाई और सुरसानी सेना आगे बढ़ी।

खड़ काबल दल् बहक, साम ऐराक अटंका ।
थट्टा भक्खर कासमीर, संमोहि असंका ॥
मँह बलोची रोभखाल्, रोहेल गहंका ।
बलक बँगाला प्रेसरुड़ि, नागोर नसंका ॥
गुजराती गूलेरका, गजनेर गयंका ।
जज्ञ बागड़ सवालाख, लाहोर लतंका ॥
खुरामाणी मुलताण का, मुकराणं बंका ।
लसकर मांह सलेमका, रण चाचर बंका ।
आरख दीसे एहड़ा, कर लेसी लंका ॥ ५ ॥

अर्थ—काबुली, बदक, स्याम, ईराक और अटक की सेनाएँ भी चली तथा ठट्ठा, भक्खर और काश्मीर की भी निर्भय सेनाएँ तत्पर हुई। रूमी, बिलोची, रोमखाना, (स्थान विशेष), रुहेली, बलखी, बंगाली, पेशावर तथा नागोर की निडर सेनाएँ मार्ग में चलती हुई दिखाई दीं। गुर्जरी, गुलेरी (स्थान विशेष) गजनेर की गजारोही, बागड़ी तथा लाहोर की कुल सवालाख उत्साही सेना भी बढ़ी। सलीम के पक्ष की खुरसानी, मुलतानी एवं मकराने की निःशंक सेना के वीर टेढ़ी गर्दन उठाए हुए ऐसे दिखाई दिए, मानों वे लंका पर अधिकार प्राप्त करके ही रहेंगे।

खड़बड़ दड़बड़ हुब छड़, तण फसण तराणा ।
तड़तड़ साटां ताड़िया, दड़बड़िया डाणा ॥
कड़ कड़ नाल कड़क्किया, कल् कल् ओलाणा ।
फं खण चाल बगतरां, झल्लाल टोपाणा ॥
छणछण तरगस बाजिया, उलट कुरबाणा ।
कड़ कड़ मूंठा ताड़ियां, जमदढ कुरबाणा ॥

झलल अंगारा सावली, अणियां भमराणा ।
आलमता गज ऊपरे, नेजा फहराणा ॥
होय हूँकारं करामआं, लंबा ग्रीवाणा ।
ओघट घाटा ऊपरे, घट दुघ्घोट थांणा ॥
पमंगी पश्रेलां टपटपड़, धईप धरांणा ।
ऊड़े खेह थेराकियां, रज घूंधल भाणां ॥
चढ़िया गैखड हिंदुआंण, दूणा खरसाणां ।
खांड़िया साह सलेम दल, ऊपर खुमाणा ॥ ६ ॥

अर्थ:—गज शत्रुओं की आवाज, अश्व खुरों की तड़ तड़ ध्वनि के साथ शत्रुओं को मोक्ष देने वाले बरछे चढ़ाए जाने लगे। सांटमारों की मार से मतवाले हाथी द्रुत गति से बढ़ने लगे। घोड़ों की नालें इस प्रकार खटा खट बजने लगीं मानों ओलों की वर्षा के कारण कड़ फड़ाहट होती हो। बख्तरों के छोर अग्नि ज्वाला के समान फैलने लगे। शिरत्राण चमकने लगे, उलटे हाथों से बाण खींचने से माथे घन घनाहट करने लगे। कटार और तलवार को मजबूती से पकड़ने के कारण मुट्ठी कड़ कड़ करने लगी। श्याम वर्ण बर्छियों की नोकें चमकते हुए अंगारों के समान दमकने लगीं। हठीले मस्त हाथियों की पीठ पर पताकाएं फहराने लगीं। लम्बी ग्रीवा वाले ऊँटों के मुख से हूँ-हूँ ध्वनि होने लगी। विकट नाकों पर थाने नियुक्त किए जाने लगे। अश्वखुरों की टपटपाहट की ध्वनि से पर्वत धड़धड़ाने लगे। घोड़ों के चलने से रज राशि बढ़ने लगी, उसकी धुन्धल में सूर्य लुप्त हो गया। इस प्रकार सलीम की सेना में एकत्रित होकर खुरासानी वीर सजे और गुम्माण वंशज हिन्दू नरेश के भू-भाग पर चले।

कूंच मुकामा मंडता, जैता दन जाए ।
नेता ऊपर पातसाह, खग टेक न लाए ॥

ठाम मुक्कामां ठांभतो, जंगी ठहराए।
कूंच करंता कोपियो, वसराला वाए॥
सवल साह सलेम का, साहरण समदाए।
जांण मरजाद तज जलपती, जग बोलण जाए॥
कर घोनावण घोमवा, घरियानल धाए।
कर जुग छेल च अल्ल जम, वादल जाए,
जेहा साह सलेम दल, खडिया तण ताए॥
उतरा धी दल आविया, दक्खण वरसाए।
ऊरा थंमे तुलँगिया, अजमेरे आये॥ ७॥

अर्थः—रास्ते में सेना पड़ाव करती हुई शीघ्राति शीघ्र चली, फिर भी सलीम का दिल आगे बढ़ने के लिए आतुर था। अधिक पड़ाव करने पर सलीम ने क्रोध में आकर कटु वाक्य कहे, जिससे उसके बलवान अश्वारोही वीर इस प्रकार आगे बढ़े मानों सीमा छोड़कर समुद्र में, संसार को डुबोने के लिए तूफान आगया हो, या उज्ज्वल किरणों वाले सूर्य को छिपाने के लिए मेघ बढ़े हों। इस प्रकार कलियुग के इन छैलों ने सजल बादलों की तरह उमड़कर सलीम की सेना को वर्षाऋतु का रूप दिया और उत्तर से दक्षिण की ओर वृष्टि करने के लिए तेजी से बढ़ते हुए घोड़ों को अजमेर आकर विश्राम दिया।

महरण वरोले व्याप बल, हिल्लोले नीरां।
अकल रजक्ता आप दल, पेकंवर पीरां॥
फते जामा फातमी, फरमाण फकीरां।
साह सलेमे वंदिया, चौरासी पीरां॥

भर नगारां गड़ गड़ी, मादल मंजीरां ।
त्रांबा दामेत्रा नांडिया, भेडिया गड़ीरां ॥
बाजंत्र बाजा पंच से, मत थावन चीरां ।
ज्राण माहा घण गज्जिया, कलपंत करीरां ॥
चढ़ चंचल दल चालिया, हल दाह हमीरां ।
हल चहलाया हींदवां, ऊपर हमीरां ॥
घाली पर्सां ज्राडिया, तीरां तंडीरां ।
लेही तेजी ग्रहे बाज, गैं धीरां धीगं ॥
हसम सांमतां रावतां, पे मीरां मीरां ।
दांमे साह सलेम दल, केरव कंधीरां ॥
दाणव देव मलफिफयां, हो रवे हमीरां ।
आये ऊपर गहड़ा, घर मगट तीरां ॥ ८ ॥

अर्थः—सलीम सर्व प्रथम सेना सहित अजमेर आया और
पने अपनी सैन्य शक्ति को तरंगित समुद्र का रूप देकर पैगम्बर और
ीर को प्रसन्न किया। विजय के लिए फातिया पढ़ने वाले फकीरों
को वस्त्रादि दान दे चौरासी पीरों की वन्दना की। फिर भेरी, नक्कारे,
ादल, मंजीरे, तासे, गड़ गड़ाने वाली नौपतें आदि पाँच सौ बाजे
इस प्रकार बजवाए, मानों प्रलय कालीन मेघ गर्ज रहे हों, जिन्हें सुन
कायर ही वीर मग्न होगये। एक दूसरे का साथ देने वाली, पीली
पोशाक पहने शाही सेना शोर गुल मचाती हुई हिन्दूनरेश राव
हम्मीर के वराज की ओर चली। उनके तरकसों से तक्षक तुल्य फुंकारती
बाण छोड़े जाने लगे। घोड़े एवं भूमते हुए हाथी तीव्र गति से चले।

सलीम की सेना में सामंत, रावत, मीर पदधारी एवं कंबोजी (अफगानी) वीर कौरव सैनिकों के तुल्य अथवा दानव रूपी यवन, देव तुल्य हिन्दुओं की ओर झपटते हुए दिखाई देते थे। वे सब एकत्रित होगए और महाराणा के भू-भाग के लिए विघ्न बनकर सीमा पर आगये।

साह धकावे मेदपाट, उदियापुर आया।
माहे राजा मानसिंह, मेलाण कराया॥
सरीर कंठे रामचंद, के सीत सहाया।
कर हरणंखी है वाहर, हल चहलाया॥
जे जासूंसे जोवता, दल ते देखाया।
वाऊ मैंवग वालिया, लाखीक लंघाया॥
आव फड़ा अस ऊपरे, खड़ चावंड आया।
बीनमियो दीवाण सूं, वावस वे धाया।
उदिया सर धर ऊपरे, दल दाणव आया॥
मह केता मह्जी सजे, कह वापो माया॥
जब वाहंस ए वाचियो,सुण पाल रजाया।
तू वेसंदर वाय बल, केही वल राया॥ ६॥

क्रोधाग्नि से धधकता हुआ सलीम मेवाड़ में प्रविष्ट होकर उदयपुर की ओर बढ़ा। उस समय उसके साथ महाराजा मानसिंह (जयपुर) भी कूंच पर कूंच करता हुआ आ पहुँचा। राजा मानसिंह शरीर पक्ष से तो सीता के सहायक रामचन्द्र के समान था, यवन पक्ष को उसने इस प्रकार ग्रहण किया, जैसे हिरण्याक्ष के पक्ष में हैहय वंशी सेना होगई थी महाराणा के दूतों ने शाही सेना आती देख, अपने लाख २ की कीमत के पवन वेग तुल्य घोड़े बढ़ाये। वे आधीरात में चावंड

नामक स्थान पर पहुँचे और महाराणा से वंदना कर निवेदन किया, कि शाही सेना उदयसागर तक आ पहुँची है और बहुत से योद्धाओं ने अपने घोड़ों को "बाप, भाई" कह पुचकार कर तैयार किया है। ऐसा निवेदन करने के बाद महाराणा ने दूतों द्वारा लाया गया पत्र पढ़ा, इसमें लिखा था:—"कि यवन सेना उदयसागर की पाल पर ठहरी हुई है, परन्तु आप पवन-संपर्क युक्त प्रज्वलित अग्नि के समान हैं। आपके सामने कई राजाओं की शक्ति क्या चीज है? अर्थात् नहीं के बराबर है।

साद्रुल सांभल अमर रांण, सर अंबर लग्गा।
कसणा चीर कड़क्कता; वक्कोदर बग्गा॥
त्रपुर तणा सर ताछवा, त्रय नयण अमंगा।
के घीचासर बहंडवा, अमरेस उमंगा॥
के मेहंखासुर मारवा, चामंड सु चंगा।
पारथ भारत ऊपरे, नीमजे नखंगा॥
जमर तणा दल ताडवा, हरि चढे तुरंगा।
काय जनमेजय जालवा, वासिया वरग्गा॥
लंक पगारे बंदरां, काय जाय वलग्गा।
अंध तुरंग उलालिया, अमरेस उमंगा।
जवन तणा दल जालवा, मुचकंधक जग्गा॥१०॥

अर्थः—दूतों की पुकार सुनते ही महाराणा अमर का मस्तक बढ कर आकाश से जा लगा। उसी समय कवच कसा, जिससे ऐसा प्रतीत हुआ, मानों भीम युद्धार्थ सजा हो, या त्रिपुर राक्षस के सिर को काटने के लिए भयंकर त्रिनेत्र धारी शिव चढे हों, अथवा वृत्रासुर को नष्ट करने के लिए इन्द्र उत्साहित हुआ हो, या महिषासुर का वध करने के

लिए देवी उल्लसित हुई हो। या वंदनीय अर्जुन महाभारत के युद्ध में भाथा कसकर सजा हो, या तम समूहका नाश करने के लिए सूर्य श्वेताश्व (जुते हुए रथ) पर आरूढ़ हुआ हो। अथवा जनमेजय ने वासुकि नाग के वंश को भस्म करने के लिए क्रोध किया हो। या समुद्र को थाहते हुए वानरों ने लङ्का को घेर लिया हो। महाराणा अमर ने उत्साहित होकर अपने घोड़ों को ऊँचा उड़ाया। उस समय ऐसा दृश्य दिखाईदिया, मानों यवनों को भस्म करने के लिए मुचकुन्द जाग्रत हुआ हो।

राण जत्राण हकारिया, बोलण रेबारा।
ताते तेड़े तेड़िया, सो करह कतारां॥
आन हयराज उडाडिया, रहसम तहकारां।
अरेस पेस ढाल अंग, अहोय ऊत्तारां॥
ममअे ईंदे वीका मुख, ते उखीहारां।
रत्तलोयण रत्तड़ां, कै मंगल तारां॥
कंना सेन सुरंग, सेर चाचरे वडारां॥
लट्टा छट्टा भूरियां, फक्के अल्लारां।
ग्रीवा दीरघ तोडचे, गध सेस समारां।
क्रकरवा मद हे नीसरे, दंती जोड़ारां॥
मंडप मंडा मंडये, थंभी पूठारां।
हसम उलट्टा धारिये, सभ्भे संभारां।
मंनासण पवन, गते तत्ता तत्तारां।
जाण गुराव चलाविया, मालंम असवारां॥११॥

अर्थः—महाराणा ने अपने युवक सैनिकों द्वारा वछ्रवाहकों को बुलाया और वे शीघ्र ही सुतर सवारों को बुलाकर ले आए। रेशमी नकेलों को थोड़ी सी ऐंचने पर वे घोड़ों के समान द्रुतगामी हो जाते थे। (उनकी) संभाली और चढ़ी हुई ग्रीवायें ऐसी ज्ञात हो रही थी मानों सर्प ने अपना फन ऊँचा चढ़ाया हो। वे चक्र मुखी (ग्रीवा) झूमते हुए इस प्रकार चल रहे थे मानों तीन लड़ी वाला हार झूम रहा हो। जिनके मंगल तारे के समान नेत्र, बाज पक्षी के समान छोटे २ कान, सिंह के समान बड़ा मस्तक, पिंगल वर्ण लटा, हिलते हुए गर्दन के बाल, लम्बी ग्रीवायें, गूँजती हुई आवाज, शेष नाग सी फुंकार, देवालय के स्तंभों के समान मजबूत पैर, छोटे कुंभ तुल्य तलो (सीने के बीच चढ़ी हुई स्थली), सीना इतना बड़ा कि पुरुष कुक्षि में होकर निकल सके, ऊँचाई में हाथी के समान, अच्छी सजाई हुई मंडप के समान सुडौल पीठ, दूर २ की सूचना लाने में वे ऐसे थे कि सायंकाल की सूचना सूर्योदय होने के पूर्व ही ले आते थे। मन और पवन से भी तेज थे। ऊँटों के चलने पर सवारों को ऐसा ज्ञात होता था मानों तोप से गोले छूटे हों।

गण प्रधाने आखियो, तेड़ो रयताला।
कागद पट्टा हेक लाख, चीडण च रताला॥
फरमाणा फरमासिया, पल्ला पंखाला।
गण रेबारी मेजिया, ले रत्ती नाला॥
मेवाड़ा मद निर ग्थी, ऊचाल मशालो।
जीण पयंगां वाहियो, ऊँची कमाला॥
भाटे वाटे मेरियो, तेजी तेजालो।
पट्टे छूटे गोलियें, मंगल मतवाला॥
मेवाड़ा दल संमले, थम चढ़िया पाला।
आण ममंदह मालले, मप से मदनाला॥१२॥

अर्थ:—महाराणा के मंत्रियों ने एक लाख पत्र बन्द कर सुतर सवारों को देते हुए कहा "–तुम शीघ्र ही रावत पदधारी वीरों को बुलाकर ले आओ"। वे सुतर सवार आज्ञा पाते ही लाल वस्त्रों में लपेटे हुए फरमानों को लेकर पल मात्र में पक्षियों के समान द्रुत गति से रवाना हुए। मेवाड़ी वीर महाभारत के महारथियों के समान युद्ध के लिए आतुर थे, वे अपने गोड़े सजा हाथों में तलवारें उठा इसप्रकार बढ़े मानो मस्त हाथी के मस्तक से सिरी (नकाब) उठाली गई हो। महाराणा की सेना में गजारोही, अश्वारोही, और पैदल सेना इस प्रकार सम्मिलित हुई, मानो सौ नदी नाले समुद्र में जा मिले हों।

कंध नमेवा राण कूं, रावत कहेवा।
वोह कलपतर फेरिये, वावत्तक हेवा॥
अक्खल दूण लख जा दुवे, लक्खा भक्खेवा।
मीर कड़क्खे वदला, अडिअन्न अहेवा॥
जाण प्रभाकर जलहरी, वग्खा रत हेवा।
धूमा शंकर धीरिये, खग वामें सेवा॥
जाणक देवल घेरिया, जातून वणेवा।
सात समंदह वीटिया, पेतमऊ पेवा॥
कवील राण प्रताप का, दीसे कहेवा।
कद(कुद)सायर यत्र धड़हड़े, सुर मूख वड़ेवा॥ १३॥

अर्थः—महाराणा के समक्ष आते ही रावत पद धारी वीरों के कन्धे इसप्रकार झुक गए मानों पवन के सम्पर्क से कल्पतरु झुके हों। महाराणा की आज्ञा पाते ही वे पर्वतकाय दो लाख मेवाड़ी वीर लाखों शत्रुओं का संहार करने, वादलों के समान गर्जने एवं मीरों से टक्कर लेने वाले थे। वे वीर महाराणा के चारों ओर ऐसे सुशोभित हो रहे थे

अर्थः—इनमें से कितने ही महारथी अडिग, स्तंभ तुल्य, सिंहों पर भाला चलाने वाले, हाथियों को चीर देने वाले, सामंत एवं बहुत से शूर पदधारी थे वे सब समान रूप से एक दूसरे के साथी थे। बहुत से उन्नत मस्तक वीर थे, मानों यमराज (जो सभी का अंतक है) पर भी खड्ग घात करने वाले हों। उन्हें जिससे उलझा दिया जाता, वे उससे हाथ मिलाकर ही रहते। जो सहायता की इच्छा से उनकी ओर देखता, उनके लिए वे अपना शरीर तृणवत समझते थे। बढ़ाने पर वे दाँत बढ़ाते हुए मस्त हाथियों से भिड़ पड़ते थे। अपने पुरुषार्थ के बल से सामना करने वालों से भिड़ जाते थे। ऐसे महाराणा अमर के प्रेम-बंधन में बंधे हुए सामंत बादशाह के लिए नाटशल्य (चुभने वाले) और अपने पक्ष वालों का मृत्यु पर्यन्त साथ देने वाले थे।

पै मोजा जड़ सागमा, जड़ जड़ नेजाणा।
मखमल्ले थोंछाड़िया, पहरे पचवांणा॥
छकड़ाला चीतोड़ का, गवाल री वाणा॥
कोग तया जड़ वंकड़ा, पहरे राजाणा।
केहर हत्थां ऊपरे, बंधे दुसताणा।
टोप करदा परठिया, उदियापुर राणा॥
जल्लह-रायां लाज री, परवाड़ दिखाणा।
डूंगर माथे ऊपरां, गंगधार वहांणा॥१६॥

अर्थः—चित्तौड़ के वे वीर युद्ध-क्रीड़ा के समय शरीर पर कवच, हाथ में भाले, पाँच रंग की मखमली पोशाक पहिने हुए थे, जो उत्साह से परिपूर्ण, गौ रक्षक एवं प्रतिज्ञा पालक थे। उन शक्तिशाली राजवंशजों के वक्षःस्थल पर तवे (मौजे की रक्षा के लिए फौलादी चद्दर के बने हुए) लगे हुए थे, हाथों में शेर पंजे (फौलाद के नाखूनदार पंजे) और

भुजाओं पर (फौलादी) दस्ताने धारण किए हुए थे। महाराणा ने भी शिरस्त्राण और कवच धारण किया। उसी समय महाराणा के जो "राजाओं के लाज रक्षक एवं "शिव के मस्तक पर गंगा प्रवाहित करने वाले" विरुद थे, वे उच्चारण किए जाने लगे।

जड़े जमंदढ जीमणें, ओठा कममारां।
डावीं कड़ मां भीडहे, ताजी तरवारां॥
नगरुअ नाखाड़िया, भूयाण कनारां।
डंम छुरीये देफुगी, सा वज्जरसारां॥
वामे हाथ गणी करण धारे अयांरां।
दक्खण हाथ समच सेल, जालम जोधारां॥
रे अवधूतां अमर राण, गोरख उच्चारां।
बंध कड़सण कच्छिया, यक संघ हजारां॥१७॥

अर्थ:--महाराणा ने दक्षिण पार्श्व में कटार बांधी, वामपार्श्व में कसी हुई तेज तलवार भूजने लगी। हाथों में नगजटित शेर पंजे और कंधे पर पीछे माथा कसा हुआ था। बलवान महाराणा के दाएँ हाथ में भाला और वज्रसार की बनी हुई दो धारी छुरी एवं वाम पार्श्व धनुषी सुशोभित था। महाराणा अभेर अवधूत योगी शिव और वचन सिद्ध गोरख के समान दिखाई देने लगा। उसकी हय शाला के सहस्त्रों अश्वों के एक साथ तंग कसे जाने लगे।

वंग तलग उलंगिया, ऊलंग वडंगा।
काला डाला सघणा, काछियां कुलंगा॥
मांड पलाण मसाहणी, चगाने वेढंगा।
नह वन्नाणी मरदां, सारंग ममंगां॥--

घर छोड़े मीढी घमस, नालीक बचाले।
सज चाहण होकोरिया, साहण अजु आले॥
कूदे काठे गंधिये, जम ताटे काले।
वाले चंमर वालछे, सिर चंमर ढाले॥
खग करंतां खुदवे, खियगा खुरताले।
चाचर खेचर चोसठां, हत्थी परताले॥
ऊडे नाले कांकरां, आवी नऊाले।
ऊण खदोत नमा नखे, चमके बरसाले॥
आंखा हा ओछाड़िया पाँडव अजु आले।
वाहले मंकारे वेसासिये तोहि माचा माले॥१६॥

अर्थः—चाबुक सवारों द्वारा जो घोड़े अच्छी गति पर लाए गए थे उन्हें सईसों द्वारा हयशाला से बाहर लाए गए। उनकी रासें पुष्प मालाओं की तरह झूल रही थीं। वे घोड़े बाज़ी लगा कर दौड़ते हुए पृथ्वी कुचलने लगे। चाबुक सवारों द्वारा आज्ञा पाते ही घोड़े सजाए गए। यद्यपि सईसों के हाथों में उनकी रासें दृढ़ पकड़ी हुई थीं तथापि वे उछल रहे थे और कोई २ एक ही स्थान पर खड़ा रहा था। उन्होंने अपनी पूंछें इस प्रकार उठा रक्खी थी मानों चमर ढिलाए जा रहे हों। वे अपनी खुरताल से रण-स्थल को खूद २ कर कूदते थे। वे, नभचर और चौंसठ हो योगिनियों एवं हाथियों के मस्तक पर चढ़ते हुए अपनी परीक्षा देते थे। उनकी खुरतालों से कंकरियाँ उड़ कर ग्रीष्म ऋतु का आभास कराती थी और खुरतालों द्वारा उड़ती हुई चिनगारियाँ ऐसी दिखाई देती थी मानों वर्षाऋतु की रातों में जुगनू चमकते हों। सईसों द्वारा उन पर श्वेत झीनबार-डाले हुए थे। पुचकारने और "ना-ना" कहने पर भी वे बहुत कूद फांदते थे।

मांड पलाण म साहणी केकांण कलक्की ।
आसणियो दीवाण के जै जाक अजक्की ॥
सेस डरे धर थरहरे खुरताल् मसक्की ।
चंचल सारंठे चढ़े कर अजर वयक्की ॥
थाल नाल् थंमाणवे घूमरी थरक्की ।
पांव वजाड़े पात्र जेम पर अंच परक्की ॥
सारी गम संगीत के धुघरी धमक्की ।
वाज नवी फरीआवहे कँप अंफै चक्की ॥
कातग मांस कहीतणी चक फेरे चक्की ।
नमणी नव खंड नमे कर अंच उलक्की ॥
मुखमल बंधा लोह सूं पिऊ भार पतक्की ।
जावा जाश्रै जोरवर ते नाम अरक्की ॥
वणा धूहतस अल्लाआ आये अैरक्की ॥२०॥

अर्थः—इसी समय महाराणा के सवारी के हिन हिनाते हुए इराकी एवं तजुकी जाति के घोड़े चाबुक सवारों द्वारा जीन कसकर उपस्थित किए गए। उनके पैरों की नालों के आघात से कुचली हुई पृथ्वी कंपित होने लगी। शेष नाग भयभीत होगया। वे चंचल घोड़े ज्वाला के समान भभक कर चलते हुए तीरों के सामने बढ़ने वाले थे। सप्तस्वरों के साथ मृदंगादि वाद्य बजने पर थाल (तालक) में पैर देकर वे घोड़े इस प्रकार नाच रहे थे, मानों धमाल राग की लय पर थिरकती हुई नर्तकियाँ या परियाँ नृत्य कर रही हों। उन छोटी आयु के घोड़ों के चक्राकार फिरने से पृथ्वी संकुचित होकर कांपने लगी। वे इस प्रकार फिरते थे मानों दीपोत्सव की रात में आतिशबाजी के

में पवन तुल्य थे। ज्यों ही महाराणा की सवारी में आगे चलने के लिए उनकी रासें जीन में कसी गई, त्यों ही उन्होंने मुख से क्रीड़ा की और मस्तक को ऊपर उठा गर्दन इस प्रकार झुकाई, मानो धनुष धनुष चढ़ाए गए हों। उनके मस्तक सिरि (नकाब) से सुशोभित थे।

वे स्रष्टा द्वारा निर्मित अश्व, निर्भीक एवं विविध रंग के थे। मईसों द्वारा दोनों ओर रास में रस्सी लगाते ही उनके पैरों को पायलें (पद भूषण) रिमझिम बजने लगी। उन्हें उत्साह वाक्य (वापू-भूरा-छैला आदि) कहने पर वे इस प्रकार बढ़ते थे मानो मछली तड़फती हुई तैरती हो। बन्दर के समान मचकने से उनके पैरों की धम-धमाहट और पृथ्वी के खिसकने से धम-धमाहट होने लगी।

थापस, दीधा अमर रांण, खत खंभू ठाणा।
जेथ वहंता धूमता, मेंगल् बंधाणा॥
मारुत मारुत वेग वेग, बंधण छोडाणा।
लोडे अच्छा लीछिया, सांकत्त मँदाणा॥
सेर सँदूर अरच्चिया, द्रिघ-खाल पुजाणा।
जाण प्रगट्टा वद्दले, करणादे माणा॥
जाण करातिक हेतणा, गर जलण जलांणा।
जाणक वसँत वसंधरा, केसू फूलाणा॥
कुतिकारां ऊडे मँदूर ठाढी बंधाणा।
चँचल पराघत जालवा, दावण मंडाणा॥
रानां ढीली वद्दरसां, जालां लंमाणा।
मंडे पूथी चंवले धूमून लटाणा॥

कस नाड़ी अंबाड़ियां परवत पूठाया।
कर सायोरे छत्रियां मंडपिया थाया॥
घूघर माला संठिया, पूठी उर-बाणा।
दादुर रोल थणंकिया, माद्रव मज्भाणा॥
जाणक ईयोसर अने, ईसर नच्चाणा।
कर देवालय आरती, घंटा ठहराणा॥
किय घड़ियाला पूजियां, पोहरा पूजाणा।
सह चोसर सर गंठिया, एहा अहनाणा॥
उर दो ऊपासत हियां कंती उलगाणा।
करण (अ) प्रघी मागण, सार वी भलाणा॥
केसर चम्मर धारियां, सींधल केराला।
सेतंघर मुख दंत सेत, ऊदारण आणा॥
मेगल काला बद्दला, बुग-पंथ कराणा।
कर पोगर ऊँची करे, कमं केल कराणा॥
पच्चे मोश्रँग नासरे, मारुत्त भखाणा।
मुंडा डंड प्रचण्डमे, उचकथ चलाणा॥
श्रेह पंखां फर आइया, पाया वाखाणा।
गज भंफे ओछड़िया, केहा वाखाणां॥
गर पंखां फर आविया अग काणा आगे काढाणा॥२२॥

अर्थः—महाराणा की आज्ञा पाते ही महावतों ने कुंमालों से मदोन्मत्त एवं झूमते हुए हाथियों को बंधन मुक्त कर दिया और झाड़ पोंछ कर उनके अंगों को सुन्दर साजों (आभूषणों) से सजा दिया। स्थूल

त्वचा वाले हाथियों के मस्तकों को एक एक सेर सिन्दूर से चर्चित किये जाने पर वे ऐसे दिखाई दिए मानों नील जलद में रवि की अरुण रश्मियाँ फैली हों, या भिल्लनी (रूप में पार्वती) पर मुग्ध विषपान करने वाले शंकर का मुख कोप से लाल हो गया हो, अथवा वसंत ऋतु में पलाश खिल उठे हों। गज-सेवकों द्वारा कसे जाने पर वे इस प्रकार फुतकार ते हुए सिंदूर उड़ाने लगे, मानों परीक्षित को भस्म करने के लिए सर्प शीघ्रता पूर्वक दाव दे रहा हो। उन पर पीत और अरुण वर्ण की पताकाएँ, फैलती हुई अग्निज्वालाओं की तरह फहरा रही थीं। (बीच २ में) पिंगल वर्ण झंडों से ऐसा लगा मानों (उन लपटों से) धूँआ उठ रहा हो। पर्वतकाय हाथियों पर रस्सियों से अंबा बाड़ियां कसी गई। सजाने वालों ने उन पर इस प्रकार छत्र सजाए जैसे (किसी) मंडप की रचना की गई हो। महावतों द्वारा हाथियों के पैरों में घुंघरु बांधे जाने पर उनकी ध्वनि भादों में होने वाले मेंढकों के शोर गुल की तरह होने लगी, अथवा ऐसा लग रहा था मानों शिव और विष्णु (कृष्ण) का एक साथ नृत्य हो रहा हो। हाथियों की घंटियों की ध्वनि इस इस प्रकार हो रही थी मानों देवालय में आरती हो रही हो, या प्रति प्रहरपर घड़ियाल बज रहे हो। गज-कुम्भ चौसरों (मालाओं) से ऐसे सुशोभित थे, मानों किसी पति-इच्छुक स्त्री के २ रोज पुष्प माला से पूजे गये हों। कानों के पास मद-धारा ऐसी लग रही थी मानों नाग कन्याएँ लिपटी हुई हो उन क्रोधित सिंहली हाथियों के मस्तक केशर से चर्चित एवं झुलते हुए चमरों से सुशोभित थे। मदोन्मत्त हाथियों के मस्तक पर डाली हुई मिरी (अँधेरी, नकाब) एवं उनके दाँत श्वेत थे। वे काले हाथी बादल के तुल्य और उनके दाँत बक-पंक्ति की तरह थे। वे मस्त होकर सूंड का अगला भाग उठाते थे। कन्धा उठाकर चलते हुए उन हाथियों की प्रचंड सूंडें ऐसी लगती थी मानों हवा खाने वाले सर्प पर्वत से निकल रहे हो अथवा पंख वाले सर्प हों। सूंडों से हर्ष

हुए वे आगे बढ़ते हुए हाथी ऐसे दिखाई देने लगे, मानों पहले इन्द्र द्वारा पंख काट दिये गये थे, वे ही पर्वत पुनः पंख प्राप्त कर विचरण कर रहे हों।

राण जवांण हकारिया, देपवा गज दंबे ।
मार घरा पत साह की, ले आडे हंबे ॥
मद फरे दसही दसां, ते थाट धडंबे ।
झंडे नेजे बंबले, खेडाल अलंबे ॥
मेंगल काले बदले, मेश्रण झँप झंबे ।
धुंस पडे दस ही दसा, नीसाणा अंबे ॥
राणे हेवर खेड़िया, तर हैकल तंबे ।
बाद पड़े ऐराकियां, तूटंते कंबे ॥
झूड़ पड़े घर ऊपरां, पाया धक भ्रुब्बै ।
फलत्रा लालां ताजियां, गाढाल पलंबे ॥
पड़िया माथे मालपुर, करबीज सलंबे ।
दीवाले अनजोड़ये, अद्री झाल बे ॥२३॥

अर्थः—महाराणा ने गर्व के साथ अपने युवक सामंतों को हाथी देने के लिए बुलवाया और कहा—"शाही सेना को रोक दो तथा उसे नष्ट करते हुए उनके भू-भाग पर हलचल मचादो।" महाराणा का (उपर्युक्त आदेश) पाते ही समस्त हाथियों के झुंड जहाँ तहाँ घूमने लगे, नेजे (ध्वजाएँ) अग्नि-ज्वालाओं के समान ऊपर उठकर आकाश को नीचे गिरा देने जैसा दृश्य उपस्थित करने लगे। उस समय हाथियों के साज ऐसे दिखाई देने लगे, मानों श्याम घटा में बिजली चमकती हो। नक्कारों और तासों पर जब डंके गिरने लगे तब

हुवे हींदू अेकठा, रूआ हथिआरां ।
आणे जादव छाकिया, जुडिया जे वारा ॥
केरव पंडव कड़खिया, कर खेत कतारां ।
गमण राम वहखिया, दल पदम अठारा ॥
तीरां तड़ तड़ ताट तड़, तणँछे तरवारां ।
माछ धमाधम वरछियाँ, सारक चोधारां ॥
खणक भणंकां भटकिया, फरसी फोरारां ।
कालज कोपर कापजे, कोरड़ी कटारां ॥
पड़े भटक्का हूल भट, धड़ धसड़ दुधारां ।
जूध पड़े नरलंग अँग, खोडस असवारां ॥
जीण कटाया ढाहुए, पट-हत्थ पुतारां ।
फूटा धट पनघट्ट मट, डङ्क खेलारां ॥२५॥

अर्थः—जब महाराणा ने अपनी सेना के महान वीरों को ललकारा, तब वे सारे उत्तेजित हो अश्वारोही शत्रुओं पर टूट पड़े। यवन, पर्वतराय वीरों को अपने चारों ओर देख चौंक उठे। मेवाड़ी वीरों ने खड्गाघात कर शत्रुओं के (बल एवं साहस) की परीक्षा ले ली। हिन्दू-वीरों ने इकट्ठे होकर शत्रुओं के शरीर में अपने शस्त्र (छुरी) भोंक दिए। उस समय वे वीर ऐसे दिखाई दिए मानों मदिरा से छके हुए यादव जूझे हों, अथवा कौरवों और पाण्डवों ने पंक्तिबद्ध हो कुरुक्षेत्र में करारी टक्कर ली हो, या अट्ठारह पद्म संख्या वाली सेना लेकर रामचन्द्र रावण से भिड़े हों। उस समय तीरों की तड़तड़ाहट होने लगी, तलवारों द्वारा दुश्मन काटे जाने लगे, बरछियों एवं चौधारे शस्त्रों के आघातों से धमधमाहट होने लगी, फरसाघात की झनझनाहट एवं भनभनाहट के साथ रक्त के फव्वारे छूटने लगे। शत्रुओं के कलेजे

एवं नाभि कटारी के भोंकने से टुकड़े २ होने लगी। शीघ्रतापूर्वक तलवारों के वार होने लगे, वीरों द्वारा खड्ग की अणियां भोंकी जाने लगीं, अश्वारोही वीरों के अंग कट २ कर गिरने लगे।

घोड़ों के जीन (काठियाँ) एवं पटाधारी हाथी कटने लगे। भिड़ने वाले खिलाड़ियों के शरीर इस प्रकार टूट फूट गए जैसे पनघट पर घड़े टूट फूट जाते हैं।

फूटां घट्ट पतंग रत, पड़नाला खालां।
मोड़ घड़ा नीजोड़िये, फाला सु डाला॥
फोड़ कपाला सेंदघी, ठणँके केमाला।
वेग रचाले डाडरां, चोगँम चगलालां॥
फट्ट फड़ी जड़ ऊखड़े, जिण साला जाला।
जा भवजालां लंघिया, नर होय नराला॥
हींदू मुकतो हत्थलां, पालां भूपाला।
चोसर माला चाढिया, वरिया वरमाला॥२६॥

अर्थः—शत्रुओं के शरीर, से रक्त के परनाले बह निकले। काले हाथियों की सामूहिक सेना मोड़ी जाने लगी, उनकी माल-स्यंजी वरदियों द्वारा बँधी जाने लगी और तलवारें टकरा कर खन खना उठीं। चतुरंगिणी सेना में मद बहाते हुए हाथियों के दाँत रक्त रंजित होने लगे, घोड़ों के जीन पर लगी हुई पाखरों की कड़ियाँ टूट गईं, जिससे शस्त्राघात करते हुए क्षीण तक होने लगे, निराले वीर वही कहे जाने लगे जिन्हें सांसारिक आलका ज्ञान होगया था, राजवंशी हिन्दुओं ने कराघातों द्वारा मोक्ष देने की प्रतिज्ञा का पालन किया। ऐसे वीरों के गले में वरमालाएँ डालकर अप्सराएँ वरने लगीं।

वाज वकच्चड़ साज मड़,तड़ तनं त्रसांगड़ ।
ओभड़ सोभड़ ऊर घड़,करमाल कड़क्कड़॥
रुड रड़व्वड घाप घड़,कड़ दोट दड़द्दड़ ।
तूट तड़त्तड़ मुंड मड़, तन वेली तुंव्वड़ ॥
माज कड़क्कड़ धाड़ घड़,कर काली कल्लड़ ।
हाड मरग्गड़ डंडहड़, त्रीखाड पड़प्पड़ ॥
छेल छड़े छड़ियाल छड़, सत्र साल छड़ छड़ .
वाज धको खुरसाण घड़, मेवाड़ तणा मड़ ॥
हूव हड़व्वड़ हूव छड़, होली हंड्डहड़ ॥२७॥

अर्थः—शत्रुओं को भयभीत करने वाले वीरों के अंग फूलने लगे जिससे कवच टूटने लगे। कड़कड़ाती हुई तलवारों के आघातों से तोंद और वक्षस्थल विदीर्ण होने लगे। घायल रुण्ड इधर उधर घूमने लगे और मध्य भाग से कटने पर वे रुण्ड दड़ा दड़ जमीन पर गिरने लगे। तन रूपी बेल से मुँह तूँबे की तरह कटने लगे। वीर-समूह के अंग २ कड़कड़ाते हुए चूर २ होने लगे, कालिका किलकार ने लगी, तेज तलवारों के प्रहार से गरदनें कटने लगी। रंगीले वीरों के हाथों से बरछों के भूमते हुए वार होते थे जिससे शत्रु छटपटाने लगे। मेवाड़ी वीरों के अश्वों की टक्कर से यवन योद्धा धक्के जाने लगे और अश्व खुरों की हड़बड़ाहट के साथ ही वीरों के खड्ग घात होलिकोत्सव के डंडों के आघात की तरह होने लगे।

वाज भणभण घाव घण, तरवार तणंतण ।
बीज चमंके मेढचण, दल काले कोयण ॥
मारे मेले मेछिपण, हथिआर हणोहण ।
नेग जले निण धामिपण, लागा ओलम्बण ॥

आंपण आंपण आदिअण, वागाअण दुज्जण ।
तेग छणंहण गुग्ग ठण, नागन खणहण ॥
लो घसुसे घात ऊपमे, चमकेरे धंमण ।
रत्ता लोहा कढ्ढियो, धखंत हुतासण ॥
हो दोय गुज्जा ताड़िया, ठह वग ठणंहण ।
जाण वेनाणी कुट्टिया, अहँरण माथे घण ॥२८॥

अर्थः—विशेष आघात करती हुई और तनी (उठी) हुई तलवारें मन मनाने लगीं। वे तलवारें घन घटा रूपी सेना में बिजली की तरह चमकने लगीं। हिन्दू वीरों के शस्त्र घातों से यवन मारे जाने लगे। वे वीर, पंक्ति बद्ध होकर शत्रुओं के चारों ओर इस प्रकार छा गए, मानों अग्नि-ज्वाला रात में चारों ओर फैल कर तृण-गार को जला रही हो। (वे) शुरू से अपने पुरुषार्थ के बल जिस प्रकार एक दूसरे पर वार करते आए, उसी प्रकार प्रहार करते हुए तलवारों को झनझनाने, गदाओं को ठनठनाने और तीरों को सनसनाने लगे। शस्त्राघात से घाव बहने लगे (खून बह निकला)। घायल वीरों के नासारंध्र ही उस समय धमनियाँ, रक्त रंजित शस्त्र ही तप्त लोह, गदा के आघात ही हथोड़े और योद्धाओं के मस्तक ही अहिरन बने जिससे ऐसा ज्ञात हो रहा था मानों लुहार लोहा पीट रहा हो।

तेग तड़क्का चेग का, पड़ साँस दड़क्का ।
फोड़ धड़क्का कत्तिए, कड़ मद्ध धड़क्का ॥
हाड़ मड़क्का संध का, कर कंध कड़क्का ।
तीर चड़क्का सिर उरस, फेफरा फड़क्का ॥
छेय धड़क्का हृदगा, कड मद्ध हड़क्का ।

रत छड़क्का उछले, भुय चंप भड़क्का ॥
नेज खड़क्का जालका, तंदूर तड़क्का ।
घट्ट परघ्घर घोरिये, धामक्क धड़क्का ॥
लीध मड़क्का हिन्दुआं, खुरसाण धड़क्का ॥२६॥

अर्थः—जब वेग से तलवारें चलने लगीं, शत्रु ऊँची साँस खींचने लगे। खांडे (सीधी तलवार-किर्च) द्वारा बेंधे जाने पर उनकी छाती धड़कने लगी, अस्थियों की संधियाँ खुल गईं, हाथ और कंधे चूर २ होगए, मस्तक और वक्षःस्थल पर शराघात होने से फेफड़े फड़ फड़ाने लगे, रंगीले वीर मत्स्य के समान (रण-सागर में) कूदने लगे, रक्त के छींटे उछलने लगे, पृथ्वी दबाई जाने से विदीर्ण होने लगी, नेजे खनखनाने लगे, तंदूरों के तंतु (तार) टूटने लगे, सांस की नली घर घराने लगी, युद्ध-आंगन में धम धमाहट मच गई, इस प्रकार हिन्दू वीरों ने शाही सेना को तोड़ मरोड़ दिया।

वाही रावत जैतसी, कर बीज कड़क्की।
कंध भुजां दुहुँ सघ बीच, तरवार तड़क्की ॥
पेलेपार पतंग सी, भपभपे भलक्की।
हय हलाई होलका, कर लोल ललक्की ॥
कर दूदा कर लवममी, कर ढ्ंग दलक्की।
जाण हलाली भड़हड़ें, सर तेल भलक्की ॥
ककल कोटीले करे, कालका कलक्की।
ओनर थेही अविनया, महादेव मलक्की ॥
धड ऊमे तूटा कमल, रत हूँद छलक्की।
गोर मभूको ई चपे, कर ज्वाल भलक्की ॥३

अर्थः—महाराणा के सामंत रावत जैतसिंह ने बिजली के समान चमकती हुई तलवार का वार किया, जिससे शत्रुओं के कंधे और भुजाओं के बीच की संधि (जोड़) कट गई। वह तलवार विपक्षियों के अंगों को आर पार करती हुई सूर्य-किरण के समान चमकने लगी। उस प्रहार करने वाले योद्धा ने जब तलवार शत्रु के अंग में भोंक कर हिलाई तब तत्काल शत्रु का प्राणान्त होगया और गर्दन झुक गई। उस (रावत जैत) का साथ देने वाले दूदा और लाखा ने भी सेना में द्वन्द्व-युद्ध छेड़ा वे क्रोध से तमतमाए हुए दिखाई दिए, मानो तेल डालने पर मशाल प्रज्वलित हो उठी हो। उस समय नर कंकालों (शवों) को उठाकर प्रसन्न होती हुई कालिका किल्ल कारने लगी। यह देख कर महादेव मुसकराने लगे। वीरों के मुण्ड कट जाने पर भी रुण्ड युद्ध-भूमि में खड़े रहे और उनसे रक्त-धारा बह निकली। तोपों और तुपकों द्वारा बारूद के भभकने पर भी हिन्दू वीर उमड़ कर शत्रुओं को दबाने लगे। (पीछे नहीं हटे)।

तै मड़ भग्गा मालपुर, झमपुर खरसाया।
तैमड़ भग्गा ताक गढ, टोडा लुट्टाया॥
तै पतसाही मेदनी, वैसंदर लाया।
तैमड़ पतसाहां तणा, दल खेहां छाया॥
तै कांगेम धरन का, सह गरब गलाया।
सीह जही पारथ करै, यह आपण आया॥
मेघा ऊमर राण सिर, जैत मंडाया॥३१॥

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति
(मिघलो)	(सिघलों)	६६	१३
सिधलों	मिघलों	६६	२२
मिघलों	सिघलों	६६	२३
यार	वीर	७०	२
मूरा के	मूजा को	७१	२४
सट	सट्ट	७३	७
ममान	संमान	७८	१३
का	की	७८	१४
तणि	तॅणि	८१	८
ग्यूस्व	ग्युरस्य	८४	२
धात्र	घात्र	८६	९
नियड	निवाड	८७	११
धाड	घाड	८८	१२
चलना	चलाना	९०	१०
हा	रहा	९१	२
यह वीरों (शत्रुओं) को काटते हुए भी	यह वीर कटते हुए भी	९१	२-३
युद्ध वीर भूमि में वैताल	युद्ध भूमि में वीर-वैताल	९३	८-९
अमर	अवर	९	१६
वजयक्क	वजयक्क	९४	७
(आणी)	(अणी)	९५	१६
परे	धरे	९४	२२
नाशकती	नाशकर्ता	९७	४
आँजम दिमॅथ	आँजमदि दमॅथ	९७	११
मम	मम	९८	४
जदि	अगि	९८	१२
मँहोरि	मँहोवरि	९८	१५
पाने	पने	९९	१८
मका	माला	९९	२३

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति
ओर	और	१००	६
समके	उनके	१००	७
गड़ड़	गड़ड़ति	१००	९
नीर नीर	नीर	१००	१४
तूफान	तूफान पर	१००	१५
को सेना	सेना को	१००	२
हुं कात	हुंकार	१०२	१
ड़धां	घड़ां	१०४	५
धसटे	धँसटे	१०४	१९
नारय	नारद	१०६	२
रहस्य	रहस्य को	१०६	१८
परणी	पारणी	१०७	४
हाथी	हाथी के	१०७	२१
दानों	दोनों	१०७	२२
याहोतर	वोहोतर	१०८	७
मखियां	पखियां	१०८	१०
मै सुर जाणी	सैसूरउजाणी	१०८	१०
वादशाह	बादशाह को	१०८	२१
लगा	लगी	१०८	२५
चका	हंका	१०९	८
हूँकार	हूँकार	११०	४
दुघोट	दुघट	११०	५
धर्हंप	धरंप	११०	६
स्वरताणां	खुरसाणी	११०	८
मुख के	मुख में	११८	७
मदारण याणा	ऊदा रणयाणां	११८	१९
गाथे	माथे	११८	२०
नाखूनद	नाखूनदार	१२०	२५
समस्त	समस्थ	१२१	११
कधे	कंधे	१२१	१६
गहाराणा	महाराणा	१२१	१६
अभेर	अमर	१२१	१८
···ग	पटमंग	१२२	११

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति
आ ग्रा	अग	१२२	१२
सुन	सुम	१२३	६
समाह	समान	१२३	८
- चमर	दुम चमर	१२३	२०
ओंनवारा	ओनवोरा	१२४	२४
धूलनद	धहूलल्	१२५	१४
शेर	शेप	१२५	१८
नाच रहे	नाचते	१२५	२१
दंत सूतों	दंतूमतों	१२६	७
इराकों	इराकी	१२६	७
प छव	पच्छ्रव	१२६	१८
नेनीन	नेमीन	१२७	५
कुल छम छम्मी	कुलछ मछम्मी	१२७	६
पुड़े	पुड़े	१२७	१६
कांठ	कंठ	१२७	१६
घोड़ों के जीन पोश हटा कर, घोड़ो के जीन पोश हटाकर	घोड़ों के जीन पोश हटाकर	१२७	२२-२३
वालो	वाले,	१२७	२४
धनुष धनुष	धनुष	१२७	४
धम-धमाहट	धम-धमाहट	१२८	११
ठाठी	ठाठिया	१२८	२०

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति
पराघन	पराम्बन	१२८	२१
ढीलों	पीली	१२८	२३
मागणो	नागणी	१२९	११
फेराला	फेराणा	१२९	१२
लने	लगे	१३०	७
ही	हो	१३०	१६
इसइस प्रकार	इस प्रकार	१३०	१६-१७
मल्तन	मस्तक	१३०	२३
क्री	की	१३०	२४
कह	कहा	१३१	१८
(ध्वजाएँ)	(ध्वजाएँ)	१३१	२१
क	को	१३२	३
मोतियो	मूंतियो	१३२	११
लागा	बागा	१३२	१३
अबर	अंबर	१३२	१७
घुमर	घुंमर	१३२	१८
देड़दूड़	दड़दड़	१३२	१९
घूराभू मल्बर	घूरा भूमल्बर	१३२	२४
डहक	चहक	१३४	१२
पक्तिबद्ध	पंक्तिबद्ध	१३४	२०
धड़ धड़	धड़धड़	१३६	८
ढेब	ढेल	१३७	२४
कघे	कंघे	१३८	८
कधे	कंधे	१३९	८
सेना	सेनाको	१४०	४

—०—०—